फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 290 प्रभात जयपुर, शुक्रवार 23 मई, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBIT

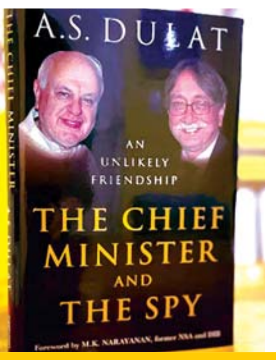

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

The Key Is Understanding Kashmir

"Farooq knew 370 would go eventually. The BJP had said it clearly. That wasn't the hurt. The hurt was that no one spoke to him. That he, a lifelong supporter of the Indian state, was detained without a word."

Scarlet Statement

एक बार फिर विदेश मंत्री जयशंकर ने ट्रम्प के मध्यस्थता के दावे को केवल कल्पना बताया

ट्रम्प की नाराज़गी सहने के लिये भारत को तैयार रहना पड़ेगा

- ट्रम्प के दंभ भरे दावों को अब विश्व ज्यादा गंभीरता से नहीं ले रहा, चाहे एक ही दिन में यूक्रेन युद्ध समाप्त कराने की घोषणा हो, या रूस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाने की धमकी हो, या यमन के हूती को अपनी भारी नौ सेना से डराने का प्रयास हो, या ईरान के अयतुल्ला खमेनी को चेतावनी देने की कोशिश हो।
- अतः बार-बार भारत-पाक के बीच अपनी मध्यस्थता से सीज़फायर कराने का दावा, ट्रम्प की मजबूरी बन गया है।
- पर, भारत के विदेश मंत्री द्वारा ट्रम्प को इस ''सीज़फायर'' के लिए कोई भी श्रेय नहीं देना, ट्रम्प प्रशासन के लिए पचाना बहुत मुश्किल हो रहा है और इस खीज की गाज, भारत पर गिर सकती है।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 मई। ''अमेरिका केवल अमेरिका तक ही सीमित था।'' विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने ''ऑपरेशन सिंदूर'' के दौरान भारत-पाकिस्तान के बीच शांति वार्ता में अमेरिका की मध्यस्थता पर पूछे गए सवाल के जवाब में यह टिप्पणी की।

10 मई को युद्धविराम घोषित होने के बाद से अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप लगातार यह दावा कर रहे हैं कि उन्होंने एक फोन कॉल के जरिए दोनों देशों को व्यापार का प्रस्ताव देकर यह शांति स्थापित करवाई थी।

जो कोई भी भारत और पाकिस्तान के बीच की संवेदनशीलता और विवाद की पृष्ठभूमि से जरा भी परिचित है, वह जानता है कि ट्रंप का यह दावा कितना अतार्किक और हास्यास्पद है। यही कारण है कि भारत, विशेष रूप से विदेश मंत्री एस. जयशंकर, लगातार यह स्पष्ट कर रहे हैं कि युद्धविराम केवल दोनों देशों के बीच आपसी सहमति से हुआ था।

अमेरिकी राष्ट्रपति के डील मेकर का क्रेडिट लेने की कोशिश को खारिज करने के निस्संदेह अलग नतीजे होंगे। इससे पहले भी ट्रंप ने दावा किया था कि यदि वे चुने जाते हैं तो यूक्रेन युद्ध को एक दिन में समाप्त कर सकते हैं-जो पूरी तरह से एक कपोल कल्पना साबित हुई।

यूक्रेन युद्ध को खत्म करने में असफल रहने के बावजूद, ट्रंप लगातार खुद को रूस-यूक्रेन शांति प्रक्रिया का नायक बताने की कोशिश कर रहे हैं। दूसरी ओर, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन बार-बार यह स्पष्ट कर चुके हैं कि वे ट्रंप को ज्यादा तवज्जो नहीं देते।

ट्रंप द्वारा रूस पर प्रतिबंध लगाने की बार-बार की धमकियों के बावजूद, पुतिन ने यूक्रेन पर हमलों को और तेज कर दिया, यहां तक कि नागरिकों को भी निशाना बनाया, ठीक उसी समय, जब अमेरिका खुद को सक्रिय दिखाने की कोशिश कर रहा था।

इस सबके बीच, ट्रंप की सबसे बड़ी विफलता तब सामने आई, जब उन्होंने दावा किया कि यूक्रेन युद्ध केवल तब खत्म होगा, जब वे स्वयं पुतिन से बात करेंगे। उनके कैबिनेट सदस्य बार-बार उनकी ''शानदार शख्सियत'' की तारीफ करते रहे, उनका मत था कि ट्रंप का करिश्माई व्यक्तित्व पुतिन को शांति की ओर ले जाएगा।

हालांकि, पुतिन से दो घंटे लंबी टेलीफोन बातचीत के बाद भी शांति की कोई स्पष्ट दिशा नहीं दिखी। उल्टा, रूस ने अपने हमले और तेज कर दिए, जिससे यूक्रेनी जनता को और अधिक नुकसान उठाना पड़ा।

ट्रंप की इन लगातार कूटनीतिक विफलताओं के बीच, अमेरिका इतना व्यग्र है कि ''सफलता'' के मामूली से संकेत तक को लपक लेना चाहता है। हाल ही में यमन के हूती विद्रोहियों ने अमेरिका की सबसे शक्तिशाली नौसेना पर हमला किया, जिससे अमेरिकी प्रतिष्ठा को गहरा आघात पहुंचा। इसके बाद, ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने भी अमेरिका और ट्रंप को चेतावनी दी कि अगर उन्होंने ईरान पर सीधा हमला किया तो उन्हें गंभीर परिणाम भुगतने होंगे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ऑपरेशन सिंदूर के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पहली बार बीकानेर आए। उन्होंने देशनोक के पलाना गांव की रोही में आयोजित विशाल जनसभा को संबोधित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रधानमंत्री का साफा पहनाकर स्वागत किया।

अब हर आतंकी हमले की पाकिस्तान को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी-मोदी

प्रधानमंत्री ने कहा कि अब बात सिर्फ पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर को वापस लेने की होगी

- जनसभा में प्रधानमंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल की सरकार द्वारा जारी नई औद्योगिक नीतियों का लाभ बीकानेर को भी मिलेगा। बीकानेरी भुजिया का स्वाद और बीकानेरी रसगुल्ले की मिठास विश्व भर में पहचान बनायेगी।
- पलाना की सभा में प्रधानमंत्री ने कहा कि पांच साल पहले बालाकोट के बाद मेरी पहली जनसभा राजस्थान में हुई थी। इस बार ऑपरेशन सिंदूर के बाद भी पहली सभा यहाँ हो रही है। राजस्थान की वीरभूमि के तप से ऐसा संयोग बना है।

बीकानेर, 22 मई (कासं)। ऑपरेशन सिंदूर के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पहली बार बीकानेर आए। जिला मुख्यालय से 22 किमी. दूर देशनोक के पलाना गांव की रोही में हुई विशाल जनसभा में मोदी करीब 40 मिनट बोले। उन्होंने साफ कर दिया कि पाकिस्तान की हर हरकत का करारा जवाब दिया जायेगा। प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान को दो टूक संदेश देते हुए कहा कि अब हर आतंकी हमले की पाकिस्तान को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी और ये कीमत पाकिस्तान की सेना और पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था चुकायेगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि 22 अप्रैल को आतंकवादियों ने धर्म पूछकर हमारी बहनों की मांग का सिंदूर उजाड़ दिया था। वो गोलियां पहलगाम में चली थीं, लेकिन उन गोलियों से 140 करोड़ देशवासियों का सीना छलनी हुआ था। इसके बाद हर देशवासी ने एकजुट होकर संकल्प लिया था कि आतंकवादियों को मिट्टी में मिला देंगे और उन्हें कल्पना से भी बड़ी सजा देंगे। उन्होंने कहा कि देशवासियों के आशीर्वाद से और देश की सेना के शौर्य से हम सब उस प्रण पर खरे उतरे हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने तीनों सेनाओं को खुली छूट दी और तीनों सेनाओं ने मिलकर ऐसा चक्रव्यूह रचा कि पाकिस्तान को घुटने टेकने पड़े। 22 तारीख के हमले के जवाब में हमने 22 मिनट में आतंकियों के 9 सबसे बड़े ठिकाने तबाह कर दिए।

प्रधानमंत्री ने कहा कि मोदी का दिमाग ठंडा रहता है लेकिन लहू गर्म रहता है और अब तो मोदी की नसों में गर्म सिंदूर बह रहा है। पाकिस्तान के साथ न तो व्यापार होगा, न ही बातचीत होगी। यदि बात होगी तो सिर्फ पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर को वापस लेने की। उन्होंने चेतावनी दी कि पाकिस्तान ने अगर आतंकियों को एक्सपोर्ट करना जारी रखा तो उसको पाई-पाई के लिए मोहताज होना होगा। पाकिस्तान को भारत के हक का पानी नहीं मिलेगा। एटम बम की गीदड़ भभकियों से भारत डरने वाला नहीं है।

मोदी ने कहा कि जब मैं दिल्ली से यहां आया तो बीकानेर के नाल एयरपोर्ट पर उतरा। पाकिस्तान ने इस एयरबेस को भी निशाना बनाने की कोशिश की थी, लेकिन वह इस एयरबेस को रत्ती भर भी नुकसान नहीं पहुंचा पाया। यहां से कुछ ही दूर सीमापार पाकिस्तान का रहीमयार खान एयरबेस अगले कई दिनों के लिए बंद हो चुका है। भारत की सेना के अचूक प्रहार ने इस एयरबेस को तहस-नहस कर दिया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि राजस्थान के औद्योगिक विकास के लिए केन्द्र और राज्य की डबल इंजन सरकार तेजी से काम कर रही है। राजस्थान की रिफाइनरी का काम भी अंतिम चरण में है। अमृतसर-जामनगर इकोनॉमिक कॉरिडोर और दिल्ली-मुबंई एक्सप्रेसवे राजस्थान में औद्योगिक विकास को नई ऊंचाई पर ले जाएंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि अलग-अलग क्षेत्रों के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सरकार द्वारा जारी नई औद्योगिक नीतियों का लाभ बीकानेर को भी मिलेगा। बीकानेरी भुजिया का स्वाद और बीकानेरी रसगुल्लों की मिठास विश्वभर में अपनी पहचान और बढ़ाएगी।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पांच साल पहले जब बालाकोट में देश ने एयर स्ट्राइक की थी, उसके बाद मेरी पहली जनसभा राजस्थान में ही हुई

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विवाह के तीन माह बाद ही आत्महत्या, अभियुक्त पति को आजीवन कारावास

- मृतका के भाई ने बयान दिया कि उसकी बहन ने बताया था कि उसका पति व ससुराल वाले दहेज के लिए मारपीट करते हैं।

जयपुर, 22 मई। महिला उत्पीड़न मामलों की विशेष अदालत ने दहेज प्रताड़ना से तंग आकर विवाह के तीन माह बाद ही विवाहिता के आत्महत्या करने के मामले में उसके पति विकास शर्मा को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इसके साथ ही, अदालत ने अभियुक्त पर पांच हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। पीठासीन अधिकारी आशुतोष कुमावत ने अपने आदेश में कहा कि एक लड़की के लिए उसका विवाह जीवन का एक महत्वपूर्ण पल होता है, जहां वह अपने पिता के संरक्षण से दूर सुंदर भविष्य का सपना देखते हुए अपने पति के साथ विदा होती है। उस समय लड़की के मन में यह विश्वास होता है कि उसका पति, उसके

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सतपाल मलिक के खिलाफ चार्जशीट फाइल की सीबीआई ने

सतपाल मलिक, जम्मू-कश्मीर के गवर्नर थे तथा उस दौरान उन पर किरू में हाइड्रो पावर प्रोजैक्ट का ठेका देने का आरोप लगाया गया था

- सीबीआई ने इस आरोप की तीन साल तफतीश करके यह चार्जशीट दाखिल की है।
- सतपाल मलिक ने इस घटनाक्रम के बारे में कहा कि वे किसान पुत्र हैं तथा सरकार उन्हें डराना व दबाना चाहती है, पर, वे झुकेंगे नहीं।
- सतपाल मलिक ने एक्स पर यह भी कहा कि वे अस्पताल में भर्ती हैं तथा अस्वस्थ हैं। अतः उन लोगों से बात नहीं कर पा रहे, जो उन्हें फोन कर रहे हैं।

- डॉ. सतीश मिश्रा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 22 मई। प्रतिशोध का मामला प्रतीत होने वाली एक कार्यवाही के अन्तर्गत, सी बी आई ने जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक एवं पांच अन्य के खिलाफ चार्जशीट पेश की है। यह प्रकरण कीरू हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट के लिए 2200 करोड़ रु. के 'सिविल वर्क्स' का ठेका दिये जाने में हुए कथित भ्रष्टाचार से संबंधित है।

अधिकारियों ने आज कहा कि एजेंसी ने 3 साल की जांच पड़ताल के बाद, अपने निष्कर्ष एक विशेष अदालत में पेश कर दिये हैं। इस प्रकरण मलिक एवं पांच अन्य लोग आरोपी बनाये गये हैं।

आज 'एक्स' पर डाली गई पोस्ट में मलिक ने कहा कि वे अस्पताल में भर्ती हैं तथा किसी से बात करने की स्थिति में नहीं हैं।

पूर्व राज्यपाल ने कहा कि उनके पास बहुत से शुभचिन्तकों के कॉल आ रहे हैं, लेकिन वे बात नहीं कर पा रहे हैं।

सी बी आई गत वर्ष फरवरी में इस केस के संबंध में मलिक एवं अन्य के परिसरों की तलाशी ली थी।

सी बी आई ने 2022 में एफ आई आर दर्ज करने के बाद, एक बयान में कहा था कि यह केस 2019 में कीरू हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर (एच ई पी) प्रोजेक्ट के सिविल वर्क्स का 2200 करोड़ रु. का ठेका एक प्राइवेट कंपनी को दिये जाने में की गई कथित गड़बड़ी से संबंधित है।

मलिक, जो 23 अगस्त, 2018 से 30 अक्टूबर, 2019 तक जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल थे, ने दावा किया था कि उन्हें दो फाइलों पर स्वीकृति देने के लिए 300 करोड़ रु. की रिश्वत की पेशकश की गई थी। इनमें से एक फाइल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नाबालिग से दुष्कर्म करने वाले को बीस साल की सजा

- अभियुक्त ने दुष्कर्म का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल किया था।

जयपुर, 22 मई। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-1 महानगर द्वितीय ने नाबालिग से दुष्कर्म करने वाले अभियुक्त विजय वर्मा को बीस साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्त पर 1.10 लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है। पीठासीन अधिकारी विकास कुमार खंडेलवाल ने अपने आदेश में कहा कि अभियुक्त ने 16 साल से कम उम्र की पीड़िता के साथ जबरन दुष्कर्म कर उसकी अश्लील फोटो व वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। यह गंभीर अपराध है और ऐसे अभियुक्त के साथ कोर्ट किसी तरह की नरमी नहीं बरत सकती।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक मातादीन शर्मा ने बताया कि पीड़िता के पिता ने बनीपार्क पुलिस थाने में 22 जून 2022 को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सात प्रतिनिधिमंडल, जिनमें 32 प्रमुख राजनीतिक नेता शामिल हैं, पाकिस्तान की आतंकवादी हमलों में भूमिका को समझाने, विश्व यात्रा पर निकले

ये प्रतिनिधिमंडल लगभग तीन दर्जन देशों का दौरा करेंगे, पाकिस्तान की भूमिका के प्रमाण भी प्रस्तुत करेंगे

- पर, एक प्रकार से सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल भेजने की मोदी सरकार की सराहनीय सफलता का मुँह में पूरा स्वाद आता उससे पहले कुछ किरकिरी आ गई, विपक्ष की कुछ पार्टियों की इस शिकायत से कि उनसे पूछा नहीं गया, उनके नेताओं को प्रतिनिधिमंडल में शामिल करने से पहले।
- इस आंतरिक विवाद का असर देश के कई राज्यों पर पड़ेगा। उदाहरण के लिए महाराष्ट्र में ''महायुति'' गठबंधन में भी उथल-पुथल हो सकती है। शरद पवार व उनके भतीजे अजित पवार के दोनों धड़े अब एक होने के प्रयास में लगभग सफल हो गये हैं तथा देवेन्द्र फड़नवीस की सरकार को इससे मजबूती मिलेगी।
- प्रतिनिधिमंडल भेजने की इस नीति से घटनाओं की एक श्रृंखला शुरु हो गई है, जिसका असर भारत के राजनीतिक घटनाक्रम में काफी समय तक प्रभावी रहेगा।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 मई। एक अभूतपूर्व राजनीतिक घटनाक्रम में, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और राज्य स्तरीय राजनीतिक दलों के 32 प्रमुख नेताओं के सात प्रतिनिधिमंडलों ने लगभग तीन दर्जन देशों की कूटनीतिक यात्राओं की शुरुआत की है। इन सभी का एक ही उद्देश्य है: भारतीय भूमि पर लंबे समय से चल रही पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद की नीति के विश्वसनीय प्रमाण प्रस्तुत करना, जिसके कारण निर्दोष पर्यटकों और नागरिकों की जानें गई हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 11 वर्षों के कार्यकाल में यह पहली बार है जब इतने व्यापक स्तर पर राजनीतिक सहयोग नज़र आया है, जिसमें सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने विपक्षी दलों के साथ एक साझा राष्ट्रीय उद्देश्य के लिए सहयोग का हाथ बढ़ाया है।

दुर्लभ एकता के इस प्रदर्शन के बावजूद भी इस पहल ने देश में राजनीतिक हलचल मचा दी है। सरकार पर आरोप लगे हैं कि उसने उच्च-स्तरीय प्रतिनिधिमंडलों के चयन में संबंधित दलों से औपचारिक सलाह-मशविरा नहीं किया। वरिष्ठ कांग्रेस नेता शशि थरूर और सलमान खुर्शीद को कथित तौर पर पार्टी की औपचारिक सहमति के बिना शामिल किया गया, क्रिकेटर से राजनेता बने तृणमूल सांसद यूसुफ पठान के मामले में भी ऐसा ही हुआ। इसने दलों के भीतर अंदरूनी कलह को जन्म दिया है और सरकार की मंशा पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

गुजरात के वरिष्ठ पत्रकार हरि देसाई, जो प्रधानमंत्री मोदी की भाजपा प्रचारक से लेकर अब तक की राजनीतिक यात्रा पर लंबे समय से नज़र रखते आए हैं, ने इस कदम की आलोचना की। उन्होंने कहा, ''ऐसे समय में जब देश को अंतरराष्ट्रीय मंच पर एकजुट चेहरा दिखाना चाहिए, प्रधानमंत्री मोदी की यह रणनीति पार्टियों के भीतर आपसी कलह को जन्म दे रही है। एकता के नाम पर इस तरह का विभाजनकारी कदम निराशाजनक और राजनीतिक रूप से खतरनाक है।''

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस कूटनीतिक मिशन का प्रभाव विदेश नीति से परे भारत की आंतरिक राजनीति पर भी पड़ सकता है। महाराष्ट्र में महत्वपूर्ण घटनाक्रम सामने आ रहे हैं। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के दोनों धड़े, शरद पवार और उनके भतीजे अजित पवार के नेतृत्व वाला पुनः एकजुट होने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। अगर यह मेल होता है, तो राज्य की सत्ता-संरचना में बड़ा बदलाव आ सकता है।

यह एकता सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन, जिसका नेतृत्व भाजपा के देवेंद्र फड़नवीस कर रहे हैं, को लाभ पहुंचा सकती है। राज्य भाजपा के सूत्रों के अनुसार, एकजुट राकांपा सरकार को कुछ नीतिगत रियायतों के बदले सशर्त समर्थन दे सकती है, हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि अब तक नहीं हुई है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

गलत जानकारी देने पर हाईकोर्ट ने 50 हजार का हर्जाना लगाया

- अदालत ने पुरुषोत्तम दाधीच की पेपर लीक मामले में दायर अपराधिक याचिका खारिज की।

जयपुर, 22 मई। राजस्थान हाईकोर्ट ने एसआई भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में गलत तथ्य बताकर याचिका दायर करने को गंभीर माना है। इसके साथ ही, अदालत ने आपराधिक याचिका को खारिज करते हुए याचिकाकर्ता पर पचास हजार रुपए का हर्जाना लगाया है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश पुरुषोत्तम दाधीच की आपराधिक याचिका को खारिज करते हुए दिए।

याचिका में कहा गया कि उस पर अपनी प्रेमिका के लिए पन्द्रह लाख रुपए में एसआई भर्ती का प्रश्न पत्र खरीदने का आरोप है। मामले में वह निचली अदालत में सरेंडर करने भी गया था, लेकिन अदालत ने उसे अपनी कस्टडी में नहीं लिया। मामले में दर्ज एफआईआर में भी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

जिसने निश्चय कर लिया, उसके लिए बस करना बाकी रह जाता है। -इटैलियन कहावत

राष्ट्रपति ने सुप्रीम कोर्ट को 14 प्रश्न राय के लिये भेजे हैं, जनता उत्सुक है, सुप्रीम कोर्ट की राय जानने को

माननीय सुप्रीम कोर्ट ने अपने निर्णय दिनांक 8 अप्रैल, 2025 में जो तमिलनाडु बनाम राज्यपाल शीर्षक के केस में दिया था, जिसमें यह माना था कि राष्ट्रपति और राज्यपाल को किसी भी विधेयक को अपने पास अनिर्णित रखने का अधिकार एक सीमा तक होना चाहिये और न्यायालय ने तीन माह की सीमा निर्धारित की। इस निर्णय की वैधता पर उपराष्ट्रपति धनखड़ ने प्रश्न चिन्ह खड़ा किया और कहा कि 'हमने इस दिन की कल्पना नहीं की थी कि राष्ट्रपति को तयशुदा समय में फैसला देने को कहा जावेगा'। अब राष्ट्रपति मुर्मू ने सुप्रीम कोर्ट को 14 प्रश्न भेजे हैं और कोर्ट की सलाह मांगी है। इनमें एक प्रश्न उपरोक्त विषय के बाबत भी है। राष्ट्रपति ने अनुच्छेद 143 के तहत जानना चाहा कि क्या सुप्रीम कोर्ट अनुच्छेद 200 के तहत 3 महीने की समय अवधि तय कर सकते हैं, जबकि संविधान में इस प्रकार की कोई व्यवस्था नहीं है। माननीया राष्ट्रपति ने उक्त फैसले को संवैधानिक मूल्यों, संविधान की संरचना और व्यवस्थाओं के विरूद्ध माना है, इसे संवैधानिक सीमाओं का अतिक्रमण भी माना है।

इस पर विचार करने के हेतु हमें संविधान व अनुच्छेद 143 को समझना होगा, साथ ही संविधान के अनुच्छेद 137, अनुच्छेद 200 व 201 की व्याख्या करनी होगी। समय सीमा नहीं है, फिर भी क्या राज्यपालों व राष्ट्रपति के लिये क्या समय सीमा निर्धारित की जा सकती है। राष्ट्रपति ने अनुच्छेद 143 के तहत सुप्रीम कोर्ट से पूछा है कि क्या वे अपने पूर्ववर्ती फैसल पर पुनः विचार कर निर्णय दे सकते हैं, वह भी अनुच्छेद 143 के आधार पर।

राष्ट्रपति ने अनुच्छेद 143(1) के तहत 14 निम्नलिखित प्रश्नों पर सुप्रीम कोर्ट से राय मांगी है:-

1. अनुच्छेद 200के तहत् राज्यपाल के पास विधेयक आता है तो क्या संवैधानिक विकल्प होते हैं?
2. क्या राज्यपाल कैबिनेट की सलाह और मदद के लिए बाध्य हैं?
3. क्या अनुच्छेद 200 के तहत राज्यपाल द्वारा संवैधानिक विवेक का प्रयोग न्यायोचित है?
4. क्या अनुच्छेद 361 राज्यपाल के फेसलों पर न्यायिक समीक्षा को पूरी तरह रोक सकता है?
5. संविधान में राज्यपाल के लिए समय सीमा तय नहीं है। क्या कोर्ट इसे तय कर सकता है?
6. क्या राष्ट्रपति के फैसले को कोर्ट में चुनौती दी जा सकती है?
7. क्या राष्ट्रपति के फेसलों पर भी अदालत समय सीमा तय कर सकती है।?
8. क्या राष्ट्रपति को सुप्रीम कोर्ट से राय लेना अनिवार्य है?
9. क्या राष्ट्रपति और राज्यपाल के फैसलों पर कानून लागू होने से पहले अदालत सुनवाई कर सकती है?
10. क्या सुप्रीम कोर्ट अनुच्छेद 142 का प्रयोग कर राष्ट्रपति या राज्यपाल के फैसले को बदल सकता है?
11. क्या राज्य विधानसभा में पारित कानून, अनुच्छेद 200 के तहत राज्यपाल की सवीकृति के बिना लागू किया जा सकता है?
12. क्या संविधान की व्याख्या से जुड़े मामलों को सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों को भेजना अनिवार्य है?
13. क्या सुप्रीम कोर्ट ऐसे निर्देश/आदेश दे सकता है, जो संविधान या वर्तमान कानून से मेल न खाता हो?
14. क्या केन्द्र और राज्य सरकार के बीच विवाद सिर्फ सुप्रीम कोर्ट ही सुलझा सकता है?

हमारा संविधान कई विशिष्टताओं से भरा हुआ है। संविधान के विशेषज्ञ सुभाष कश्यप ने 'हमारा संविधान' नामक पुस्तक में जो विशेषताओं का उल्लेख किया है वह वे अद्भुत हैं और निम्नलिखित हैं:-

"भारत का संविधान एक सर्वाधिक व्यापक दस्तावेज है। वह अनेक दृष्टियों से अनूठा है। इसे किसी खास सांचे-ढाँचे में या मॉडल में फिट नहीं किया जा सकता। यह अनम्य तथा नम्य, परिसंघीय तथा एकात्मक और अध्यक्षीय तथा संसदीय रूपों का मिश्रण है इसमें प्रयास किया गया है कि एक ओर व्यक्तियों के मूल अधिकारों और दूसरी ओर जनता के सामाजिक, आर्थिक हितों तथा राज्य की सुरक्षा के बीच संतुलन बना रहे। इसके अलावा यह संसदीय प्रभुत्व तथा न्यायिक सर्वोच्यता के सिद्धान्तों के बीच मध्य मार्ग प्रस्तुत करता है। हमारे संविधान ने अनेक संकटों का सफलतापूर्वक सामना किया है और जीवित रहा। यह बात स्वयंमेव उसकी सुनम्यता, सक्रियता और संवृद्धि की संभाव्यता का प्रमाण है।"

यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि संसद तथा उच्चतम न्यायालय दोनों अपने अपने क्षेत्रों में सर्वोच्च हैं। जहां कि उच्चतम न्यायालय, संसद द्वारा पारित किसी कानून को संविधान का उल्लंघन करने वाला बताकर संसद के अधिकार से बाहर, अवैध और अमान्य घोषित कर सकता है। संसद कतिपय प्रतिबन्धों के रहते हुये संविधान के अधिकांश भागों में संशोधन कर सकती है। अब तक संविधान में 106 संशोधन हो चुके हैं जो दर्शाता है कि संविधान विकास की गति और प्रगति के मार्ग को प्रशस्त करता है। भारत की सुप्रीम कोर्ट के नये चीफ जस्टिस बी आर गवई ने उद्घोषणा की है कि लोकतंत्र के तीनों स्तम्भ अर्थात् न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका सब समान हैं, अपने कार्य में, अपने-2 अधिकार क्षेत्र में स्वतंत्र हैं।

मेरी विनम्र राय में ऐसा प्रतीत होता है सुप्रीम कोर्ट यह उत्तर दे सकता है कि उठाये गये प्रश्नों की प्रकृति ऐसी है और कोर्ट संतुष्ट है कि राय देना नहीं आवश्यक है। हम संविधान की दो महाशक्तियां हैं। हमारा धर्म व कर्म संविधान की रक्षा का है। हम मिलकर देश के हित, विकास व उन्नति के लिये गरिमा के साथ अपने धर्म की पालना करते रहेंगे।

संविधान का अनुच्छेद 143 उच्चतम न्यायालय के परामर्श की अधिकारिता प्रदान करता है। सार्वजनिक महत्व की विधि या तथ्य के किसी प्रश्न पर सर्वोच्च न्यायालय की राय राष्ट्रपति मांग सकता है यदि उसके विषय में उसका विचार हो कि ऐसी राय मांगना समीचीन है। यह राय केवल सलाह के रूप में होगी। सुप्रीम कोर्ट के लिये अपनी राय देना बाध्यकारी नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने Special Reference No.1/1964 में यह मत अभिव्यक्त किया है। Re the Special Courts Bill, 1978 में कोर्ट ने इंगित किया है कि यदि कोर्ट इन्कार करे तो उसके कारण देना आवश्यक है। अयोध्या बाबरी मस्जिद के केस रेफेरेंस संख्या 1/1993 को न्यायालय ने रेफरेन्स को बिना उत्तर दिये लौटा दिया था। अहमदाबाद सेन्टजेवियर कॉलेज सोसाइटी व अन्य बनाम स्टेट ऑफ गुजरात के केस में (1974)एससीसी 717) माना है कि अनुच्छेद 143 के तहत दी गई ऑपिनियन बाध्यकारी नहीं है। हाँ, यह वजन रखती है; किन्तु यह भी सच है कि जस्टिस वाई वी चन्द्रचूड ने यह विचार अभिव्यक्त किये थे कि अनुच्छेद 143 के तहत् दी गई सलाह सभी कोर्ट्स के लिये बाध्यकारी होना चाहिये।

कावेरी विवाद के मामले में (Special Reference No. 1 of 1998) में सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि रेफरेन्स की शक्ति को अपीलीय शक्ति नहीं माना जा सकता।

कावेरी रेफरेन्स के केस में सुप्रीम कोर्ट ने यह माना है कि राष्ट्रपति पूर्ववर्ती निर्णित किये हुये मामले में रेफरेन्स नहीं कर सकते। क्योंकि जब निर्णय दिया है तो फिर शक की कोई सम्भावना नहीं रहती। 2ळ रेफरेन्स ऑफ 2012 में यह भी स्पष्ट किया है कि यदि इसी विषय पर कोई निर्णय है तो पुनः कोई कार्यवाही नहीं हो सकती (Central for Public Interest Litigatin vs UOI, 2012)

उपरोक्त कुछ मामले, जिनका उल्लेख किया है विषय को समझने व निर्णित करने में सहायक हो सकते है। अनुच्छेद 137 के द्वारा उच्चतम न्यायालय को यह अधिकार प्राप्त है कि वह अपने निर्णयों और आदेशों पर पुनर्विचार कर सकें। अनुच्छेद 140 के तहत् संसद विधि के द्वारा उच्चतम न्यायालय के अधिकारों में वृद्धि कर सकती है। अनुच्छेद 141 के अनुसार सुप्रीम कोर्ट द्वारा घोषित कोई भी बात पूरे देश के (सभी न्यायालयों पर लागू है)। अनुच्छेद 141 कहता है कि उच्चतम न्यायलय द्वारा घोषित विधि भारत के राज्य क्षेत्र के भीतर सभी न्यायालयों पर बाध्यकारी होगी। किन्तु यह भी सच है कि क्या कोई बात कहने मात्र से, उसे कानून माना जा सकता है। इसका उत्तर 'ना' में दिया है, क्योंकि तर्क के बिना यह नहीं कहा जा सकता कि कोई कानून घोषित हुआ है।

संसद जब विधेयक (एक्ट) बनाती है तो उसमें प्रावधान होता है कि राष्ट्रपति की एसेन्ट प्राप्त करे और यह घोषित करे कि वह जनता पर कब लागू होगा। विधेयक (अधिनियम), गजट विज्ञप्ति द्वारा निर्देशित तारीख से लागू होता है। ऐसा भी देखा गया है कि संसद ने कानून तो पारित कर दिया, किन्तु लागू करने की विज्ञप्ति ही जारी नहीं की। Industrial Disputes Act 1947 में एक संशोधन 1982 में हुआ, जिससे Industry की परिभाषा में परिवर्तन किया गया; किन्तु संशोधन एकट के लागू होने की तारीख आज तक घोषित नहीं की। ऐसे सैकडों उदाहरण हैं, जहां सरकार कानून बना देती है, किन्तु वह लागू नहीं करती। कानून लागू करने के हेतु हाईकोर्ट में रिट याचिका प्रस्तुत की गई, किन्तु उच्च न्यायालय ने उसे स्वीकार नहीं किया, क्योंकि लागू करने की प्रक्रिया को एक्जीक्यूटिव आदेश न मानकर विधायिकी प्रक्रिया माना गया। सर्वोच्च न्यायालय ने तमिलनाडु के प्रकरण में राज्यपाल को विधेयकों को लम्बित रखने को असंवैधानिक करार दिया है। यह विषय महत्वपूर्ण है क्योंकि केरल, तेलंगाना व पंजाब राज्यों में वहां के राज्यपाल द्वारा विधेयकों को लम्बित रखने से राज्य सरकार के कामों में बाधा पैदा हो रही है।

किसी विधेयक को लम्बित रखने की सीमा निर्धारित करने के सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय को सरकार ने चुनौती दी हैं। राष्ट्रपति ने अनुच्देद 143 के अनुसार सुप्रीम कोर्ट की राय मांगी है।

चुनौती देने वालों का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला संविधान की मूल भावना के विरूद्ध है तथा यह भी बहस की जा रही है कि लोकतांत्रिक सरकारों पर किसी प्रकार का बन्धन जनहित के विरूद्ध है, क्योंकि सरकार जनता की सरकार है।

राष्ट्रपति ने प्रश्न उठाकर सुप्रीम कोर्ट से अनुच्छेद 143 के तहत् राय मांगी है कि क्या सुप्रीम कोर्ट राष्ट्रपति या राज्यपाल के लिये किसी विषय पर निर्णय लेने के लिये समय सीमा तय कर सकता जबकि संविधान में इसकी व्यवस्था ही नहीं है? (पूछे गये 14 प्रश्नों का यह सार है)। एक दृष्टिकोण ऊपर अभिव्यक्त किया जा चुका है कि सुप्रीम कोर्ट का आदेश असंवैधानिक है। दूसरा दृष्टिकोण यदि हम अनेकान्त भाव से विचार करें तो यह हो सकता है कि अनुच्छेद 142 में पूर्ण न्याय करने के हेतु सुप्रीम कोर्ट द्वारा ऐसा किया जा सकता है, यदि उक्त अनुच्छेद की परिस्थितियां विद्यमान हों। सके अतिरिक्त अनुच्छेद 141 भी यह निर्देश देता है कि सर्वोच्च न्यायालय की कोई भी घोषणा कानून है।

अब उपरोक्त 14 प्रश्न माननीय सुप्रीम कोर्ट के समक्ष हैं। कानून स्पष्ट है कि सुप्रीम कोर्ट सलाह देने के लिये बाध्य नहीं है। अनुच्छेद 137 के अनुसार सुप्रीम कोर्ट को पुनर्विचार का अधिकार है। मेरी विनम्र राय में ऐसा प्रतीत होता है सुप्रीम कोर्ट यह उत्तर दे सकता है कि उठाये गये प्रश्नों की प्रकृति ऐसी है और कोर्ट संतुष्ट है कि राय देना नहीं आवश्यक है। हम संविधान की दो महाशक्तियां हैं। हमारा धर्म व कर्म संविधान की रक्षा का है। हम मिलकर देश के हित, विकास व उन्नति के लिये गरिमा के साथ अपने धर्म की पालना करते रहेंगे।

सत्यमेव जयते!

-अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

जन सांख्यिकीय संतुलन: कश्मीर के स्थायी पुनर्निर्माण की अनिवार्य शर्त

सुनील दत्त गोयल

कश्मीर घाटी की स्थिरता और दीर्घकालिक शांति के लिए सबसे बड़ा प्रश्न केवल सुरक्षा या आर्थिक विकास का नहीं है - बल्कि वहां की जनसांख्यिकीय संरचना (अर्स्र्डुंज्य्म ऐ्र्लूर्लि) का है। जब तक घाटी में जनसंख्या का सामंजस्य नहीं स्थापित किया जाता, तब तक किसी भी योजना या नीति की सफलता अधूरी ही मानी जाएगी। 1990 में कश्मीरी पंडितों के साथ जो हुआ, वह भारत के स्वतंत्रता के पश्चात सबसे भीषण सांप्रदायिक नरसंहारों में से एक था।

मस्जिदों से खुलेआम धमकियाँ दी गईं, गैर मुस्लिम लोगों के घरों पर हमले हुए, बहन-बेटियों की इज्जत लूटी गई, उनका सरेआम कत्लेआम किया गया, नरसंहार किया गया, लूटपाट की गई, उनको जमीन जायदाद और अपने घरों से बेदखल किया गया और इतना वीभत्स नरसंहार हुआ कि आज उसकी कल्पना मात्र से भी दिल कांप उठता है और पूरा का पूरा समुदाय अपनी ही ज़मीन से दर-ब-दर कर दिया गया। दिल्ली के जंतर-मंतर पर लगे उन अस्थायी कैंपों से लेकर आज भी विस्थापन का दर्द झेलते परिवारों तक - यह घाव आज भी हरा है। द कश्मीर फाइल पिक्चर में इसके अंश लोगों ने देखे हैं और वह उससे कल्पना कर सकते हैं, अनुमान लगा सकते हैं की फिल्म में जो अंश दिखाए गए उससे कई गुना अधिक उनकी भयानकता थी।

घाटी में पहले कश्मीरी पंडितों, सिखों और अन्य गैर-मुस्लिम समुदायों की उल्लेखनीय उपस्थिति और उनका बौद्धिक, प्रशासनिक तथा सांस्कृतिक योगदान रहा है। लेकिन कट्टरपंथी सोच और अलगाववादी मानसिकता ने वहां एकपक्षीय धार्मिक पहचान को जबरन स्थापित करने की कोशिश की - और काफी हद तक सफल भी हुए।

जनसंख्या का संतुलन क्यों ज़रूरी है?

कश्मीर घाटी की एकांगी जनसंख्या संरचना केवल सामाजिक असंतुलन का कारण नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी दीर्घकालिक खतरा है। जब घाटी में स्थानीय समर्थन के बल पर विदेशी आतंकवादी शरण पाते हैं, जब ओवर ठाउंड वर्कर आतंकियों को आश्रय एवं सूचनाएं भी देते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि समस्या केवल सीमा पार से नहीं, भीतर से भी है। कश्मीर में एक वर्ग ऐसा है जो आतंकवादियों का खुला समर्थन करता है, और दूसरा वर्ग है जो व्यापार के लिए मीठी-मीठी बातें करता है, शांति के नाम पर मोमबत्तियां जलाकर जुलूस निकालता है। लेकिन यह उनकी दोहरी नीति है - आतंकवाद और व्यापार दोनों एक साथ नहीं चल सकते। जो स्थानीय व्यापारी सच में शांति और ईमानदारी से व्यापार करना चाहता है, उसे यह बताना होगा कि कौन लोग आतंकवादियों को समर्थन दे रहे हैं, ताकि उनकी पहचान की जा सके और उन पर कार्रवाई की जा सके। अगर वह सच में ईमानदार है, तो उन्हें अपने आसपास की सच्चाई सरकार को बतानी होगी। एक ओर मोमबत्तियाँ जलाकर शांति की बातें होती हैं, तो दूसरी ओर उसी मोहल्ले से आतंकवादियों को लॉजिस्टिक मदद मिलती है। ऐसे में अगर कोई यह कहे कि घाटी में आतंकवाद और व्यापार साथ-साथ चल सकते हैं, तो यह केवल एक राजनीतिक भ्रम होगा।

समाधान क्या है?

जनसांख्यिकीय परिवर्तन एक मात्र विकल्प नहीं है, लेकिन यह सबसे निर्णायक विकल्प ज़रूर है।

सरकार को चाहिए कि वह उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, बिहार और अन्य राज्यों के युवाओं, अग्नि वीरों, पूर्व सैनिकों, अर्धसैनिक बलों के रिटायर्ड अधिकारियों, ऐसे लोगों और व्यापारियों को जो अपने व्यापार का विस्तार कश्मीर में करना चाहते हैं तथा राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत नागरिकों को घाटी में पुनर्वासित करने की योजना तैयार करे। उन्हें:-

भूमि, आवास और रोजगार व बैंकों से सुविधाजनक कर्ज की सुविधाएं दी जाएं,

वहां सम्मानजनक जीवन यापन की गारंटी हो,

और एक वर्ष की अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण देकर उन्हें सुरक्षा में भी सहभागी बनाया जाए।

यह रणनीति घाटी में स्थायी शांति और विकास के लिए आधार तैयार करेगी।

क्या यह व्यावहारिक है?

बिलकुल। धारा 370 के हटने के बाद जम्मू-कश्मीर में पहली बार भारतीय कानून और नीतियों को समान रूप से लागू करने का अवसर मिला है। निवेश बढ़ रहा है, नौकरियाँ पैदा हो रही हैं - लेकिन अगर इस बदलाव का लाभ केवल एक सीमित समुदाय तक ही रहे, तो ना तो यह लोकतंत्र के सिद्धांतों के हित में होगा और ना ही वहां के व्यापार और उद्योग जगत के सर्वांगीण विकास के लिए उचित होगा। क्योंकि सरकार जितना बड़ा विकास कश्मीर घाटी के लिए करना चाहती है उसके लिए उतने ही संसाधनों की और मानव श्रम की और मानवीय लोगों की जरूरत रहेगी और उसके लिए बाहर के राज्यों के लोगों को वहां विस्थापित करना आवश्यक है जो कि वहां के स्थानीय लोगों के हित में भी रहेगा और व्यापार उद्योग जगत के लोगों के भी हित में रहेगा। कश्मीर की वास्तविक 'विकास गाथा' तब लिखी जाएगी, जब वहां का जनसंख्यिकीय संतुलन भारत के अन्य राज्यों की तरह बहुलतावादी और समावेशी होगा। यह न केवल विस्थापितों के साथ ऐतिहासिक न्याय होगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी, सुरक्षित और समरस भारत की नींव भी होगी। सरकार को अब संकोच नहीं, दृष्टिकोण और निर्णय क्षमता दिखाने की ज़रूरत है। कश्मीर में अगर स्थायी समाधान चाहिए, तो डेमोग्राफिक चेंज ही वो निर्णायक चाबी है, जो दरवाज़ा खोल सकती है - शांति और समरसता का।

धन्यवाद,
-सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री
पूर्व उपाध्यक्ष, जयपुर स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड, जयपुर, राजस्थान

रोजगार के बेहतर विकल्प माध्यमिक शिक्षा के साथ हो

राजेन्द्र जोशी

शिक्षा केवल अंकों का खेल नहीं है। अंको का जोड़-तोड़ शिक्षार्थी को किसी मुकाम तक नहीं पहुंचा सकता। शिक्षा के जरिए स्कूलों में काम का वातावरण और संस्कृतियों में परिवर्तन करने का लक्ष्य प्राथमिक शिक्षा , शिक्षकों के साथ उनकी क्षमताओं को अधिकतम स्तर पर बढ़ाना होगा। तभी वह अपना प्रभावी ढंग से काम करते हुए शिक्षक, छात्रों और अभिभावकों को आकर्षक कर सकेंगे। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो उच्चशिक्षा से पूर्व माध्यमिक शिक्षा के मध्य में उपयोगी वोकेशनल कोर्स संचालित किये जाए ,जिससे छात्रों को काम करने में सक्षम बनाया जा सके। जरूरत प्रैक्टिकल स्किल और तकनीकी ज्ञान को बढ़ाने की हैं, बच्चों का मन व्यावसायिक शिक्षा की तरफ एकदम से नहीं जा सकता। क्योंकि अधिकांश विद्यार्थियों का कोई पारिवारिक परिवेश व्यवसायिक नहीं होता। एक बड़ा लक्ष्य सुनिश्चित करने से पहले ऐसे शिक्षक तैयार किए जाने चाहिए जो व्यवसायिक शिक्षा के लिए खुद पूरी तरह प्रशिक्षित हो। अनेक बार हम यह मान लेते हैं की शिक्षक हर कार्य में पारंगत होगा। शिक्षक अपने विषय का विशेषज्ञ हो सकता है, लेकिन करियर प्रबंधन में उसको प्रशिक्षित करने की जरूरत सदैव बनी रहनी चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा के दौरान शिक्षार्थी को विद्यार्थी परामर्श केंद्र के माध्यम से उसकी इच्छा और रुचि टटोलनी होगी। शिक्षार्थी माध्यमिक शिक्षा तक यह समझ ही नहीं पाता कि उसे अब किस और अपना कॅरियर बनाना है। यह सही और जरूरी वक्त होता है जब शिक्षार्थी को उचित सलाह और परामर्श मिले। यह परामर्श माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने के बाद नहीं अपितु माध्यमिक शिक्षा के दौरान ही वह अपना मानस और मस्तिष्क यह तय कर ले कि माध्यमिक शिक्षा के उपरांत उसे क्या काम करना है, नौकरी करनी है तो किस सेक्टर में करनी हैं, व्यवसाय करना है तो किस सेक्टर में करना है। प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से उसे सिविल सर्विसेज में जाना है तो कैसे जाना है, उसकी रुचि के अनुसार उसका मस्तिष्क एकाग्र हो जाना चाहिए। वर्तमान समय में बाजार में विकल्प बहुत है, लेकिन उचित मार्गदर्शन और चयन की समस्या बनी हुई है, अगर समय रहते शिक्षार्थी को उचित मार्गदर्शन मिले और उसके साथ ही उसे जरूरी प्रशिक्षण प्राप्त हो तो विकल्प तराशने में आसानी हो सकती है।जिससे वह अपना आगे का कॅरियर चुन सके। बेहतर विकल्प चुनने के लिए उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित कॅरियर सलाहकार नियुक्त किया जाना चाहिए जो शिक्षार्थियों को उनके भविष्य के बारे में सही दिशा दिखा सके। कॅरियर सलाहकार पूरे समय विद्यालय के दौरान छात्रों से परिचित रहे, और उनकी रुचि, क्षमता और लक्ष्य को समझे। उनकी क्षमताओं को समझकर सही कोर्स, व्यवसाय और नौकरी के विकल्प बता सके।

व्यवसायिक शिक्षा के कोर्स माध्यमिक शिक्षा के साथ-साथ संचालित किये जा सकते हैं।शिक्षार्थी को माध्यमिक शिक्षा के बाद कहीं और भटकना न पड़े और अपने विद्यालय के माध्यम से वह अपने वोकेशनल कोर्सेज चुनते बेहतर विकल्प तलाश कर ले। वैसे भी देश में युवाओं की बढ़ती बेरोजगारी हमारी सरकारों और समाज की चिंता बनी हुई हैं। इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए माध्यमिक शिक्षा स्तर पर विकल्प तलाश करना ही उचित होगा।

देशभर में बढ़ती बेरोजगारी से निजात पाने के लिए इस चुनौती को स्वीकार करते हुए नई शिक्षा नीति के अंतर्गत माध्यमिक स्कूलों में व्यवसायिक विषय को पढ़ाने के लिए पर्याप्त संख्या में परामर्शक, प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षक मौजूद होने चाहिए। इसके लिए विज्ञान प्रयोगशालाएं, कंप्यूटर लैब, कौशल प्रयोगशाला एवं अन्य उपकरण जैसी सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित हो।

जरूरी नहीं है कि परामर्शदाता अथवा प्रशिक्षित शिक्षक- सामाजिक कार्यकर्ता बहुत अधिक संख्या में उपलब्ध न हो तो उपलब्धता के आधार पर स्कूलो का एक समूह गठन कर पांच-दस किलोमीटर के दायरे में आने वाले सभी स्कूलों में ऐसे लोग समय निर्धारित कर विद्यार्थियों को परामर्श दे सकते हैं। चुनौती यह है कि बेरोजगारी की समस्या पर माध्यमिक शिक्षा के दौरान ही मूल्यांकन और आंकलन किया जाना चाहिए, जिससे माध्यमिक शिक्षा के बाद हमारे देश के विद्यार्थी रोजगार, स्वरोजगार कि तरफ अपने बेहतर विकल्पों का चयन कर ले।

माध्यमिक शिक्षा के दौरान शिक्षार्थियों को वोकेशनल शिक्षण संस्थानों से परिचित होना चाहिए। ऐसे संस्थाओं को विद्यालयों में आमंत्रित किया जाना चाहिये हो सके तो विद्यार्थियों को वोकेशनल शिक्षण संस्थाओं की विजिट भी करवाई जा सकती है। कोर्सेज तलाशने और प्रशिक्षण रुचि अनुसार 12वीं कक्षा से पूर्व और 12वीं कक्षा के दौरान दिया जाना अनिवार्य होना चाहिए। देश भर में रोजगार के अनेक विकल्प है उसमें से बेहतर विकल्प वर्ष में शिक्षार्थी को चुनने का अवसर मिलेगा और उसकी रुचि भी बढ़ेगी। विचार तो इस पर भी होना चाहिए की 12वीं कक्षा के बाद एक वर्ष और उसी विधालय में कोर्सेज संचालित किया जाए। जिससे सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्स करने के लिए शिक्षार्थी को कहीं और न जाना पड़े। वहीं वोकेशनल कोर्स करने की व्यवस्था हो सके इस विषय पर शिक्षा प्रशासन और शिक्षाविदों को गंभीरता से विचार करना चाहिए।

इस व्यवस्था में निजी और सार्वजनिक स्कूलों परस्पर सहयोग और सकारात्मक तालमेल भी बढ़ाने की जरूरत रहेगी। व्यवसायिक प्रशिक्षण केवल राजकीय स्कूलों तक सीमित ना हो बल्कि पब्लिक स्कूल, निजी स्कूलों और सार्वजनिक स्कूलों में भी इसके प्रशिक्षण की व्यवस्था रहनी चाहिए। हां यह जरूर है कि अगर उनके पास इसकी उचित व्यवस्था प्रारंभ में ना हो तो राजकीय परामर्शदाता अथवा प्रशिक्षित शिक्षक निजी और सार्वजनिक स्कूलों की मांग पर उनको सेवाएं उपलब्ध करा सके। व्यवसायिक शिक्षा एक साथ संचालित हो तभी बेहतर विकल्प शिक्षार्थी के पास उपलब्ध हो सकेंगे। देश की बेहतरी के लिए व्यवसायिक शिक्षा ही एकमात्र विकल्प हो सकता हैं। हमारी माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था व्यवसायिक शिक्षा के साथ भविष्य और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने वाली होनी चाहिए। तभी हम अच्छी शिक्षा देने के साथ ही बेरोजगारी की समस्या का समाधान तलाशने में कामयाब हो सकेंगे।

-राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद-साहित्यकार

जैव विविधता दिवस पर प्रतियोगितायें आयोजित

भीलवाड़ा, (निसं)। भारतीय सांस्कृतिक निधि इन्टेक चेप्टर भीलवाड़ा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के अवसर पर म.गा. राजकीय विद्यालय पुलिस लाइन में पोस्टर एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें विद्यालय के अनेक विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्रतिभागियों को मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित करते हुए इन्टेक कन्वीनर बाबूलाल जाजू ने कहा कि हमारी धरती पर जीवन का प्रत्येक रूप एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। जैव विविधता संरक्षण से ही मानव जीवन की खुशहाली संभव है। इसका संरक्षण करना एवं प्राकृतिक विरासतों को बचाना अत्यन्त जरूरी है। जाजू ने चिंता जाहिर करते हुए कहा कि प्रदेश में रोहिड़ा, चिरोंजी, केतकी, खसखस, खिरनी, सर्पगंधा, सफेद मुसली, केवड़ा, कदम, चंदन, गुगल, जंगली गुलाब, पीले फूलों वाला पलाश, गिरनार सेमल पीली, सालमपंजा, कड़ाया सहित महत्वपूर्ण पौधे लुप्तता के कगार पर है।

वहीं गोडावण, खरमोर, गिद्ध, उदबिलाव, हुबारा, जंगली कुत्ते, भेड़िया, गेंडा, बादली चीता, सिंह लाइन, जंगली बिल्ली, अजगर, अण्डे खाने वाला सांप, तितलियों सहित सैकड़ों प्रजातियों के जीव-जन्तु लुप्तता के कगार पर है। जैव विविधता में कमी से भीषण गर्मी का प्रकोप देखने को मिल रहा है। जाजू ने विद्यार्थियों व आमजन से जैव विविधता संरक्षण में अपनी भागीदारी निभाने की अपील की। विद्यालय कार्यक्रम प्रभारी गुमानसिंह पीपाड़ा एवं सुरेश सुराणा ने संस्था का परिचय दिया।

प्रतियोगियों को प्रधानाध्यापक मोहम्मद फारूख रंगरेज, प्रो. सुनील राय पोरवाल, व्याख्याता जितेन्द्र कुमार ब्यावट एवं श्वेता खण्डेलवाल ने संबोधित किया। जाजू द्वारा सभी प्रतिभागियों को इन्टेक की ओर से प्रशंसा पत्र एवं विजेता प्रतिभागियों को प्रशंसा पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किये।

राशिफल शुक्रवार 23 मई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र सायं 4:02 तक, प्रीति योग सायं 6:36 तक, बवकरण दिन 11:51 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मीन, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सायं 4:02 से सूर्योदय तक है। आज अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली एकादशी, जलक्रिडा एकादशी, पंचक है। आज बुध वृष राशि में दिन 1:00 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:20 तक, लाभ अमृत 7:20 से 10:42 तक, शुभ 12:23 से 2:04 तक, चर 5:26 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:39, सूर्यास्त 7:07

मेष

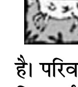

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

वृष

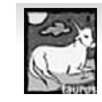

आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मिथुन

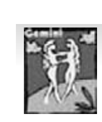

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

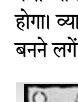

परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह

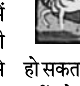

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा नहीं रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कन्या

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

वृश्चिक

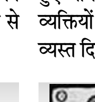

व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

धनु

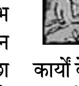

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी वाद-विवाद हो सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

मकर

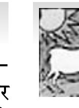

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ

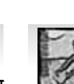

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

मीन

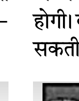

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा

एसओजी की कार्रवाई: भर्ती में फर्जीवाड़ा कर पास हुए 65 सरकारी कर्मचारियों पर मामला दर्ज

परीक्षा पास करने के लिये फेक डॉक्युमेंट लगाए और डमी कैंडिडेट बैठाए

जयपुर। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) की ओर से पिछले 5 सालों में परीक्षा में फर्जीवाड़ा करने वाले 65 लोगों पर एफआईआर दर्ज की गई है। इनमें से 31 के नाम भी जारी कर दिए गए हैं। सभी ने विभिन्न विभागों में सरकारी नौकरी हासिल कर ली थी। इनमें लैब सहायक,टीचर, पुस्तकालयाध्यक्ष शामिल हैं। जिन्होंने एग्जाम पास करने के लिए फेक डॉक्युमेंट और डमी कैंडिडेट का इस्तेमाल किया था। एसओजी की ओर से चार एफआईआर दर्ज कर जांच की जा रही है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एटीएस और एसओजी राजस्थान जयपुर वीके सिंह ने बताया कि स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप ने पिछले 5 सालों में विभिन्न विभागों में की गई भर्तियों में एग्जाम देने वाले और नौकरी हासिल करने वाले दोनों व्यक्ति की जांच की। सरकारी नौकरी पर भर्ती किए गए कर्मचारियों के एज्यूकेशन डॉक्युमेंट और आवेदन के समय दिए गए आवेदन लेटर, फोटो, साइन आदि की जांच करने पर कुछ कर्मचारी संदिग्ध मिले। एसओजी की ओर से 6 जून 2024 को राजस्थान सरकार के सभी विभागों को निर्देश दिया गया। इसके बाद 22 मार्च 2025 को माध्यमिक शिक्षा निदेशालय (बीकानेर) राजस्थान को इसकी जानकारी दी गई। 40 से अधिक विभागों ने कमेटियां बनाकर जांच की जा रही है। कमेटी की ओर से एसओजी को सूचनाएं दी जा रही है, जिसकी प्राथमिक जांच की जा रही है। जांच में निदेशक माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान (बीकानेर) की ओर से अपने नेतृत्व में कमेटी गठित की गई। कमेटी के आधार पर संभाग स्तर पर टीमें बनाई गई। डमी व फेक डिग्री के संबंध में जांच कर माध्यमिक शिक्षा विभाग ने अपनी जांच में 297 कर्मचारियों को संदिग्ध मानते हुए रिकॉर्ड एसओजी को भेजा। एसओजी की ओर से अब तक 65 कर्मचारियों के खिलाफ सत्यापन के आधार पर कुल 4 प्रकरण दर्ज किए गए।

■ एसओजी ने अलग-अलग विभागों की जांच के बाद लिया एक्शन

जिनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई उनमें चौथ का बरवाड़ा (सवाई माधोपुर) स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल में लैब सहायक पद पर अजमल मीना, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल लोरवाड़ा (सवाई माधोपुर) में लैब सहायक पद पर मनराज मीना, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल बांसबुर्जा नगर (डीग) में शारीरिक शिक्षा अध्यापक के पद पर नवीन कुमार नेहरा, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल देबावास (जालोर) में पुस्तकालय अध्यक्ष पद पर खुशराज सिंह मीना, राजकीय गर्ल्स उच्च प्राथमिक स्कूल थौबउ (जालोर) में शारीरिक शिक्षा अध्यापक के पद पर मुकेश कुमार चौधरी, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल बागरी नगर (पाली) में कनिष्ठ सहायक पद पर विजय कुमार मीना, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल डायल (जालोर) में कनिष्ठ सहायक पद पर सुरेश कुमार, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल बंधा (जालोर) में टीचर लेवल-1 पद पर ओमप्रकाश, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल टांपी (जालोर) में लैब सहायक पद पर मनोहर लाल, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल होती गांव (जालोर) में कनिष्ठ सहायक पद पर श्रवण कुमार, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल गलिफा (जालोर) में कनिष्ठ सहायक पद पर अरुण कुमार विश्नोई, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल मालवाड़ (जालोर) में लैब सहायक पद पर रावताराम, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल धरणावास (जालोर) में टीचर लेवल-1 पद पर ओमप्रकाश विश्नोई, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल धरणावास (जालोर) में टीचर लेवल-1 पद पर अनोप राम विश्नोई, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल सदगांव (सांचौर) में लैब सहायक पद पर बलवंत सिंह, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल दादुसन (सांचौर) में शारीरिक शिक्षा अध्यापक पद पर कैलाश कुमार, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल हांडेतर (सांचौर) में लैब सहायक पद पर अनिल कुमार, राजकीय उच्च प्राथमिक स्कूल मारूखेड़ा (सांचौर) में शारीरिक शिक्षा अध्यापक पद पर दीपा राम, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल पाथमेड़ा (सांचौर) में कनिष्ठ सहायक पद पर प्रमा बाई, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल प्रतापपुरा (सांचौर) में कनिष्ठ सहायक पद पर पिंकी कुमारी, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल फालना (पाली) में शारीरिक शिक्षा अध्यापक पद पर राजूराम सारण, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल कोटड़ा (सांचौर) में शारीरिक शिक्षा अध्यापक पद पर सुरेश कुमार, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल जानेवा (नागौर) में टीचर लेवल-1 पद पर विक्रम सिंह, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल गरवालिया (पाली) में शारीरिक शिक्षक अध्यापक पद पर रूपेन्द्र सिंह चौधरी, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल विछावादी सांकरना (जालोर) में शारीरिक शिक्षक अध्यापक पद पर नरेश प्रताप, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल टांपी (जालोर) में लैब सहायक पद पर सुनील विश्नोई, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल जलीना कलान (सांचौर) में शारीरिक शिक्षा अध्यापक पद पर रिडमल राम, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल आगार (सांचौर) में शारीरिक शिक्षक पद पर पाबूराम विश्नोई, राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल किलूपिया (सांचौर) में शारीरिक शिक्षक पद पर सुशीला, राजकीय उच्च प्राथमिक स्कूल रोहिणा (नागौर) में टीचर लेवल-1 विशेष शिक्षक पद पर मनोज कुमार, राजकीय उच्च प्राथमिक स्कूल रामदड़ी का गाला ओगाला फागलिया (बाड़मेर) में शारीरिक शिक्षक पद पर दिनेश सारण कार्यरत हैं। इसका चयन राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड जयपुर की ओर से आयोजित शारीरिक शिक्षा अध्यापक भर्ती परीक्षा 2022 को हुआ था। कमेटी की जांच में फोटो और साइन दोनों का मिलान नहीं होना पाया गया।

डीआईजी परिस देशमुख ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा एसआईटी गठन के पश्चात् एसआईटी हेल्पलाइन का गठन किया गया। जिसमें एसआईटी हेल्पलाइन के मोबाईल नम्बर 9530429258 जारी किये गये। एसआईटी हेल्पलाइन के उपरोक्त नम्बर पर काफी संख्या में डमी व फर्जी डिग्रियों से संबंधित परिवाद प्राप्त हुए थे। राजस्थान में सार्वजनिक भर्ती परीक्षाओं में डमी और फर्जी डिग्रियों की समस्या की व्यापकता को ध्यान में रखते हुये राज्य सरकार से विभागवार विगत पांच वर्षों में हुई भर्तियों में कार्मिकों के की ओर से 6 जून 2024 को राजस्थान सरकार के समस्त विभागों को पत्र जारी कर गत 5 वर्ष में हुई भर्तियों के कार्मिकों के सत्यापन के संबंध में लिखा गया। इसी जांच के कम में निदेशक माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान बीकानेर द्वारा अपने नेतृत्व मे कमेटी गठित की गई थी। जिस पर एसओजी राजस्थान जयपुर द्वारा अब तक 65 कार्मिकों के विरूद्ध सत्यापन के आधार 4 प्रकरण पंजीबद्ध किये है। यह प्रकरण में व्याख्याता भर्ती परीक्षा 2018 व 2022, वरिष्ठ अध्यापक भर्ती परीक्षा 2022, अध्यापक लेवल-1 भर्ती परीक्षा 2018, प्रयोगशाला सहायक सीधी भर्ती परीक्षा 2018-19, शारीरिक शिक्षा ग्रेड-टीआई भर्ती परीक्षा 2018 व 2022, पुस्तकालयाध्यक्ष भर्ती परीक्षा 2018, शारीरिक प्रशिक्षण अनुदेशक भर्ती परीक्षा 2018, अध्यापक लेवल-1 विशेष शिक्षक भर्ती परीक्षा 2022 और प्रधानाध्यापक भर्ती परीक्षा 2018 से संबंधित है। भविष्य में विभागवार गठित समितियों द्वारा अपनी कार्यवाही सत्यापन के दौरान संदिग्ध पाए गए कार्मिकों के विरूद्ध प्रकरण पंजीबद्ध कर इसकी जांच की जाएगी एवं दोषी पाये जाने पर प्रभावी विधिक कार्यवाही की जायेगी।

मोतीलाल मीणा ऑयल इंडिया लिमिटेड में स्वतंत्र डायरेक्टर नियुक्त

भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष मोतीलाल मीणा ऑयल इंडिया लिमिटेड में डायरेक्टर के रूप में नियुक्त किया गया है।

जयपुर। भारतीय जनता पार्टी ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि वह पार्टी कार्यकर्ताओं की मेहनत, निष्ठा और समर्पण को कभी अनदेखा नहीं करती। पार्टी में काम करने वाले हर कार्यकर्ता को सही समय पर पहचान और जिम्मेदारी दी जाती है। भाजपा के समर्पित और जमीनी कार्यकर्ता पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष मोतीलाल मीणा को भारत सरकार के अधीन आने वाली प्रतिष्ठित सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी ऑयल इंडिया लिमिटेड में डायरेक्टर के रूप में नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति न सिर्फ पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणास्त्रोत है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि बीजेपी में मेहनत और वफादारी का हमेशा सम्मान होता है।

भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष एवं ऑयल इंडिया कंपनी के नवनियुक्त डायरेक्टर मोतीलाल मीणा ने कहा ऑयल इंडिया कंपनी में मेरी नियुक्ति गर्व का क्षण है। मैं इस जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा, ईमानदारी और दूरदृष्टि के साथ निभाने का संकल्प लेता हूँ। ऊर्जा क्षेत्र के निरंतर विकास, पारदर्शिता और नवाचार को प्रोत्साहित करते हुए, मैं कंपनी की प्रगति और राष्ट्र के ऊर्जा आत्मनिर्भरता लक्ष्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हूँ। मैं अपने सहयोगियों, वरिष्ठों और समस्त हितधारकों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझ पर विश्वास जताया।

स्वतंत्र डायरेक्टर मीणा ने कहा कि "भारतीय जनता पार्टी एक ऐसी पार्टी है जो एक सामान्य कार्यकर्ता को भी बड़े से बड़े पद तक पहुंचा सकती है। मुझे यह सौभाग्य मिला कि पार्टी ने मुझ पर भरोसा जताया और ऑयल इंडिया लिमिटेड जैसे संस्थान में डायरेक्टर के रूप में सेवा का अवसर दिया। मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, भाजपा राजस्थान प्रभारी राधा मोहन दास अग्रवाल, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।"

उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं एक सामान्य परिवार से आते हैं और आज दुनिया के सबसे प्रभावशाली नेताओं में गिने जाते हैं। उसी तरह, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को भी शायद यह अनुमान नहीं था कि वे इस ऊंचे पद तक पहुंचेंगे। इससे यह साबित होता है कि भाजपा में हर कार्यकर्ता की लॉटरी कभी भी खुल सकती है।

भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष मोतीलाल मीणा को नई जिम्मेदारी मिलने पर भाजपा प्रदेश कार्यालय में पार्टी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं, कार्यालय स्टॉफ ने बधाई दी। इस दौरान भाजपा प्रवक्ता डॉ अपूर्वा सिंह, एकता शर्मा, भाजपा पदाधिकारी महेंद्र सिंह पंवार, भाजपा युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष सुरेंद्र सिंह पुरूवंशी,अनुराग जांगिड, आशीष शर्मा, नवरत्न नराणियां, राजेश तांबी सहित बडी संख्या में कार्यकर्ताओं ने मोतीलाल मीणा को बधाई दी।

रीको ने औद्योगिक क्षेत्र विश्वकर्मा एवं विश्वकर्मा-विस्तार के विकास के लिए 45 करोड़ रु. मंजूर किए : राज्यवर्धन राठौड़

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के सशक्त नेतृत्व में कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ रीको औद्योगिक क्षेत्रों के आधारभूत ढांचे के विकास के लिए पूर्ण रूप से कटिबद्ध है।

उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि औद्योगिक क्षेत्र विश्वकर्मा एवं विश्वकर्मा-विस्तार, जयपुर के उद्यमियों को उन्नत आधारभूत ढांचा उपलब्ध हो, इस हेतु रीको द्वारा इन औद्योगिक क्षेत्रों के लिए करीब 45 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। इस राशि को सड़कों तथा अन्य आधारभूत सुविधाओं पर खर्च किया जाएगा। रीको का प्रयास है कि औद्योगिक क्षेत्रों में उद्यमी अपने उद्यमों का निर्बाध रूप से संचालन कर सकें।

कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़

इसी कड़ी में विश्वकर्मा एवं विश्वकर्मा-विस्तार, जयपुर के लिए रीको ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में लगभग 28 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की तथा लगभग 17 करोड़ रुपये के कार्यादेश जारी किए।

इसके अंतर्गत दोनों औद्योगिक क्षेत्रों में सड़कों का डामरीकरण / सीमेंट कंक्रीट सड़कों का निर्माण कार्य, नालियों का उन्नयन कार्य एवं ओवरहेड पावर लाइन को भूमिगत केबल द्वारा स्थानांतरित करने में से कुछ कार्य पूर्ण हो चुके हैं एवं शेष कार्य प्रगति पर हैं। रीको द्वारा समय-समय पर इन औद्योगिक क्षेत्रों में एसोसिएशन एवं उद्यमियों से विचार-विमर्श कर उनकी मांगों के अनुरूप आधारभूत सुविधाओं के उन्नयन एवं रखरखाव का कार्य निरंतर किया जा रहा है।

वित्तीय वर्ष 2024-25 में विश्वकर्मा एवं विश्वकर्मा-विस्तार, जयपुर के लिए रीको ने कुल 2791.85 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की एवं 1726.20 लाख रुपये के कार्यादेश जारी किए। अब तक उक्त कार्यों में 423.82 लाख रुपये की राशि व्यय की जा चुकी है। उक्त स्वीकृत कार्यों के अंतर्गत लगभग 14 किमी लंबाई में सड़क के डामरीकरण / सीमेंट कंक्रीट सड़कों का निर्माण कार्य, 13,500 वर्ग मीटर में पेव्ड शोल्डर निर्माण, 2 किमी में नालियों का उन्नयन तथा 3.50 किमी लंबाई में ओवरहेड विद्युत लाइनों को भूमिगत केबल के माध्यम से स्थानांतरित करने का कार्य सम्मिलित है। इनमें से अधिकांश कार्य संपन्न हो चुके हैं एवं शेष कार्य तीव्र गति से करवाए जा रहे हैं।

■ 2024-25 में कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ की पहल से 28 करोड़ की स्वीकृति, 17 करोड़ के कार्यादेश

औद्योगिक क्षेत्र विश्वकर्मा एवं विश्वकर्मा-विस्तार में वित्तीय वर्ष 2025-26 में कुल रुपये 1700.55 लाख की लागत से 7.25 किमी सड़कों का व्हाइट टॉपिंग सीमेंट कंक्रीट पेवमेंट द्वारा उन्नयन तथा 3.20 किमी नालियों का आरसीसी बॉक्स टाइप संरचना द्वारा उन्नयन किया जाना प्रस्तावित है। इसके साथ ही क्षेत्र में सुगम यातायात सुनिश्चित करने हेतु मुख्य चौराहों पर ओवरहेड विद्युत लाइनों को भूमिगत किया जा रहा है तथा अन्य चिन्हित सड़कों को चौड़ा किया जा रहा है।

पुलिस कमिश्नर आज झोटवाड़ा थाने में करेंगे जनसुनवाई

जयपुर। जयपुर पुलिस कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसफ की ओर से परिवादियों की समस्याओं का तुरंत निस्तारण कर आमजन को राहत पहुंचाने के लिए 23 मई (शुक्रवार) की शाम 5 बजे से रात 8 बजे तक पुलिस थाना झोटवाड़ा में जनसुनवाई करेंगे। पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम अमित कुमार ने बताया कि जयपुर पुलिस कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसफ 23 मई (शुक्रवार) की शाम 5 बजे से रात 8 बजे तक पुलिस थाना झोटवाडा में जनसुनवाई करने जा रहे है। इस दौरान पुलिस थाना झोटवाडा, मुरलीपुरा, करधनी, कालवाड़, हरमाडा एवं विश्वकर्मा क्षेत्र के परिवादियों की जनसुनवाई की जाएगी। जनसुनवाई का उद्देश्य संबंधित क्षेत्र के परिवादियों की समस्याओं का तुरंत निस्तारण करते हुए आमजन को राहत पहुंचाना है।

विधायक इंदिरा मीणा के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई करने पर रोक

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने बामनवास विधायक इंदिरा मीणा के खिलाफ भाजपा मंडल अध्यक्ष की ओर से दर्ज कराई गई एफआईआर में दंडात्मक कार्रवाई करने पर रोक लगा दी है। वहीं अदालत ने बौंली थाना पुलिस से तथ्यात्मक रिपोर्ट पेश करने को कहा है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश इंदिरा मीणा की ओर से दर्ज आपराधिक याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता कृतेष ओसवाल ने अदालत को बताया कि भाजपा मंडल अध्यक्ष हनुमत दीक्षित ने याचिकाकर्ता सहित अन्य के खिलाफ गत 15 अप्रैल को बौंली थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया कि 13 अप्रैल की देर रात वह अंबेडकर जयंती के कार्यक्रम की रूपरेखा तय कर देर रात घर लौट रहा था। रास्ते में इंदिरा मीणा और उसके करीब दो दर्जन समर्थकों ने उसकी कार को रोककर मारपीट की और गंभीर रूप से घायल कर दिया। रिपोर्ट में हत्या का प्रयास का आरोप लगाते हुए कहा गया कि उस कार में बंद कर जान से मारने की कोशिश भी की गई। एफआईआर को चुनौती देते हुए याचिका में कहा गया कि शिकायतकर्ता के कोई गंभीर चोट नहीं आई है। ऐसे में हत्या का प्रयास का अपराध नहीं बनता। इसके अलावा पूरा विवाद अंबेडकर जयंती से ठीक पहले का है। शिकायतकर्ता ने अपने साथियों से मिलकर अंबेडकर की मूर्ति के नीचे नाम पट्टिका की टाइलें तोडकर सद्भाव खराब करने का प्रयत्न किया था। इसे लेकर याचिकाकर्ता ने अलग से हनुमत दीक्षित व अन्य के खिलाफ एफआईआर दर्ज करा रखी है। याचिका में कहा गया कि उसके खिलाफ राजनीतिक द्वेषता के चलते एफआईआर दर्ज कराई गई है। जिसे रद्द किया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए अदालत ने याचिकाकर्ता के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई करने पर रोक लगाते हुए पुलिस से तथ्यात्मक रिपोर्ट तलब की है।

■ भाजपा मंडल अध्यक्ष की ओर से दर्ज कराई गई थी एफ.आई.आर.

गौरतलब है कि सवाई माधोपुर के बौंली में करीब दो साल पूर्व भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा का अनावरण हुआ था। जिसकी शिलान्यास पट्टिका में पूर्व सीएम अशोक गहलोत का भी नाम था। अंबेडकर जयंती से पहले विधायक इंदिरा और मंडल अध्यक्ष हनुमत के बीच इस नाम पट्टिका को लेकर विवाद हुआ था। एमएलए के समर्थकों का कहना है कि हनुमत दीक्षित ने नाम पट्टिका से विधायक का नाम हटा दिया। इसकी जानकारी मिलने पर विधायक मौके पर पहुंची थी। जहां दोनों के बीच हाथापाई हुई थी।

अवैध हथियार सहित दो बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। जयपुर पुलिस कमिश्नरेट की स्पेशल टीम (सीएसटी) ने ऑपरेशन एक्शन अगेंस्ट गन(आग) के तहत नाहरगढ़ थाना इलाके में कार्रवाई करते हुए आपसी रंजिश में फायरिंग करने की नियत से अवैध हथियार सहित दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है और साथ ही पुलिस ने आरोपियों के पास से एक देशी कट्टा और आठ जिंदा कारतूस बरामद किया है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त (अपराध) कुन्दन कंवरिया ने बताया कि पुलिस कमिश्नरेट की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशन एक्शन अगेंस्ट गन (आग) के तहत सीएसटी नेनाहरगढ़ थाना इलाके में कार्रवाई करते हुए आपसी रंजिश में फायरिंग करने वाले बदमाश राहुल मीणा(27) और राहुल साहू (26) को गिरफ्तार किया है और दोनों ही आरोपी नाहरगढ़ रोड जयपुर इलाके के रहने वाले है। जिनके पास से पुलिस ने एक देशी कट्टा और आठ जिंदा कारतूस जब्त की है।

कार सवार बदमाशों ने किया इंजीनियरिंग छात्र का अपहरण

जयपुर। शिवदासपुरा थाना इलाके में इंजीनियरिंग छात्र का अपहरण करने का मामला सामने आया है। जानकारी में सामने आया कि शोर सुनकर लोगों के पीछा करने पर अपहरणकर्ताओं ने चलती कार से इंजीनियरिंग छात्र को धक्का देकर रोड पर फेंक दिया। पीड़ित छात्र ने अपहरण का मुकदमा दर्ज करवाया। वहीं पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को राउंडअप कर कार को जब्त किया है। फिलहाल पूछताछ की जा रही है।

एएसआई घनश्याम ने बताया कि बारां के अटरू निवासी प्रिंस मीणा (18) का अपहरण हुआ था, जो शिवदासपुरा में श्रीराम की नंगल में किराए पर रहकर प्राइवेट कॉलेज में इंजीनियरिंग फर्स्ट ईयर की पढ़ाई कर रहा है। जो बुधवार की देर शाम को गोनेर मोड़ से पैदल अपने घर जा रहा था। इसी दौरान एक कार उसके पास आकर रुकी औश्र उसमें बैठे दो लड़कों ने जरुरी काम होने की बताकर बात करने के लिए मोबाइल मांगा। बात करने की जगह मोबाइल को लेकर बैठ गए। मोबाइल मांगने पर दोनों लड़कों ने मारपीट कर कार में डालकर उसका अपहरण कर लिया। अपहरण कर ले जाने के दौरान चलती कार से प्रिंस मीणा ने शोर मचाया तो इसकी मदद के लिए इकट्ठा हुए लोगों ने कार का पीछा करने पर अपहरणकर्ताओं ने चलती कार से प्रिंस को धक्का देकर रोड पर फेंक दिया। लोगों ने पीछा कर घेराबंदी कर कार को पकड़कर रुकवा लिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों आरोपियों को राउंडअप कर कार को जब्त किया। अपहरण में पकड़े आरोपी मोहित मीणा और उसके नाबालिग दोस्त ने पूछताछ में मौज-मस्ती के लिए रुपए वसूली के लिए अपहरण करना बताया है।

■ लोगों का पीछा करने पर चलती कार से धक्का देकर फेंका

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर बधाई दी

जयपुर। राजस्थान सड़क सुरक्षा परिषद के सदस्य डॉ. निर्मल जैन ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान दोनों के बीच राष्ट्रीय सुरक्षा, सड़क सुरक्षा, युवाओं में राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत करने सहित कई समसामयिक मुद्दों पर गहन चर्चा हुई।

डॉ. जैन ने ऑपरेशन सिंदूर की ऐतिहासिक सफलता पर रक्षा मंत्री को हार्दिक बधाई दी और भारतीय सेना के शौर्य व पराक्रम की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह ऑपरेशन भारत की सैन्य ताकत और कुशल रणनीतिक नेतृत्व का प्रतीक है।

इसके साथ ही डॉ. जैन ने अवगत कराया कि ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के उपलक्ष्य में राजस्थान में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ के सान्निध्य में तिरंगा यात्राओं का सफल आयोजन किया गया, जिसने प्रदेशभर में देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता का सशक्त संदेश प्रसारित किया। इन यात्राओं में जनसामान्य, विशेषकर युवाओं की उल्लेखनीय भागीदारी रही।

राजस्थान सड़क सुरक्षा परिषद के सदस्य डॉ. निर्मल जैन ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से शिष्टाचार भेंट की।

राजनाथ सिंह ने डॉ. जैन के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि राष्ट्रनिर्माण में जनभागीदारी अत्यंत आवश्यक है और ऐसे आयोजनों से समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यह भेंट राष्ट्रहित से जुड़े विभिन्न विषयों पर संवाद का एक महत्वपूर्ण अवसर सिद्ध हुई और आने वाले समय में जनहित में ठोस पहलों की संभावनाएं प्रबल हुई हैं।

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान को मिलीं 10 दुर्लभ पाण्डुलिपियां

जयपुर। आयुर्वेदिक चिकित्सा और शोध को एक नई दिशा देने वाला अहम योगदान हाल ही में जयपुर स्थित राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान को प्राप्त हुआ है। संस्थान के आयुर्वेद पाण्डुलिपि विज्ञान विभाग को फतेहपुर (सीकर) स्थित श्री सरस्वती पुस्तकालय से 10 अत्यंत दुर्लभ और ऐतिहासिक आयुर्वेदिक पाण्डुलिपियां अध्ययन एवं शोध के लिए प्रदान की गई हैं।

विभागाध्यक्ष प्रो. असित कुमार पाञ्जा ने बताया कि प्राप्त पाण्डुलिपियों में भावप्रकाश, रसतरंगिणी, गजस्वरूप प्रकाश, पालकाप्य संहिता, तर्कसंग्रह, सामुद्रिक हस्तलिखित और संतान गोपाल मंत्र विधि जैसे बहुमूल्य ग्रंथ शामिल हैं। इन पांडुलिपियों का ऐतिहासिक और चिकित्सकीय महत्व अपार है, जो आयुर्वेदिक चिकित्सा के गूढ़ रहस्यों को उजागर कर सकते हैं।

संस्थान के कुलपति प्रो. संजीव शर्मा ने इस अमूल्य सहयोग के लिए सरस्वती पुस्तकालय के पदाधिकारियों का आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि यह योगदान न केवल प्राचीन ज्ञान की रक्षा में सहायक होगा, बल्कि वर्तमान पीढ़ी के वैद्यों और शोधकर्ताओं के लिए भी अमूल्य मार्गदर्शक सिद्ध होगा। उन्होंने इसे आयुर्वेदिक ज्ञान-विरासत के संरक्षण की दिशा में एक सराहनीय पहल बताया। इन पांडुलिपियों से न केवल संस्थान के शिक्षक और चिकित्सक रोगनिदान और उपचार के क्षेत्र में नए आयाम खोज सकेंगे, बल्कि अध्ययनरत छात्र भी प्राचीन आयुर्वेद की बारीकियों से रूबरू हो सकेंगे। पांडुलिपियां प्राप्त करने वाले प्रतिनिधि दल में असिस्टेंट प्रोफेसर अनिल कुमार शर्मा, डॉ. कृष्ण दास, डॉ. नीतिशा, डॉ. सुब्रमण्यन और डॉ. कीर्ति सिंहल शामिल रहे।

सार-समाचार

पीसीएम मसाले की वार्षिक आम बैठक सम्पन्न

जयपुर। पिंक सिटी मिल्स (पीसीएम मसाले), जयपुर की वार्षिक आम बैठक का आयोजन आज कंपनी मुख्यालय पर किया गया। इस बैठक की अध्यक्षता कंपनी के संस्थापक एवं प्रबंध निदेशक एल. एल. गुप्ता और संस्थापक सदस्य किशन अवतार खंडेलवाल ने की। इस अवसर पर संस्थापक सदस्य द्रोपती देवी, माया देवी खंडेलवाल तथा निदेशक अमित खंडेलवाल एवं अंकित खंडेलवाल सहित अन्य आठ बोर्ड सदस्य भी उपस्थित रहे। बैठक में एल. एल. गुप्ता एवं किशन अवतार खंडेलवाल ने जानकारी दी कि कंपनी को भारतीय उपभोक्ताओं की सेवा करते हुए 58 गौरवशाली वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। उन्होंने बताया कि पीसीएम मसाले राजस्थान की पहली एगमार्क प्रमाणित मसाला निर्माता कंपनी है, जो 80 से अधिक प्रकार के उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद बनाती है। कंपनी के निदेशक अमित खंडेलवाल एवं अंकित खंडेलवाल ने बताया कि पीसीएम ने हाल ही में अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी अपने उत्पादों की आपूर्ति शुरू की है। उन्होंने कहा कि कंपनी जल्द ही इंस्टेंट ड्राई ग्रेवी और इंस्टेंट चटनी के और भी नए उत्पादों की श्रृंखला लॉन्च करने की योजना बना रही है। संस्थापक सदस्यों द्रोपती देवी और श्रीमती माया देवी खंडेलवाल ने बताया कि कंपनी की "केजी रिटेलर्स योजना" इस माह के अंत तक समाप्त हो रही है, जिसे देशभर से अभूतपूर्व प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है। साथ ही, कंपनी ने नवीनतम तकनीकों से युक्त नई रेसिओ मशीन योजना भी क्रियान्वित की है, जिससे उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव होगी। कंपनी निकट भविष्य में बड़े स्तर पर विस्तार की योजनाएं लेकर आ रही है।

एक पिस्टल सहित एक आरोपी पकड़ा

जयपुर। जयपुर पुलिस कमिश्नरेट की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशन एक्शन अगेंस्ट गन (आग) के तहत पुलिस कमिश्नरेट की स्पेशल टीम (सीएसटी) ने कानोता थाना इलाके में कार्रवाई करते हुए अवैध हथियार रखने वाले एक आरोपी को गिरफ्तार किया है और साथ ही पुलिस ने आरोपित के पास से एक पिस्टल बरामद किया है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त (अपराध) कुन्दन कंवरिया ने बताया कि ऑपरेशन एक्शन अगेंस्ट गन (आग) के तहत सीएसटी ने कानोता थाना इलाके में कार्रवाई करते हुए अवैध हथियार देशी पिस्टल रखने वाले आरोपित कृष्ण कुमार शर्मा (35) निवासी कानोता जयपुर को गिरफ्तार कर उसके पास से एक पिस्टल जब्त की है। पुलिस पूछताछ में सामने आया कि यह अवैध हथियार उसकी मौसी का लडके जितेश शर्मा उर्फ जीतू निवासी गुर्जर की थडी महेश नगर ने उसे रखने के लिए दी थी और इस अवैध हथियार के साथ दो कारतूस भी थे,जिनको 10 मई को उसके जन्मदिन पर फायर कर दिए गए।

ट्रक कंटेनर में ले जाया जा रहा 1.48 करोड़ रुपये का 300 किलो गांजा पकड़ा

नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो जयपुर और जोधपुर की संयुक्त टीमों ने टोंक में कार्रवाई की

टोंक/जोधपुर, (कासं)। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) जयपुर और जोधपुर की संयुक्त टीमों ने नशा मुक्त भारत अभियान के तहत टोंक में कार्रवाई करते हुए करीब तीन सौ किलो गांजा पकड़ा है। जब्त किए गए गांजे की अनुमानित बाजार कीमत 1.48 करोड़ रुपए बताई गई है। गोपनीय सूचना के आधार पर एनसीबी की संयुक्त टीम ने 19 मई की रात को टोंक के सोनवा टोल प्लाज़ा पर इस कार्रवाई को अंजाम दिया।

एनसीबी के जोनल निदेशक (जोधपुर-जयपुर) आईआरएस घनश्याम सोनी ने बताया कि जोधपुर एनसीबी के पास महत्वपूर्ण इनपुट था और उसी आधार पर एनसीबी की टैक्निकल सर्विलांस यूनिट लगातार उस पर काम कर रही थी। टीम को पुख्ता जानकारी मिली, तब संयुक्त टीम ने टोंक के सोनवा टोल प्लाजा पर एक संदिग्ध ट्रक कंट्रेनर को रुकवाया। जब इसकी बारीकी से तलाशी ली गई, तो उसमें एक विशेष रूप से निर्मित छुपा हुआ कक्ष मिला जिसमें 290 पैकेटों में कुल 296.204 किलोग्राम गांजा छुपाकर रखा गया था। कार्रवाई के दौरान एनसीबी की टीम ने ट्रक के चालक और सह-चालक को मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया। इसके अलावा नशीले पदार्थों के प्राप्तकर्ता को भी धर दबोचा।

जोनल निदेशक घनश्याम सोनी के अनुसार इस ऑपरेशन में टोंक और सीकर जिलों के पुलिस अधीक्षकों ने भी अहम भूमिका निभाई। अब गिरफ्त में आए तीनों बदमाशों से तस्करी के इस नेटवर्क की गहराई तक जांच कर गिरोह से जुड़े अन्य आरोपियों की तलाश की जा रही है।

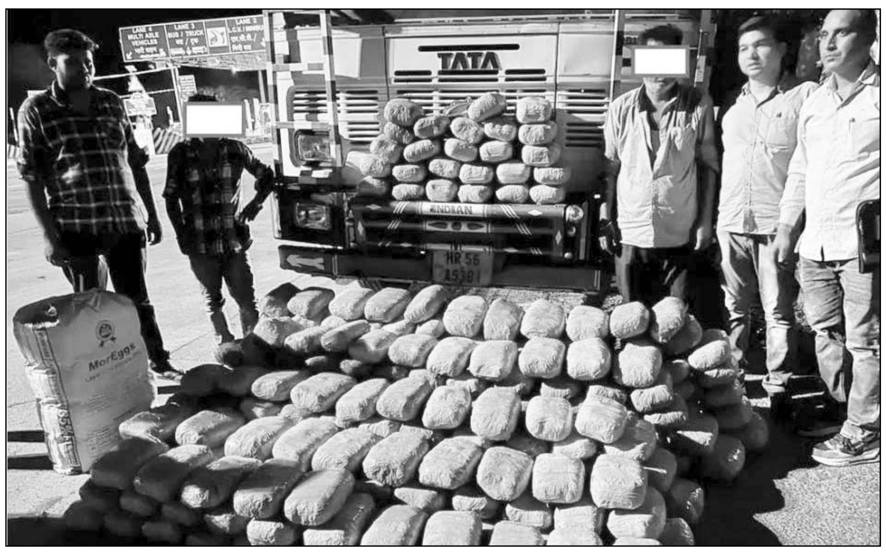

एनसीबी की टीम ने ट्रक के चालक और सह चालक को गांजा सहित गिरफ्तार किया।

- ट्रक के चालक और सह चालक को गिरफ्तार किया, नशीले पदार्थों के प्राप्तकर्ता को भी दबोचा
- एनसीबी ने टोंक के सोनवा टोल प्लाजा पर एक संदिग्ध ट्रक कंट्रेनर में गांजा पकड़ा

एनसीबी के जोनल निदेशक सोनी ने आम नागरिकों से अपील की है कि वे नशे की प्रवृत्ति को जड़ से समाप्त करने के लिए एनसीबी का सहयोग करें। यदि किसी के पास नशीले पदार्थों से जुड़ी कोई सूचना हो, तो पोर्टल एमएएनएएस या 1933 हेल्पलाइन नंबर पर गुप्त रूप से जानकारी दे सकता है। सूचनाकर्ताओं की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी और उन्हें उचित इनाम भी दिया जाएगा।

पचास लाख की पंजाब निर्मित शराब पकड़ी, दो जने गिरफ्तार

जालोर, (कासं)। जालोर जिले के सायला पुलिस ने गुरुवार को सरहद सांगाणा स्थित एक्सप्रेस- वे टोल नाका के पास ट्रक डम्पर को जब्त कर पंजाब निर्मित अवैध अंग्रेजी शराब के 414 कार्टून बरामद कर दो आरोपियो को गिरफ्तार किया। बरामद अवैध शराब की अनुमानित बाजार कीमत 50 लाख रूपये आंकी गई है।

महानिरीक्षक पुलिस विकास कुमार जोधपुर, रेंज जोधपुर के द्वारा रेंज में अवैध शराब तस्करी की रोकथाम हेतु ''ऑपरेशन भौकाल'' के तहत कार्यवाही करने के निर्देशानुसार मन ज्ञानचन्द्र यादव, जिला पुलिस अधीक्षक जालोर के निर्देशानुसार जिले में शराब तस्करी करने वालों के विरूद्ध कार्रवाई हेतु चलाये जा रहे अभियान के तहत हाइवे नाकाबंदी, संदिग्ध स्थानों एवं वाहनों की सघन तलाशी ली जाकर जिला पुलिस द्वारा लगातार कार्यवाहीयां की जा रही है।

- आरोपियों ने प्रारम्भिक पूछताछ में उक्त माल पंजाब से भरकर गुजरात सप्लाई करने हेतु ले जाना बताया

इसी क्रम में मोटाराम गोदारा अति. पुलिस अधीक्षक, जालोर एवं गौतम कुमार जैन पुलिस उप अधीक्षक, वृत जालोर के सुपरविजन में सुरेन्द्रसिंह निरीक्षक पुलिस थानाधिकारी पुलिस थाना सायला के नेतृत्व में महिपालसिंह उपनिरीक्षक मय जाब्ता की पुलिस टीम का गठन किया गया। पुलिस टीम द्वारा मुखबिर सूचनानुसार अमृतसर-जामनगर एक्सप्रेस वे सरहद सांगाणा स्थित टोल नाका के पास पहुंच कर हड़मानाराम पुत्र रामाराम विश्नोई निवासी नया वास, मेघावा, पुलिस थाना चितलवाना जिला जालोर व नैनाराम पुत्र महिराम विश्नोई निवासी विश्नोईयो का वास, भाणिया, पुलिस थाना शिवपुरा जिला पाली के कब्जे से ट्रक में भरी हुई पंजाब निर्मित अंग्रेजी शराब बरामद कर दोनों को गिरफ्तार किया गया। ट्रक डम्पर को जब्त कर पुलिस थाना सायला में प्रकरण पंजीबद्ध किया गया।

आरोपियों ने प्रारम्भिक पूछताछ में उक्त माल पंजाब से भरकर गुजरात सप्लाई करने हेतु ले जाना बताया है, माल पंजाब से मंगवाकर गुजरात सप्लाई करने वाले पूनमाराम निवासी हेमागुडा के घर पर दबिश दी गई जो घर पर नहीं मिला। अवैध शराब पंजाब से कहां से भरवाया गया तथा गुजरात किसको सप्लाई किया जाना था इस सम्बंध में गहन अनुसंधान जारी है।

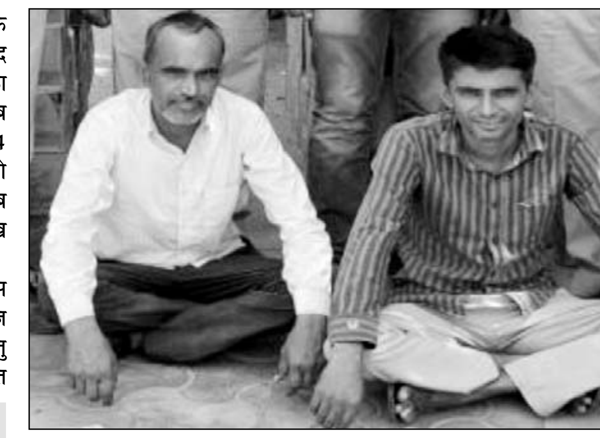

सायला पुलिस ने अवैध शराब सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया।

शादी का झांसा देकर यौन शोषण का आरोप

जोधपुर, (कासं)। शहर के चौपासनी हाउसिंग बोर्ड थाना क्षेत्र में हार्डकोर अपराधी मोंटू कंडारा के खिलाफ यौन शोषण और धमकाने का मामला सामने आया है। पुलिस ने केस दर्ज किया है। आरोप है कि पीड़िता को शादी का झांसा देकर यौन शोषण किया गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर अब अग्रिम जांच आरंभ की है। उसका मेडिकल करवाया गया है।

थानाधिकारी ईश्वरचंद पारिक ने बताया कि हार्डकोर अपराधी नागौरी गेट निवासी मोंटू कंडारा के खिलाफ केस दर्ज हुआ है। पीड़िता का आरोप है कि वह यहां एक स्थान पर किराए पर रहती है। वह उसके संपर्क में आई तब उसने शादी का झांसा देकर पिछले दो साल से यौन शोषण करता रहा। शादी का दबाव बनाए जाने पर वह धमकाने लगा और मारपीट की। थानाधिकारी पारिक ने बताया कि पीड़िता का आज मेडिकल करवाया गया है।

प्रॉपर्टी व्यवसायी की हत्या का फरार आरोपी जयपुर से गिरफ्तार

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर पुलिस ने प्रॉपर्टी व्यवसायी की हत्या के फरार आरोपी को जयपुर से गिरफ्तार किया है। आरोपी पर 10 हजार का इनाम घोषित था। जोधपुर पुलिस जिला पश्चिम के टॉप-10 वांछितों में शामिल है।

कुड़ी भगतासनी थाना अधिकारी हमीरसिंह भाटी ने बताया कि आरोपी कानाराम को जयपुर से पकड़ा है। वह प्रॉपर्टी व्यवसायी चंदन सिंह की मार्च में हत्या कर भागा था। आरोपी जयपुर से होते हुए अहमदाबाद गया। उसके बाद बेंगलुरु चला गया। बेंगलुरु में 8-10 दिन रहने के बाद जयपुर आ गया और मजदूरी करने लग गया। पुलिस को इस बारे में भनक लगी तो टीम गठित कर जयपुर से दबोचा। जानकारी के अनुसार 21 मार्च 2025 को पुलिस थाना कुड़ी भगतासनी में भवानी सिंह ने इस संबंध में रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। रिपोर्ट में भवानी सिंह ने बताया कि 21 मार्च को मेरा भाई चंदन सिंह पुत्र हनुमान सिंह के साथ रात्रि में करीब 12 बजे से 12.40 बजे के आसपास रूपेश के मोबाइल पर मुकेश हुड्डा ने बात की और बताया कि आपकी गाड़ी में मेरा मोबाइल गिर गया था। आप मेरा मोबाइल मुझे लाकर दो, नहीं तो हम आपकी गाड़ियां जला देंगे। तभी फोन गंगाराम ने अपने पास लेकर फोन पर चंदन सिंह को धमकी दी। कहा कि मेरे दोस्त मुकेश हुड्डा फोन आपकी गाडी में भूल गया है, उसे वापस कर दो नहीं तो हम आपकी गाड़ियां जला देंगे और तुझे मार देंगे।

- प्रॉपर्टी व्यवसायी चंदन सिंह की मार्च में हत्या कर भागा था आरोपी, बेंगलुरु में 8-10 दिन रहने के बाद जयपुर आ गया और मजदूरी करने लग गया
- आरोपी पर 10 हजार का इनाम घोषित था और जोधपुर पुलिस जिला पश्चिम के टॉप-10 वांछितों में शामिल था

चंदनसिंह फोन देने के लिए घर से रवाना हुआ। तब मोती मार्केट पुलिया के नीचे पहले से रूपेश सैन, मुकेश हुड्डा, गेनाराम, पारस सैन व 2-3 अन्य लोगों ने चंदनसिंह पर धारदार हथियार से हमला कर दिया। चंदनसिंह के गर्दन के पास से खून बहना शुरू हो गया। चंदनसिंह का भाई हॉस्पिटल लेकर गया, जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया।

वारदात के 24 घंटे के भीतर ही पुलिस ने घटना में शामिल आरोपी रूपेश सैन, पारस सैन, अर्जुन चौधरी व प्रतापराम को गिरफ्तार कर लिया था। इसके बाद मुख्य आरोपी मुकेश हुड्डा व अशोक चौधरी, गंगाराम को गिरफ्तार किया गया था। कानाराम जाट फरार चल रहा था। उसको अब जयपुर से दस्तयाब कर गिरफ्तार किया गया है। कानाराम को गिरफ्तार करने वाली पुलिस की टीम में कुड़ी भगतासनी थानाधिकारी हमीर सिंह भाटी, हैड कॉन्स्टेबल प्रेम चौधरी, कॉन्स्टेबल जगदीश , धीरज मीना , महिपाल दिनेश शामिल रहे।

सांप के काटने से बालिका की मौत

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के काछोला थाना क्षेत्र में घर पर सोई हुई सात साल की मासूम बालिका को नींद में सांप के द्वारा काट लेने से हालत बिगड़ने पर महात्मा गांधी चिकित्सालय में भर्ती करवाया गया, जहां मासूम ने बीती रात इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। जानकारी के अनुसार मानवी पिता हेमराज दरोगा मूलतः चित्तौड़ जिले के निवासी हाल काछोला थाना क्षेत्र के राजपुरा गांव में अपने परिवार के साथ रह रही थी। मासूम आंगनबाड़ी में पढ़ाई करती थी। रोजमर्रा की तरह मानवी घर पर ही अपने माता-पिता के साथ सो रही थी, इसी दौरान सांप ने सोते समय मानवी के दोनों हाथों पर काट लिया जिसके चलते मानवी की हालत बिगड़ गई। सांप के काटने से मानवी चिल्लाई तो तुरंत माता-पिता उसे नजदीकी चिकित्सालय ले गए, जहां से हालत ज्यादा गंभीर होने के कारण चिकित्सकों ने उसे तुरंत महात्मा गांधी जिला चिकित्सालय के लिए रेफर कर दिया।

एमजी हॉस्पिटल में उपचार के दौरान बुधवार रात मानवी ने दम तोड़ दिया, जिसके शव को महात्मा गांधी जिला चिकित्सालय की मोर्चरी में सुरक्षित रखवाया गया, जहां पुलिस द्वारा उसका पोस्टमार्टम करवाने के बाद शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया।

पैंथर ने मवेशियों को निशाना बनाया

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के मांडल थाना क्षेत्र में पैंथर (तेंदुआ) के आतंक से ग्रामीणों में दहशत का माहौल है। मांडल उपखण्ड के भादू ग्राम पंचायत के भालडी खेड़ा गांव की गोशाला में पैंथर ने बछड़ों को निशाना बनाते हुए मौत के घाट उतार दिया। घटना के बाद से गांव में भय का माहौल है। ग्रामीणों ने वन विभाग से पैंथर को पकड़ने और क्षेत्र में सुरक्षा बढ़ाने की मांग की है। ग्रामीणों ने बताया कि गुरुवार सुबह जब वह गौशाला पहुंचे तो उन्होंने बछड़े और एक अन्य पशु को मृत पाया।

Jalore Nagrik Sahakari Bank Ltd.
Head Office : Near Haridav Joshi Circle , Jalore (Rajasthan)
Email: headoffice@jalorebank.com / Bank Website :- www.jalorebank .com Phone No. 9413854111

क्रमांक/जानासबैंकलि/1911 दिनांक :22.05.2025

निविदा सूचना

जालोर नागरिक सहकारी बैंक लिमिटेड को अपनी विभिन्न शाखाओं के लिए वर्ष 2025-26 COMPUTER , HARDWARE- SOFTWARE, UPS - Battary & ATM/ Recycler Machine इत्यादि खरीद हेतु इच्छूक पंजीकृत एवं प्रतिष्ठित फर्म / कम्पनी (GST Firm) से निविदाएं आंमत्रित की जाती है। इच्छूक पंजीकृत एव प्रतिष्ठित फर्म / कम्पनी (GST Firm) अपनी निविदा दरें सील बन्द लिफाफे मे दिनांक 06.06.2025 को सांय 4 बजे तक बैंक प्रधान कार्यालय स्थित मुख्यकार्यकारी अधिकारी के कक्ष मे रखें गये टेण्डर बॉक्स में डालना सुनिश्चित करें। निविदा प्रति निविदा शुल्क जमा करवाने पर प्राप्त कर सकते है। विस्तृत विवरण , शर्तें, मात्रा इत्यादि की सम्पूर्ण जानकारी बैंक की वेब साईट www.jalorebank .com पर उपलब्ध है।

परमानन्द भट्ट
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

THE RAJASTHAN SMALL INDUSTRIES CORPORATION LTD.

NOTICE INVITING BID

NIB Number : 08/2025-26

Bids are invited for the Procurement of Services of "Strategic Business Promoter to Equip, Operate, Manage & Transfer Business Services at ICD, Jodhpur" from the eligible and experienced bidders up to 5.00 PM on 05.06.2025

Other particulars of the bid may be viewed on the procurement portal **(https://eproc.rajasthan.gov.in, https://sppp.rajasthan.gov.in)** of the state and the official website of RSIC i.e. **https://www.industries.rajasthan.gov.in/rsicl.**

The approximate value of the procurement is INR Rs. 15.00 Crores

UBN No: RSI2526SLOB00008

Raj.Samwad/C/24/2818 **Managing Director**

129 करोड़ की ठगी करने वाली गैंग के तीन युवक गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। शहर पुलिस ने सायबर ठगी करने वाली अन्तर्राष्ट्रीय गैंग का खुलासा करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर इनके कब्जे से ठगी में काम आने वाले उपकरणों को जब्त किया। आरोपियों ने देशभर में 719 प्रकरणों में 129.72 करोड़ की ठगी की है।

जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल ने बताया कि पुलिस मुख्यालय द्वारा सायबर अपराधों की रोकथाम के लिए चलाए जा रहे अभियान के दौरान 21 मई को डीएसटी टीम प्रभारी श्यामसिंह रत्नू को सूचना मिली कि सबसिटी सेंटर हिरणमगरी में कार में सवार तीन लड़के अन्य व्यक्तियों से बैंक खातों से अवैध लेनदेन कर रहे हैं। जिस पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा, पुलिस उप अधीक्षक छगनपुरोहित के सुपरविजन में श्यामसिंह रत्नू स्पेशल टीम प्रभारी मय टीम व हिरणमगरी थानाधिकारी भरत योगी मय टीम ने मौके पर पहुंच कर कार्यवाही करते हुए हर्षवर्धन झा पुत्र राजेश झा, जयेश कुमार खटीक पुत्र सेशचन्द्र खटीक एवं तुफानसिंह पुत्र बन्नेसिंह को गिरफ्तार कर इनके कब्जे से 10 मोबाइल, 2 लेपटॉप, 7 कंपनियों की मोबाइल सीम, 10 एटीएम, चैकबुक, बैंक डायरी सहित वारदात में प्रयुक्त कार बरामद कर प्रकरण दर्ज कर जांच हिरणमगरी थानाधिकारी भरत योगी को सौंपी है। आरोपी टेलग्राम ग्रुप के माध्यम से केवाईसी, पूरा एक्सेस सहित देना अधुरी केवाईसी को ड्रेगन एसएमएस व गो एसएमएस नाम की एप्लीकेशन के माध्यम सेओटीपी प्राप्त कर पूरा एक्सेस देते थे। खातों की जानकारी प्राप्त करने के अपूर्ण खातेधारकों को लालच देकर केवाईसी पूर्ण कर उसके मोबाइल नंबर को लिंक कर खाते की संपूर्ण जानकारी, बैंक डायरी, चैक बुक व खाते की जानकारी भेजी जाती थी, जिनमें ठगी की नकदी जमा होती थी।

- ठगी करने में सहयोगी उपकरण जब्त, आरोपियों के खिलाफ देशभर में 719 शिकायतें दर्ज हैं

एसडीएम के लिए 70 हजार की रिश्वत लेते रीडर गिरफ्तार

लघु ईट-भट्ठा लगाने के लिए भूमि समपरिवर्तन निरस्त करने के लिए परिवादी से रिश्वत ली

बहरोड़/नीमराना, (निसं)। जिला कोटपूतली-बहरोड़ के बहरोड़ उपखंड अधिकारी के रीडर ललित कुमार यादव निवासी गादोज तहसील बहरोड़ को एसडीएम रामकिशोर मीणा के नाम से लघु ईंट-भट्ठा लगाने के लिए भूमि सम परिवर्तन निरस्त करने के लिए परिवादी से 70 हजार रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथों एसीबी की टीम ने गिरफ्तार किया है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महानिदेशक पुलिस डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि एसीबी एसयू द्वितीय को एक शिकायत इस आशय की मिली कि आरोपी परिवादी को परिवादी की भूमि पर लघु ईंट-भट्टा लगाने के समपरिवर्तन आदेश को निरस्त करने के लिये 1 लाख रूपये की रिश्वत की मांग कर परेशान कर रहा है।

जिस पर एसीबी जयपुर द्वितीय एवं अनिल कयाल उप महानिरीक्षक पुलिस के सुपरवीजन में एसीबी एसयू द्वितीय के प्रभारी अधिकारी महावीर प्रसाद के नेतृत्व में मय विजय सिंह, उप अधीक्षक पुलिस के ट्रेप कार्यवाही करते हुए आरोपी ललित कुमार यादव हाल वरिष्ठ सहायक रीडर, कार्यालय उपखण्ड अधिकारी, बहरोड़ जिला कोटपूतली बहरोड़ एसडीएम रामकिशोर मीणा के लिए 70 हजार रूपये रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार गया है।

कार्यालय जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर

क्रमांक :- जोविप्रा/2025-26/471 दिनांक :- 20/05/2025

ई-निविदा सूचना संख्या - मुख्यालय/09/2025-26

जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर की ओर से प्राधिकरण एवं राजकीय विभाग में उपयुक्त श्रेणी मे पंजीकृत संवेदक जिनका पंजीयन 4 वर्ष की अवधि में पुनरावलोकन (Review) किया हुआ हो जो निविदा की निर्धारित शर्तो को पूर्ण करती है से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्युरमेन्ट प्रक्रिया से ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। इन कार्य की अनुमानित लागत, निविदा बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, निविदा, शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट **www.jodhpurjda.org, www.eproc.rajasthan.gov.in** एवं **www.sppp.raj.nic.in** पर देखी जा सकती है। **UBN No. : JOD2526WSOB00081, JOD2526WSOB00082**

राज.संवाद/सी/25/2756 अधिशाषी अभियंता

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, विद्युत खण्ड, बीकानेर

क्रमांक:- अअ/वि.खण्ड/बी./निविदा/2025-26/126 दिनांक:- 14.05.2025

ई-निविदा सूचना संख्या 06/वर्ष 2025-26 (NIB Code No. PWD2526A0574)

निम्न हस्ताक्षर कर्ता द्वारा राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से विद्युतीकरण कार्यो के लिए मोहरबन्द निविदाएं सा.नि.वि., राज में सक्षम श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्रों की प्रति अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में निविदा आवेदन/डाउनलोड करने की दिनांक 15.05.2025 से 26.05.2025 तक सांय 6.00 बजे तक जमा कराई जा सकती है। तकनीकी निविदा दिनांक 27.05.2025 को दोपहर 15.00 बजे खोली जायेंगी। प्री-बिड मिटिंग की दिनांक 21.05.2025 दोपहर 01.00 बजे है। निविदा की अन्य शर्ते एवं स्वीकृत तकमीना आदि का विवरण किसी भी कार्य दिवस के दौरान इस कार्यालय में उपस्थित होकर देखा जा सकता है। अन्य शर्ते व विवरण इस कार्यालय में व डीपीआर की वेबसाईट www.dipronline.org, http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है। कुल कार्यो की संख्या 03 कुल लागत 293.61 लाख।

UBN No. 1. PWD2526WSOB01728
2. PWD2526WSOB01729
3. PWD2526WSOB01730

भवदीय
(शैलेश कुमार पाठक)
अधिशाषी अभियन्ता,
सा.नि.वि. विद्युत खण्ड, बीकानेर

DIPR/C/6491/2025

व्यापारी से 1.74 करोड़ की धोखाधड़ी के मामले में दो आरोपी गिरफ्तार

दिल्ली में गोल्ड ट्रेडिंग इन्वेस्टमेंट के नाम से फर्जी फर्म बनाकर भीलवाड़ा के एक व्यापारी से धोखाधड़ी की थी

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले की सायबर थाना पुलिस ने दिल्ली में गोल्ड ट्रेडिंग इन्वेस्टमेंट के नाम से फर्जी फर्म बनाकर भीलवाड़ा के एक व्यापारी से 1.74 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी के मामले में दो आरोपियों की गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों से 48 लाख 39 हजार रुपए भी रिकवर कर लिए हैं। उक्त फर्म के खिलाफ देश के पांच राज्यों में शिकायत दर्ज होने का भी खुलासा हुआ है।

सायबर पुलिस ने बताया कि भीलवाड़ा निवासी व्यवसायी से गोल्ड ट्रेडिंग इन्वेस्टमेंट के नाम पर हुई सायबर ठगी को लेकर सायबर पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज करवाया था। अनुसंधान के दौरान पुलिस ने बैंक एवं नोडल अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर 60 लाख रुपये विभिन्न बैंक खातों में होल्ड करवा दिये। पुलिस टीम ने अथक प्रयास कर प्रकरण में फर्जी कंपनी बनाकर ठगी करने वाले आरोपियों सरताज अली तथा मो. अख्तर अंसारी को गिरफ्तार किया था। अभी तक पुलिस 48.39 लाख रुपये पीड़ित व्यवसायी को बैंक खाते में रिफंड करवाए हैं। पुलिस ने बताया कि दक्षिण दिल्ली के रहने वाले इन सायबर ठगों ने दिल्ली में जो फर्जी फर्म, गोल्ड ट्रेडिंग इन्वेस्टमेंट के नाम से बनाई, उक्त फर्म के बैंक खातों पर महाराष्ट्र, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, बिहार, तमिलनाडु सहित देशभर में करोड़ों की शिकायतें दर्ज हैं। सायबर थाना प्रभारी डीएसपी उदय सिंह चुण्डावत, सीआई घनश्याम मीणा, हेड कांस्टेबल मानसिंह, हेड कांस्टेबल राजेंद्र मीणा, कांस्टेबल राजेंद्र इस कार्रवाई को अंजाम दिया है।

भीलवाड़ा जिले की सायबर थाना पुलिस ने धोखाधड़ी के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया।

- पुलिस ने आरोपियों से 48 लाख 39 हजार रुपए भी रिकवर किये, फर्म के खिलाफ पांच राज्यों में शिकायत दर्ज होने का भी खुलासा हुआ

महिलाओं के जेवर लूटने वाले दो गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। रात के समय सो रही महिला के सोने के जेवरात लूट ले जाने वाते दो आरोपियों को गिरफ्तार किया। पूछताछ में आरोपियों ने पांच वारदातें कबूल की।

जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल ने बताया कि 5 मई को रात के समय अभियुक्त बंशीलाल उर्फ बंटी पुत्र खेमा मीणा निवासी बनकड़ा कुराबड़, प्रकाश उर्फ पिन्टु उर्फ आंतक मीणा पुत्र जीवनलाल मीणा निवासी डांग फला उमरड़ा हॉल डेढ किया हिरणमगरी कुराबड़ के जगत गांव बंगला की ढाणी में सो रही शांतिबाई पत्नी भेरूलाल रेबारी के कानों में पहनी सोने के कर्णफुल व डोडी लूट कर फरार हो गए थे। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गोपाल स्वरूप मेवाड़ा, पुलिस उप अधीक्षक सूर्यवीरसिंह के सुपरविजन में कुराबड़ थानाधिकारी प्रभुलाल के नेतृत्व में गठित दल ने बंशीलाल उर्फ बंटी पुत्र खेमा व प्रकाश उर्फ पिंटु को गिरफ्तार किया। पूछताछ में वारदात में महेश पुत्र बाबुलाल उर्फ दलपत मीणा निवासी मानपुरा के शामिल होने का खुलासा हुआ। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से वारदात करने से पूर्व चोरी की गई बाईक व एक बाईक का इंजन भी बरामद किया। पुलिस आरोपियों ने पूछताछ कर रही है।

कार्यालय अधिशाषी अभियंता सा.नि.वि. खण्ड राजाखेड़ा

क्रमांक : 182-196 दिनांक : 14.05.2025

अल्पकालीन निविदा सूचना संख्या : 02/2025-26

NIB Code : PWD2526A0565 and UBN is : PWD2526WSOB01708

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से खण्ड राजाखेडा जिला धौलपुर में सड़क एवं पुलिया मरम्मत कार्य के लिए उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवदेकों, राज्य सरकार के अन्य विभागों में पंजीकृत "एए", "ए" "बी" "सी" एवं "डी" श्रेणी संवेदकों एवं केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के "एए", "ए" "बी" "सी" एवं "डी" श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से कार्यों हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदा से संबंधित विवरण वेबसाईट www.eproc.dipronline.org व http://www.pwd.rajasthan.gov.in, www.eproc.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।

क्र. सं.	मुख्यालय का नाम	:	कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड राजाखेड़ा
1.	निविदा का कार्य	:	पुलिया मरम्मत कार्य
2.	निविदा की कुल लागत	:	रू. 17.25 लाख
3.	निविदा शुल्क, प्रोसेसिंग शुल्क एवं धरोहर राशि जमा कराने की प्रक्रिया	:	वित्त विभाग द्वारा जारी प्रपत्र प.(5)/वित्त/साविलेनि/2018 दिनांक 27.04.2020 के अनुसार ई-ग्रास चालान पर ऑनलाईन एक ही चालान द्वारा निम्न बजद मद में जमा करानी है। (1) निविदा शुल्क 0075-00-800-52-01 (2) प्रोसेसिंग शुल्क 8658-00-102-(16)-[02] (निर्माण विभाग) (RISL Fees) (3) धरोहर राशि 8443-00-108-00-00
4.	निविदा आवेदन/ डाउनलोड करने की तारीख (वेबसाइट पर)	:	दिनांक 15.05.2025 प्रातः 9.30 बजे दिनांक 26.05.2025 सायं 6.00 बजे तक
5.	निविदा फार्म जमा कराने की तारीख (वेबसाईट पर)	:	दिनांक 15.05.2025 प्रातः 9.30 बजे दिनांक 26.05.2025 सायं 6.00 बजे तक
6.	निविदा खोलने की तारीख (वेबसाईट पर)	:	दिनांक 27.05.2025 दोपहर 12.30 बजे

(सौरभ शर्मा)
अधिशाषी अभियंता
सा.नि.वि. खण्ड, राजाखेड़ा

DIPR/C/6480/2025

गेमिंग साइट्स से ऑनलाइन सट्टा खिला रहे सात आरोपियों को धर-दबोचा

करोड़ों रुपए होने के दस्तावेज भी बरामद

जयपुर। पुलिस मुख्यालय की ओर से चलाए जा रहे साइबर ठगों के खिलाफ चलाए जा रहे साइबर शील्ड अभियान के तहत पश्चिम जिले की बिंदायका थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए ऑनलाइन सट्टा खिला रहे गैंग का पर्दाफाश करते हुए सात आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस टीम ने कार्रवाई के दौरान साइबर ठगी से संबंधित 80 बैंक खातों को पुलिस ने सीज करवाए गए हैं। साथ ही इन बैंक खातों में साइबर ठगी के करोड़ों रुपए का ट्रांजेक्शन होने के सबूत मिले हैं। पुलिस ने दो मुकदमे दर्ज कर

- 80 खाते करवाए सीज, 47 मोबाइल सहित सात लैपटॉप आदि किए जब्त
- फिलहाल आरोपियों से जुटी है पूछताछ में

इस कार्रवाई को अंजाम दिया है। इस पूरी कार्रवाई में 47 मोबाइल और सात लैपटॉप भी जब्त किए हैं। फिलहाल इस पूरे मामले को लेकर पुलिस पड़ताल में जुटी है। पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) अमित कुमार ने बताया कि साइबर ठगी की जानकारी मिलने पर बिंदायका थाना पुलिस ने सिरसी के वैशाली स्टेट अपार्टमेंट में एक फ्लैट पर छापेमारी करते हुए दो एफआईआर दर्ज कर चक्रवर्ती चौहान, भूपेंद्र सिंह, प्रतीक सुथार, भावेश शर्मा, हेमेंद्र सिंह चौहान, कमलेश पटेल और सोहन सिंह को गिरफ्तार किया गया है। सभी आरोपी बिंदायका इलाके के रहने वाले है।

इसके साथ ही मॉनिटर, सीपीयू, कीबोर्ड, माउस, लैपटॉप, मोबाइल, एटीएम कार्ड, बैंक पासबुक, चेक बुक, राउटर, नोटबुक, सिम आदि जब्त किए गए हैं। इसके अलावा 80 बैंक खाते और उनकी यूपीआई आईडी व एटीएम सीज किए गए हैं। इन बैंक खातों में करोड़ों रुपए के फ्रॉड की आशंका है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) ने बताया कि बिंदायका इलाके में क्रिकेट के ऑनलाइन सट्टे की जानकारी मिलने पर यह कार्रवाई की गई है। इस दौरान सामने आया कि आरोपी कई गेमिंग साइट्स पर ऑनलाइन सट्टा अलग-अलग आईडी से चला रहे थे।

दो बाइक टकराई, फैक्ट्री चौकीदार की मौत

जयपुर। आगरा रोड पर बैनाड़ मोड़ के पास दो बाइक्स आपस में टकरा गई। हादसे में बाइक सवार एक फैक्ट्री चौकीदार की मौत हो गई, जबकि हादसे में दूसरी बाइक सवार युवक घायल हो गया। पुलिस के अनुसार बुधवार शाम करीब साढ़े सात बजे बैनाड़ मोड़ पर दो बाइक्स टकरा गई। हादसे में बैनाडा निवासी 52 वर्षीय शंकर लाल शर्मा पुत्र गुल्लाराम और दूसरी बाइक सवार युवक घायल हो गया।

सूचना पर मौके पर पहुंच कर पुलिस ने दोनों को अस्पताल पहुंचाया, जहां पर शंकर लाल की उपचार के दौरान देर रात मौत हो गई। पुलिस ने गुरुवार को शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया।

210 ग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा सहित एक आरोपित को पकडा

जयपुर। बगरू थाना पुलिस ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए 210 ग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा सहित एक आरोपित को पकडा है और साथ ही गांजा ब्रिकी राशि 13 हजार 500 रुपये भी जब्त किए गए है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) अमित कुमार ने बताया कि पुलिस कमिश्नरेट की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत बगरू थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ गांजे की तस्करी करने वाले आरोपी हाकिम सिंह सांसी निवासी दूनी जिला टोंक हाल रीको एरिया बगरू को गिरफ्तार किया गया है। जिसके पास से पुलिस ने 210 ग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा और ब्रिकी राशि के साढ़े 13 हजार रुपये बरामद किए गए है। पुलिस आरोपित से अवैध मादक पदार्थ की खरीद-फरोख्त के बारे मे पूछताछ करने में जुटी है।

वहीं जवाहर नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ स्मैक की तस्करी करने वाली एक महिला तस्कर को पकडा और उसके पास से 6.42 ग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक की बरामद की है। फिलहाल आरोपी महिला से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व तेजस्वनी गौतम ने बताया कि ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत जवाहर नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ की तस्करी करने वाली महिला तस्कर सुनीता सांसी निवासी नागौर हाल जवाहर नगर को गिरफ्तार कर उसके पास से 6.42 ग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक जब्त की है। पुलिस आरोपित महिला तस्कर से अवैध मादक पदार्थ की खरीद-फरोख्त के बारे में पूछताछ करने में जुटी है।

'नशा मुक्त जयपुर अभियान के लिए हर संभव प्रयास सुनिश्चित हों'

जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने अधिकारियों को दिये निर्देश

जयपुर। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने नशा मुक्त जयपुर अभियान को सफल बनाने के लिए संबंधित विभागों के अधिकारियों को हर संभव प्रयास करने के निर्देश दिये हैं। साथ ही, उन्होंने मादक पदार्थों के अवैध उत्पादन, भंडारण एवं परिवहन पर सख्त कार्रवाई हो साथ ही युवाओं को नशे की लत से दूर करने और दूर रखने के लिए प्रभावी कार्ययोजना का धरातल पर क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किये हैं।

डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने गुरुवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित नार्को कॉर्डिनेशन सेंटर की जिला स्तरीय समिति की बैठक को संबोधित करते हुए अधिकारियों को सार्वजनिक स्थल पर धूम्रपान करने वालों के साथ-साथ विद्यालयों एवं कॉलेजों के पास स्थित दुकानों पर तम्बाकू उत्पाद बेचने वालों, दवा दुकानों की जांच करने एवं प्रतिबंधित दवाओं की बिक्री, तय सीमा से अधिक दवा बिक्री, बिना लाइसेंस के दवा बिक्री सहित अन्य अनियमितताओं के खिलाफ कार्रवाई करने के निर्देश दिये।

साथ ही उन्होंने युवाओं को नशे की जद में आने से बचाने के लिए सघन जागरुकता अभियान चलाने पर जोर दिया। उन्होंने नशा मुक्त जयपुर

- कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई नार्को कॉर्डिनेशन सेंटर की समिति की बैठक

अभियान को जन-जन का अभियान बनाने के लिए अधिक से अधिक युवाओं को अभियान के तहत ई-शपथ लेने के लिए प्रेरित करने भी निर्देश दिये।

जिला पुलिस अधीक्षक ग्रामीण आनन्द शर्मा ने बताया कि कोटपा अधिनियम, 2003 सिगरेट और तंबाकू से जुड़े उत्पादों पर नियंत्रण रखने के लिए बनाया गया है।

इस अधिनियम के तहत, सार्वजनिक जगहों पर धूम्रपान करना, तंबाकू बेचना, और तंबाकू से जुड़े विज्ञापन करना मना है कोटपा अधिनियम का उल्लंघन करने पर जुर्माना और जेल हो सकती है। उन्होंने बताया कि 18 साल से कम उम्र के बच्चों को तंबाकू एवं इससे बने नशीले पदार्थ बेचना निषेध है। उन्होंने बताया कि पुलिस विभाग द्वारा विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को नशे के प्रवृति से दूर रखने के लिए विशेष जागरूकता अभियान ऑपरेशन नोक आउट भी चलाया जा रहा है।

बैठक में एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री जगदीश व्यास ने बताया कि एनडीपीएस एक्ट की धारा 68 (एफ) के तहत नाकोटिक्स के मुकदमे के अपराधियों के विरुद्ध वित्तीय जांच करने का प्रावधान है।

एक्ट के प्रावधानों के तहत इस मुकदमे के 6 साल पूर्व तक की अवधि में मादक पदार्थों के अवैध व्यापार से अर्जित संपत्तियों चाहे वह परिवार के किसी अन्य सदस्य के नाम पर हो अथवा बेनामी हो उसको सीज अथवा फ्रीज किया जा सकता है।

एक्ट के तहत वाणिज्यिक मात्रा में बरामद मादक पदार्थों के तस्करों एवं ऐसी प्रवृत्तियों में अभ्यस्त तस्करों को एक साल तक जेल में निरुद्ध करने का भी प्रावधान है। उन्होंने बताया कि आमजन मानस पोर्टल अथवा हेल्पलाइन नंबर 1933 पर ऐसे अपराधियों के खिलाफ शिकायत दर्ज करवा सकते हैं।

बैठक में जिला कलक्टर ने सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के अधिकारियों को जिले में बिना लाइसेंस के संचालित अवैध नशामुक्ति केन्द्रों पर प्रभावी कार्रवाई के एवं नवजीवन योजना के चिन्हित व्यक्तियों परिवारों को योजना के लाभांवित करने के लिए निर्देशित दिये। बैठक में औषधि नियंत्रण विभाग के अधिकारियों ने जानकारी दी कि नियमों का उल्लंघन करने वाले एवं प्रतिबंधित दवाओं की बिक्री करने वाले दवा विक्रेताओं के खिलाफ लाइसेंस निलंबन एवं निरस्त करने की कार्रवाई को अंजाम दिया जा रहा है।

बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर (दक्षिण) श्री संतोष कुमार मीणा सहित चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, औषधि नियंत्रक विभाग, कृषि विभाग, शिक्षा विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, वन विभाग सहित अन्य विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

युवक के खाते से निकाले सवा लाख रु.

जयपुर। हरमाड़ा थाना इलाके में मोबाइल चोरी कर एक व्यक्ति के खाते से सवा लाख रुपए निकाल लिए गए। पीडित को खाते की जांच करने पर ठगी का पता चला। इस पर पीडित थाने पहुंचा और मामला दर्ज करवाया। पुलिस के अनुसार रामपुरा डाबड़ी निवासी वर्धमान शर्मा ने मामला दर्ज करवाया कि किसी ने उसका मोबाइल चोरी कर लिया। कुछ दिन बाद मोबाइल खरीदने के बाद जब वह बैंक पहुंचा तो उसे खाते से ऑनलाइन 1.24 लाख रुपए निकाले जाने की जानकारी मिली। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

राजापार्क में विदेशी सिगरेट व्यापारी पर छापा, 110 पैकेट सीज

जयपुर। शहर में तंबाकू नियंत्रण कानून कोटपा एक्ट के उल्लंघन पर प्रशासन ने सख्त रुख अपनाते हुए गुरुवार को कार्रवाई कार्रवाई करते हुए

- कोटपा एक्ट की धारा 7 के तहत यह कार्रवाई की गई

राजापार्क स्थित एक विदेशी सिगरेट विक्रेता के यहां छापा मारते हुए 110 पैकेट विदेशी सिगरेट जब्त किए गए। यह कार्रवाई कोटपा एक्ट की धारा 7 के तहत की गई, जिसमें बिना वैधानिक चेतावनी के तंबाकू उत्पाद बेचना निषिद्ध है।

जिला कलेक्टर डॉ. जितेंद्र सोनी की ओर से दिए गए निर्देश पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जयपुर प्रथम डॉ. रवि शेखावत के नेतृत्व में कार्रवाई करते हुए खाद्य सुरक्षा अधिकारियों एवं एनटीसीपी सेल ने विदेशी सिगरेटों के 110 पैकेट को किया गया सीज कर पाबंद किया। ताकि भविष्य में इस प्रकार की गतिविधियां दोबारा न हो। टीम में खाद्य सुरक्षा अधिकारी नरेश चेजारा, विनोद शर्मा तथा एनटीसीपी सेल के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल रहे।

इनका कहना है

जनस्वास्थ्य की रक्षा के लिए तंबाकू नियंत्रण कानून का सख्ती से पालन कराया जाएगा।

-डॉ. रवि शेखावत, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी

दो बदमाश युवक से ले गए मोबाइल

जयपुर। करधनी थाना इलाके में ध्यान बंटा कर स्कूटी सवार दो बदमाश एक युवक का मोबाइल ले गए और जाते समय कांच रखा मोबाइल कवर थमा गए। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच पड़ताल में जुटी है।

पुलिस के अनुसार श्याम नगर बेनाड रोड निवासी रोहित सिंह ने मामला दर्ज करवाया कि 19 मई की सुबह करीब साढ़े आठ बजे वह बेनाड रोड से कहीं जा रहा था इसी दौरान स्कूटी सवार दो बदमाश आकर रुके। बदमाशों ने नम्बर सेव करने के लिए उससे मोबाइल मांगा। इसके बाद ध्यान बंटा कर बदमाश उसे मोबाइल कवर थमा गए। बदमाशों के जाते ही उसने मोबाइल संभाला तो कवर में कांच रखा था। इस पर पीडित ने थाने पहुंच कर मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने मामला दर्ज कर घटना स्थल और उसके आस-पास के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।

वहीं दूसरी ओर सोडाला थाना इलाके में स्कूटी सवार बदमाश एक युवक के हाथ पर झपट्टा मारकर मोबाइल छीनकर ले गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है।

पुलिस के अनुसार कृष्ण विहार कॉलोनी निवासी राहुल कुमार ने मामला दर्ज करवाया कि वह श्रीराम सर्विस सेंटर के पास खड़ा था इसी दौरान स्कूटी सवार बदमाश आया और उसके हाथ पर झपट्टा मारकर मोबाइल छीनकर ले गया। इस अप्रत्याशित घटना में पीडित कुछ समझ पाता तब तक बदमाश तेज गति से स्कूटी चलाकर गलियों में ओझल हो गया। घटना 17 मई की रात करीब सवा आठ बजे की है। पुलिस ने मामला दर्ज कर घटना स्थल और उसके आस-पास के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।

आरयूएचएस मेडिकल ऑफिसर परीक्षा 2024 में उठी पारदर्शिता की मांग

जयपुर। राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित मेडिकल ऑफिसर परीक्षा 2024 के परिणामों को लेकर पारदर्शिता पर सवाल खड़े हो रहे हैं। विश्वविद्यालय ने अभ्यर्थियों को केवल व्यक्तिगत परिणाम उपलब्ध कराए गए हैं, लेकिन संयुक्त मेरिट सूची रैंक और प्राप्तांक अब तक प्रकाशित नहीं की गई है।

यूनाइटेड डॉक्टर्स फ्रंट के प्रदेशाध्यक्ष डॉ. भरत पारीक ने कहा कि यूडीएफ की ओर से यह स्पष्ट और न्यायसंगत मांग की जाती है कि आरयूएचएस की ओर से परीक्षा में सम्मिलित समस्त अभ्यर्थियों की संयुक्त मेरिट लिस्ट (रैंक एवं अंक सहित) शीघ्र प्रकाशित की जाए, जिससे चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता, निष्पक्षता और उत्तरदायित्व स्थापित हो। उन्होंने कहा कि आरयूएचएस की ओर से संयुक्त मेरिट सूची का प्रकाशन नहीं करना अभ्यर्थियों में भ्रम, आशंका और असंतोष को जन्म दे रहा है। चयन प्रक्रिया की विश्वसनीयता एवं निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि विश्वविद्यालय सभी अभ्यर्थियों की मेरिट सूची सार्वजनिक करे। पारीक ने कहा कि हम राजस्थान सरकार, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग तथा प्रशासन से अपील करते हैं कि सभी अभ्यर्थियों की अपेक्षाओं एवं अधिकारों का सम्मान करते हुए इस संबंध में शीघ्र निर्णय लें।

रोजगार सहायता शिविर में हजारों युवाओं के सुनहरे भविष्य की राह हुई प्रशस्त

जयपुर। उप क्षेत्रीय रोजगार कार्यालय जयपुर के तत्वावधान में गुरुवार को बनीपार्क स्थित राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बनीपार्क जयपुर में कैरियर मार्गदर्शन एवं रोजगार सहायता

- 1 हजार 327 युवा आशार्थियों का हुआ प्राथमिक चयन, 97 को मिलेगा प्रशिक्षण
- शासन सचिव डॉ. समित शर्मा ने बतौर मुख्य अतिथि की कार्यक्रम में शिरकत

शिविर का आयोजन किया गया। कौशल, रोजगार एवं उद्यिमता विभाग डॉ. समित शर्मा ने दीप प्रज्वलित कर रोजगार सहायता शिविर का उद्घाटन किया।

उप क्षेत्रीय रोजगार कार्यालय जयपुर की ओर से गुरुवार को बनीपार्क स्थित राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बनीपार्क जयपुर में कैरियर मार्गदर्शन एवं रोजगार सहायता शिविर का आयोजन किया गया।

उप प्रादेशिक रोजगार कार्यालय जयपुर की उप निदेशक नवरेखा ने बताया कि रोजगार सहायता शिविर में 1 हजार 904 आशार्थियों ने भाग लिया। उक्त रोजगार सहायता शिविर में निर्माण, लॉजिस्टिक, होटल, बैंकिंग, मेडिकल, सूचना प्रौद्योगिकी, फॉर्मा, सिक्योरिटी, कॉल सेंटर, बीमा आदि क्षेत्रों से संबंधित 30 निजी नियोजकों ने मौके पर ही 1 हजार 327 युवा आशार्थियों का प्राथमिक चयन किया एवं प्रशिक्षण हेतु 97 आशार्थियों का चयन किया गया।

इस प्रकार उक्त आयोजन में कुल 1 हजार 424 आशार्थी लाभान्वित हुए। इस मौके पर अतिथियों द्वारा 10 नवनियुक्त कार्मिकों को नियुक्ति पत्र प्रदान किये गये तथा रोजगार के अवसर प्रदान करने वाले 5 निजी नियोजकों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. समित शर्मा ने निजी क्षेत्र के नियोजकों को एवं उपस्थित सभी बेरोजगार आशार्थियों को जीवन में मन को शांत एवं एकाग्रचित रखते हुए निरंतर आगे बढते रहने का संदेश प्रदान किया तथा तन से अधिक मन की शक्ति का महत्व बताया।

उन्होंने बताया कि राज्य सरकार युवाओं को अधिक से अधिक रोजगार से जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है।

हाल ही की बजट घोषणा में रोजगार मेलों का आयोजन कर आगामी वर्ष में 1 लाख 50 हजार युवाओं को निजी क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध करवाया जाना प्रस्तावित है, इस उद्देश्य से उप प्रादेशिक रोजगार कार्यालय जयपुर द्वारा रोजगार सहायता शिविर का आयोजन कर निजी क्षेत्र में उपलब्ध रोजगार के अवसरों का लाभ बेरोजगार युवाओं को प्रदान किया गया।

उक्त आयोजन के उक्त आयोजन के विशिष्ट अतिथि रोजगार विभाग के निदेशक, श्री धर्मपाल मीणा ने बताया कि विभाग द्वारा मुख्यमंत्री युवा संबल योजना के अंतर्गत शिक्षित बेरोजगार आशार्थियों को प्रति माह बेरोजगारी भत्ता राशि के रूप में भुगतान कर आर्थिक संबल प्रदान किया जा रहा है, एवं राज्य सरकार के कौशल,रोजगार एवं उद्यिमता विभाग की वार्षिक कार्य-योजना के अन्तर्गत संपूर्ण प्रदेश में रोजगार सहायता शिविरों का आयोजन कर विभिन्न क्षेत्रों में बेरोजगार आशार्थियों का प्राथमिक चयन करवाया जाता है।

इस अवसर पर विभाग के संयुक्त निदेशक, जगदीश निर्वाण, श्यामलाल साटोलिया, आईटीआई विभाग के संयुक्त निदेशक, नीरज माथुर, एवं उपनिदेशक, संदीप नाग उपस्थित रहे।

इस अवसर पर स्वरोजगार की जानकारी एवं कैरियर मार्गदर्शन भी प्रदान किया गया। इस मौके पर आईटीआई, आरएसएलडीसी, एनसीएस फॉर एसटी,एससी के अधिकारी एवं प्रतिनिधि ने रोजगार सहायता शिविर में भाग ले कर अपनी विभागीय योजनाओं की जानकारी प्रदान कीं।

जरूरतमंद महिलाओं व किशोरियों को मिलेगा मुफ्त सैनिटरी पैड

जयपुर। महिला स्वास्थ्य और मासिक धर्म स्वच्छता को लेकर एक महत्वपूर्ण सामाजिक पहल की जा रही है। नृत्यम सोशल ऑर्गेनाइजेशन जयपुर और रेज कॉर्पोरेशन के संयुक्त प्रयास से जरूरतमंद महिलाओं और किशोरियों को मुफ्त सैनिटरी पैड वितरित किए जाएंगे। इस अभियान का उद्देश्य न केवल महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से बचाना है, बल्कि समाज में स्वच्छता और मासिक धर्म से जुड़ी भ्रांतियों को भी दूर करना है।

नृत्यम की निदेशक काजल सैनी ने बताया कि अभियान के तहत हर महीने सी विंग्स एनियन सैनिटरी पैड जरूरतमंद महिलाओं और बच्चियों को निशुल्क प्रदान किए जाएंगे। पहला वितरण कार्यक्रम 25 मई सुबह 10 बजे आश्रय वेलफेयर सोसाइटी परिसर में आयोजित किया जाएगा। नेशनल ब्यूटी एसोसिएशन की फाउंडर नवरत्न सैनी ने कहा कि स्वस्थ महिला, सशक्त समाज का आधार होती है। यह पहल महिलाओं को आत्मनिर्भर और जागरूक बनाने की दिशा में एक मजबूत कदम है। आयोजक संस्थाओं ने बताया कि इस अभियान को जयपुर के विभिन्न क्षेत्रों में विस्तारित किया जाएगा, जहां स्थानीय कैम्प के माध्यम से स्वास्थ्य जागरूकता और सैनिटरी पैड का वितरण किया जाएगा। इस अभियान में नेशनल ब्यूटी एसोसिएशन के फाउंडर नवरत्न सैनी, उपमहामंत्री अश्विनी लाखन, तथा अन्य प्रमुख सहयोगी अनिल मूंड, अरविन्द सैनी, सत्यनारायण माली और मुकेश सैनी विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे।

सार-समाचार

गोल्डन वॉयस ऑफ़ राजस्थान का ग्रैंड फिनाले 25 को

जयपुर। गोल्डन वॉयस ऑफ़ राजस्थान का ग्रांड फिनाले रविवार 25 मई शाम 6:00 बजे जय क्लब में होगा इसकी एंट्री केवल पास द्वारा होगी कार्यक्रम में इंडियन आइडल फेम के सुरेंद्र कुमार मुख्य आकर्षण रहेंगे। मुकाबला शाम 7:00 बजे से 9:30 बजे तक चलेगा इसमें जूनियर सीनियर व युवा वर्ग की श्रेणी में मुकाबले होंगे ऑडिशन मे कड़े मुकाबले के बाद 21 गायक को फाइनल के लिए चुना गया है। आज कलाकारों द्वारा किए जा रहे रियाज को मशहूर डांगर बंधु के साथ गौरव जोशी ,अभिषेक माथुर, संजीव जैन जय क्लब सचिव मनोज दासोत संयुक्त सचिव खेल संजय अजमेरा, राजेंद्र जाजपुरिया, रेखा परिहार ने कलाकारों को गाने के गुण समझाएं। कार्यक्रम के मुख्य निर्णायक केपी सक्सेना, संजीव जैन, गीतिका चतुर्वेदी, राजेंद्र जाजपुरिया, राजीव कुमार, अभिषेक माथुर, रेखा परिहार, भारत जोशी व गौरव जोशी होंगे। रामरतन शर्मा, विजेता सिंह, प्रियंका सिंह व मनोज सक्सेना भी आज रिहर्सल के दौरान मौजूद रहे।

काशवी शर्मा को कला में 99 प्रतिशत

जयपुर। काशवी शर्मा पुत्री गौरी शंकर शर्मा ने कला12वीं में तीन विषयों में डिक्टेशन के साथ 99 फीसदी अंक प्राप्त कर अपने परिजनों का नाम रोशन किया। अपनी बेटी की सफलता पर माता-पिता व परिजनों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी।

कृष्ण दीक्षित व केशव लक्षकार को 88.80 प्रतिशत

जयपुर। कृष्ण दीक्षित पुत्र राकेश दीक्षित ने आर्ट्स 12वीं में 88.80 प्रतिशत अंक तीन विषयों में डिक्टेशन के साथ उतीर्ण करने का श्रेय सनराइज स्कूल मुरलीपुरा के स्टाफ को दिया। सनराइज स्कूल मुरलीपुरा के ही छात्र केशव लक्ष्कार ने कॉमर्स में 89 फीसदी अंक प्राप्त कर अपनी स्कूल व परिवार का नाम रोशन किया।

रजत यादव को साइंस में 90 प्रतिशत

जयपुर। रजत यादव पुत्र रामेश्वर यादव ने साइंस 12वीं में तीन विषयों में डिक्टेशन के साथ 90 फीसदी अंक प्राप्त कर अपने परिजनों का नाम रोशन किया। रजत की मां एक ग्रहणी है व पिता प्राइवेट बस में कंडक्टर का कार्य करते हैं। अपने बेटे की सफलता पर माता-पिता व परिजनों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। रजत ने अपनी सफलता का श्रेय परिजनों व स्कूल स्टाफ को दिया।

निम्स यूनिवर्सिटी में जॉब फेयर

जयपुर। एनआईएमएस विश्वविद्यालय, जो राजस्थान का एक प्रमुख शैक्षिक संस्थान है, ने राजस्थान का सबसे बड़ा जॉब फेयर 2025 सफलतापूर्वक आयोजित किया, जिससे छात्रों और नौकरी चाहने वालों के लिये अनमोल अवसर पैदा हुए। यह आयोजन निम्स विवि में आयोजित किया गया, जिसमें 100 से अधिका प्रमुख कंपनियों ने भाग लिया और स्नातक छात्रों के लिये सक्रिय रुप से भर्ती की। 16 और 17 मई को दो दिनों तक आयोजित इस जॉब फेयर में कई प्रमुख कंपनियां ने भाग लिया। वहीं विभिन्न क्षेत्रों के एक हजार से अधिक अंतिम वर्ष और पास आउट छात्रों ने इस मेले में भाग लिया, जिससे यह स्नातक के छात्रों के लिये गेम चेंजर साबित हुआ। इस मेले में पांच सौ से अधिक छात्रों ने राजस्थान के विभिन्न हिस्सों से नौकरी के पेशकश प्राप्त की।

दुपहिया वाहन चुराने वाला चढा पुलिस के हत्थे

जयपुर। जामडोली थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए एक शातिर वाहन चोर को गिरफ्तार कर उसके पास से चोरी की दो बाइक भी बरामद की है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है। थानाधिकारी सतीश भारद्वाज ने दुपहिया वाहन चुराने वाले शातिर वाहन चोर ओमप्रकाश मीणा निवासी जामडोली जयपुर को गिरफ्तार किया है। जिसके पास से दो चुराए गए दुपहिया वाहन भी जब्त किया गया है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

युवक का अपहरण करने वाले गिरफ्तार

जयपुर। मालवीय नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 21 मई को मालवीय नगर सेक्टर एक से विनीत केवट का अपहरण मामले में तीन व्यक्तियों को हिण्डौन जिला करौली से गिरफ्तार किया है और साथ ही वारदात में प्रयुक्त चौपहिया वाहन भी जब्त किया गया है। पुलिस की प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया कि रूपयों की लेनदेन को लेकर वारदात को अंजाम दिया गया था। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही ह। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व तेजस्वनी गौतम ने बताया कि मालवीय नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 21 मई को मालवीय नगर सेक्टर एक से विनीत केवट निवासी करौली के अपहरण मामले में यश शांडिल्य, रानू धाकड और पंकज चौधरी को हिंडौन करौली से गिरफ्तार किया है और तीनों ही आरोपित करौली जिले के रहने वाले है। जांच पड़ताल में सामने आया कि अपहृत विनीत केवट व यश शांडिल्य के बीच पैसे के लेनदेन का विवाद था। इसके बाद विनीत केवट हिंडौन से आगरा जाकर बस गया। इसके जयपुर आने की सूचना यश शांडिल्य को मिली तो उसने अपने साथियों को लेकर जयपुर में सेक्टर 01 मालवीय नगर से विनीत केवट को जबरन उठा कर ले गये। तीनों आरोपियों को न्यायालय में गुरुवार को पेश किया गया। जिन्हे -न्यायालय ने केंद्रीय कारागार में भिजवाया।

World Turtle Day: Shelled Wonders Need Saving

Celebrated every year on May 23, World Turtle Day raises awareness about the protection of turtles and tortoises and their rapidly disappearing habitats. Founded by the American Tortoise Rescue in 2000, the day encourages conservation efforts, responsible pet care, and habitat preservation. With many species threatened by pollution, poaching, and climate change, turtles play a vital role in maintaining marine and terrestrial ecosystems. From beach cleanups to awareness drives, people worldwide participate in efforts to protect these ancient reptiles. This World Turtle Day, let's pledge to safeguard these slow-moving yet essential guardians of our planet's biodiversity.

#J'ADORE

Scarlet Statement

Shannon K stuns in custom Red Gown by Josh Birch Jones at Mission: Impossible 8 Cannes Premiere!

• Sebetina Reddy

International singer and actress, Shannon K, turned heads at the *Mission: Impossible 8* premiere at the Cannes Film Festival, dazzling in a breathtaking custom red gown by award-winning British designer, Josh Birch Jones.

The show-stopping couture piece, flown in from London, showcased Birch Jones' signature blend of structured elegance and modern glamour. As one of the youngest and most celebrated members of the British Fashion Council, Birch Jones collaborated with Shannon to create a look that perfectly embodied her bold yet sophisticated red-carpet style. The vibrant gown, tailored to perfection, earned widespread praise for its timeless silhouette and statement colour.

"Cannes always feels magical, but this year was even more special," said Shannon. "Wearing Josh Birch Jones' incredible red gown made me feel powerful and elegant. I'm grateful to be part of both the fashion and film conversations happening on such an important global stage."

Earlier in the day, Shannon also made a stylish appearance at the Vanity Fair Luncheon, continuing to solidify her status as a rising force in international entertainment.

In addition to her red-carpet appearances, Shannon will be joining the cast and crew of 'Tanvi The Great,' the directorial debut of legendary actor Anupam Kher. She lent her voice to a poignant track in the film, composed by Oscar-winning music director M.M. Keeravani (RRR), marking a significant creative milestone in her cross-cultural career.

From performing in Coachella this year to iconic premieres to cinematic collaborations, Shannon K continues to make her mark with grace, talent, and global appeal making her father, Kumar Sanu, proud.

The Key Is Understanding Kashmir

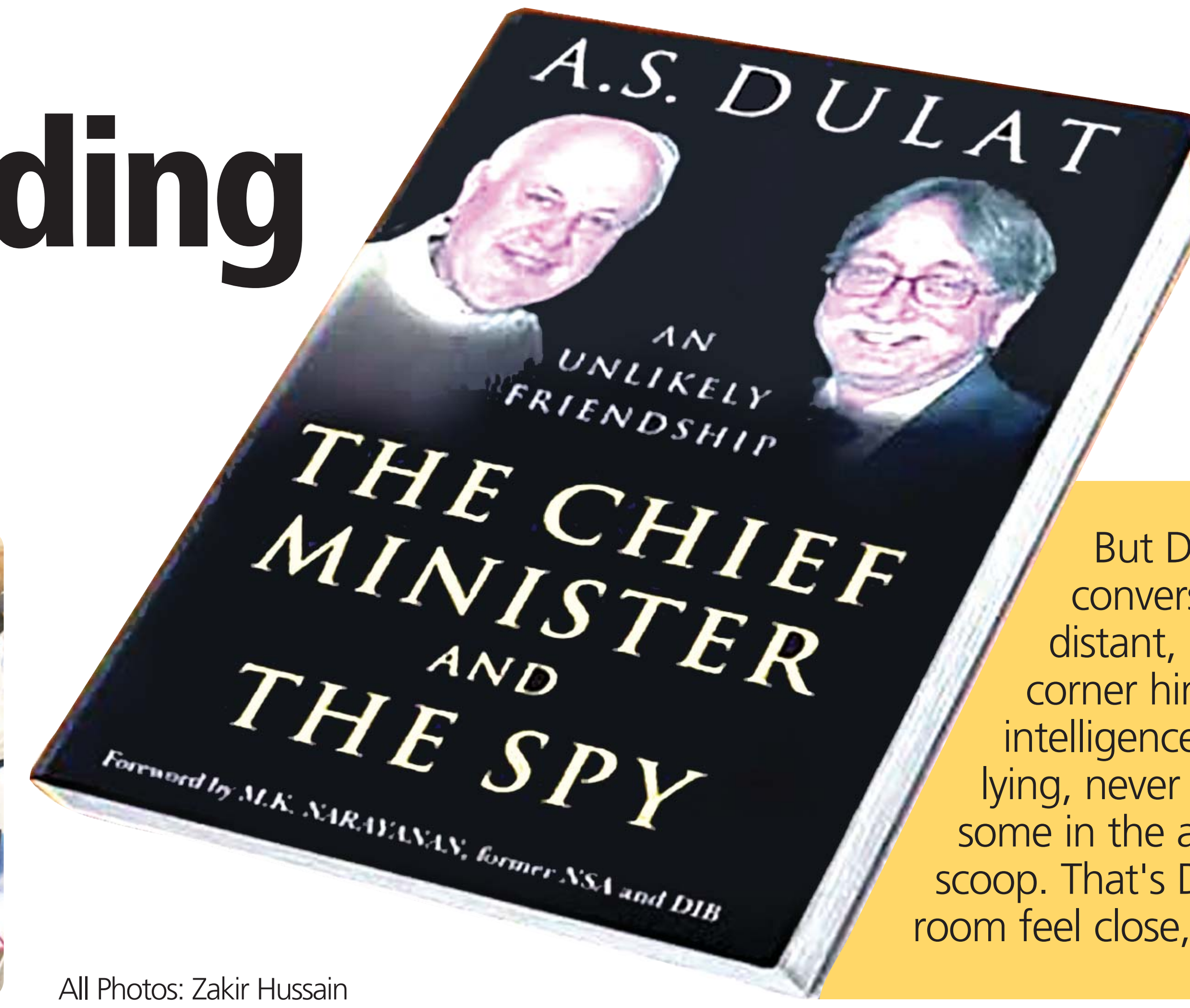

But Dulat is a spy at the core, always has been. Throughout the conversation, he sat with half-closed eyes, as if mulling over something distant, possibly unrelated. And yet, he missed nothing. People tried to corner him with direct questions, about militancy, Farooq Abdullah, and intelligence lapses, but he parried each one with grace and ambiguity. Never lying, never revealing. It was a performance honed over decades, and it left some in the audience unsatisfied, especially those who had come hoping for a scoop. That's Dulat for you, generous with words, stingy with truth. He made the room feel close, even as he held the real story far, far away.

All Photos: Zakir Hussain

Shailaza Singh
Published Author, Poet and a YouTuber

It was an evening thick with memory, candour, and unanswered questions as A.S. Dulat, former RAW chief, Kashmir whisperer, and now a three-time author, arrived in Jaipur to discuss his latest book, *The Chief Minister and The Spy*. Seated alongside Rajesh Sharma, Editor, Rashtradoot, and Ajay Singha, Senior Advisor, FICCI, Dulat took the audience on a journey through Kashmir's shadowed corridors, interlaced with loyalty, betrayal, and a peculiar intimacy with one man: Dr. Farooq Abdullah.

This was no dry policy seminar. This was Dulat unplugged, reminiscing, revealing, refusing to spin.

Farooq Was Delhi's Man, And Yet, Always Let Down by Delhi

Dulat's loyalty to Farooq Abdullah is not disguised; it is at the very heart of his book. "He was always Delhi's man," Dulat said, "and yet Delhi never gave him his due." From his anointment in 1981 as Sheikh Abdullah's successor, Farooq positioned himself as the bridge between Srinagar and New Delhi. "But Delhi never saw the value," Dulat laments. "They wasted him." Through the 1980s and '90s, Dr. Abdullah was the face of moderation in Kashmir, a man willing to work with the Centre, to keep the state within the Union's fold. And yet, Delhi treated him with suspicion. "He should have been our Foreign Minister. Hell, he could have been President. Instead, he was repeatedly sidelined."

Dulat's bitterness is personal. He wasn't just a spy watching from the wings. He was Farooq's handler. His friend. His sounding board. The man to whom Farooq once said, "Don't lie to Delhi. But don't lie for Delhi either."

The Jagmohan Betrayal and The 1990 Breakpoint

One moment remains etched in Dulat's memory, January 1990. "Farooq resigned the day Jagmohan was reappointed Governor," Dulat recalls. "He saw it as betrayal. Delhi had promised him Jagmohan wouldn't return. George Fernandes had even assured him."

When Jagmohan was reimposed, Farooq knew what was coming. So did Dulat.

"By then, I was branded as Farooq's man. I left Kashmir soon after. Booted out, to be blunt." He chuckles at the memory but the bitterness is palpable. "And the winter of 1989-90? Horrific. Militancy had broken out. The Valley was on fire."

A Relationship Beyond Politics

If the book is about espionage and power, it is also deeply about friendship. Dulat does not hide his affection for Farooq. "He's not just a politician. He's a doctor. He's a son of Jaipur. I still call him when I'm worried about my blood pressure."

There is a recurring note of warmth, almost romantic nostalgia. Dulat insists that Farooq Abdullah is "one of the tallest leaders in the country," perhaps even 'the world.'

Is this exaggeration? Perhaps. But for a man who has seen prime ministers up close, from Atal Bihari Vajpayee to Narasimha Rao, Dulat's praise doesn't come cheap.

"Farooq was sharp. Shrewd. He played the game. But he never betrayed India. Not once."

On Article 370: "The Hurt Wasn't the Law. It Was the Humiliation."

Much of the post-publication buzz around *The Chief Minister and The Spy* has come from Dulat's remarks on Article 370. Some media headlines interpreted his words as suggesting that Farooq might have supported the abrogation if taken into confidence.

Dulat is quick to correct this; "Farooq knew 370 would go eventually. The BJP had said it clearly.

> What lingered in the room long after A.S. Dulat left wasn't what he said, it was what he didn't. The silences. The careful deflections. The understated mastery of saying just enough to stay interesting, but never dangerous. That, in many ways, is the hallmark of a seasoned intelligence man, but in a public forum, especially in front of a curious, educated audience, it created unease. There were people in that room who had lived through the exodus of Kashmiri Pandits.

That wasn't the hurt. The hurt was that no one spoke to him. That he, a lifelong supporter of the Indian state, was detained without a word."

He goes further. "Even his daughter and sister were picked up for a night. That humiliation? That's what cut deep."

He didn't raise his voice. He didn't plead. Just said, quietly, that Delhi always does what it wants, and Kashmiris, well, they're left to feel whatever's left behind.

Always a Spy, even in a Book Launch

But Dulat is a spy at the core, always has been. Throughout the conversation, he sat with half-closed eyes, as if mulling over something distant, possibly unrelated. And yet, he missed nothing. People tried to corner him with direct questions, about militancy, Farooq Abdullah, and intelligence lapses, but he parried each one with grace and ambiguity. Never lying, never revealing. It was a performance honed over decades, and it left some in the audience unsatisfied, especially those who had come hoping for a scoop. That's Dulat for you, generous with words, stingy with truth. He made the room feel close, even as he held the real story far, far away.

The Ghost of Trust: What Dulat Never Said Aloud

#A. S. DULAT

What lingered in the room long after A.S. Dulat left wasn't what he said, it was what he didn't. The silences. The careful deflections. The understated mastery of saying just enough to stay interesting, but never dangerous. That, in many ways, is the hallmark of a seasoned intelligence man, but in a public forum, especially in front of a curious, educated audience, it created unease.

There were people in that room who had lived through the exodus of Kashmiri Pandits. Who had watched the Valley erupt in the '90s. Who had buried friends, field reports, and headlines. They came looking for answers, maybe not full confessions, but at least emotional resonance. Instead, they got the steady, inscrutable poise of a man

who had walked through fire with both Delhi and Srinagar and learned to never flinch. When asked about intelligence failures, even recent ones, Dulat offered truths that were broadly correct, but clinically detached. He name-checked Mossad, 9/11, Hamas. He spoke of structural lapses in security worldwide, never quite zeroing in on India's own blind spots. It wasn't dishonesty. It was discipline. And it made people uncomfortable.

There is a question at the heart of Dulat's presence, one he never answered directly: What do we owe the truth, when the truth is wrapped in national interest? He didn't betray the country that trained him, but neither did he serve the full hunger of the citizens who sat before him. His loyalty is still, it seems, to silence.

And perhaps, in that, lies the real scoop, not what Dulat revealed, but what he proved: that in the world of intelligence, even after retirement, the truth is never free. It is rationed, coded, and cloaked. And men like Dulat are not here to tell you what happened. They are here to make you realise you'll never quite know.

Restraint as Power: Why Dulat's Silence Still Matters

And yet, for all the frustration his silences provoke, there's another way to look at Dulat's evasions. Not as cowardice. Not as indifference. But as a form of practiced loyalty, not to governments, but to a deeper idea of continuity.

In Kashmir, where betrayal is the currency of politics, restraint is often more powerful than rhetoric. Dulat, more than anyone else, understands that words in the wrong hands can ignite fires that take decades to put out. He's seen it happen when casual promises by Delhi went unkept, when whispered threats were misinterpreted as policy, when one public misstep derailed years of quiet backchannel diplomacy. Maybe that's why he speaks as if every sentence still has consequences. Farooq Abdullah trusted him, not because Dulat was loud, but because he wasn't. Because in a state crawling with microphones and egos, Dulat never tried to outshine the people he worked with. He stayed in the shadows, listening, facilitating, witnessing. That is the job of a spy. But in Kashmir, it became something more: a delicate art of holding the fabric together, even when it was already torn. So, while his refusal to 'tell all' may disappoint a journalist, a historian, or even a grieving citizen, for Kashmir itself, perhaps that discretion was necessary. Maybe, still is.

> Because in a state crawling with microphones and egos, Dulat never tried to outshine the people he worked with. He stayed in the shadows, listening, facilitating, witnessing. That is the job of a spy. But in Kashmir, it became something more: a delicate art of holding the fabric together, even when it was already torn. So, while his refusal to 'tell all' may disappoint a journalist, a historian, or even a grieving citizen, for Kashmir itself, perhaps that discretion was necessary.

Because in the Valley, the ones who shout rarely last. But the ones who whisper, endure.

"You Can't Fix Kashmir Without Understanding It"

The discussion wasn't limited to Farooq Abdullah. Dulat fielded questions on intelligence failures, integration, and identity.

Why does he feel such empathy for Kashmir? "Maybe because I was taught to side with the underdog," he says. "Maybe it's Sikh values. Maybe it's just decency."

He brushes off the criticism that Kashmir's identity is being made exceptional. "Every state has identity. But Kashmir is different. It's the only Muslim-majority state. It's where the idea of India is tested most."

On intelligence failures, Dulat is blunt: "Every time something goes wrong, it's called an intelligence failure. Whether it's 9/11 or Hamas. But we don't talk about how many failures we prevent."

Why Jaipur Still Matters

The event also had a local, personal flavour. Dulat spoke at length about his early IPS days in Jaipur, serving under Ajay Singha's father and living in Sultan Singh ji's home. "They treated me and my wife like family," he recalled. "Those were golden years."

Even Dr. Farooq's medical college years in Jaipur came up. "He hasn't forgotten. Jaipur is part of who he is."

And that perhaps is the thread of Dulat's narrative, past and present woven together, people remembered not just for their politics but for their kindness, their humanity, their contradictions.

Delhi, Always Distrustful

Why did Delhi never trust the Abdullahs? Dulat offers layered answers.

Sheikh Abdullah's long jail stints, his flirtations with independence, and his alleged links with Americans and Chinese seeded a paranoia that never quite left Nehru's successors. Farooq, despite his loyalty, inherited that suspicion.

"Delhi wanted him to follow. But Farooq was his own man. And Delhi doesn't like independent men."

"No, I Never Played Games With Farooq. He Was Too Big."

One of the most poignant moments came when Dulat was asked if he had played a double game, being Farooq's friend and Delhi's informant. "No," he said firmly. "You couldn't play with Farooq. He was too big. He knew I reported back. But he trusted me anyway. That's the kind of man he was."

The Legacy

So, what is Farooq Abdullah's legacy? Dulat doesn't hesitate. "He was never a separatist. Never asked for independence. Only autonomy. Only dignity. And he always believed that Kashmir belongs with India, if India treats it with respect."

That, perhaps, is the heart of the book. Not just about a chief minister and a spy. But about a relationship, tested, bruised, but never broken. And about a valley that still waits to be understood, not just administered.

rajeshsharma1049@gmail.com

THE WALL

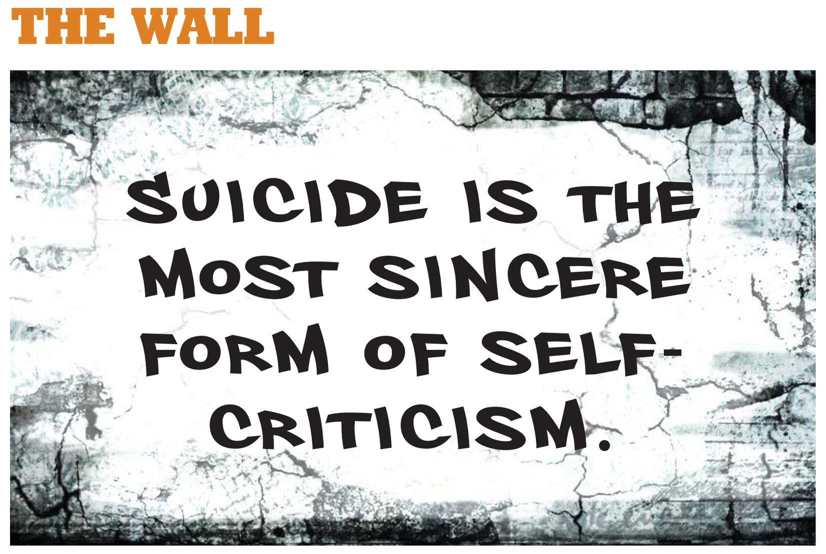

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

12वीं विज्ञान, वाणिज्य, कला वर्ग एवं वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा के परीक्षा परिणाम जारी

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने उत्तीर्ण विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों और शिक्षकों को बधाई दी

अजमेर, (कासं)। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने गुरुवार को नागौर जिला कलेक्ट्रेट से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा आयोजित उच्च माध्यमिक विज्ञान, वाणिज्य, कला वर्ग एवं वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा-2025 के परीक्षा परिणाम जारी किए।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा आयोजित उच्च माध्यमिक परीक्षा के परिणाम जारी किए गये।

- **विज्ञान वर्ग की परीक्षा का परिणाम 98.43 प्रतिशत, वाणिज्य वर्ग का 99.07, कला वर्ग का 97.78 एवं वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा का परिणाम 97.76 प्रतिशत रहा**

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने परीक्षा में उत्तीर्ण हुए विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों और शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि यह परिणाम शिक्षकों के मार्गदर्शन और विद्यार्थियों की मेहनत का सशक्त प्रमाण है। उन्होंने विश्वास जताया कि ये विद्यार्थी भविष्य में भी राज्य और देश का नाम रोशन करेंगे। शिक्षा मंत्री ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को विशेष बधाई दी।

संभागीय आयुक्त एवं बोर्ड प्रशासक महेश चंद्र शर्मा ने बताया कि परीक्षा का आयोजन सफलता पूर्वक एवं पारदर्शी तरीके से सम्पन्न हुआ। उन्होंने परीक्षा में सफल हुए विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों और विद्यालय स्टाफ को शुभकामनाएं दी एवं बोर्ड टीम को कुशल संचालन के लिए धन्यवाद दिया। शर्मा ने बताया कि बोर्ड की उच्च माध्यमिक विज्ञान, वाणिज्य के साथ साथ कला वर्ग परीक्षा 2025 एवं वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा 2025 का परीक्षा परिणाम गुरूवार शाम को घोषित किया गया है। विज्ञान वर्ग की परीक्षा का परिणाम 98.43 प्रतिशत, वाणिज्य वर्ग का परीक्षा का परिणाम 99.07 प्रतिशत, कला वर्ग का परीक्षा का परिणाम 97.78 प्रतिशत एवं वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा का परिणाम 97.76 प्रतिशत रहा।

उन्होंने बताया कि उच्च माध्यमिक विज्ञान वर्ग की परीक्षा में 2 लाख 73 हजार 915 परीक्षार्थी पंजीकृत थे। इसमें से 2 लाख 72 हजार 138 परीक्षार्थी परीक्षा में प्रविष्ट हुए। उच्च माध्यमिक विज्ञान वर्ग की परीक्षा का परिणाम 98.43 प्रतिशत रहा। इसमें से छात्रों का उत्तीर्णता प्रतिशत 98.07 तथा छात्राओं का उत्तीर्णता प्रतिशत 99.02 रहा। उच्च माध्यमिक विज्ञान वर्ग की परीक्षा में एक लाख 69 हजार 306 छात्रों में से एक लाख 45 हजार 102 छात्र और एक लाख 2 हजार 832 छात्राओं में से 96 हजार 216 छात्राएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई है। उन्होंने बताया कि उच्च माध्यमिक वाणिज्य वर्ग की परीक्षा में कुल 28 हजार 248 परीक्षार्थी पंजीकृत थे। इसमें से 28 हजार 10 परीक्षार्थी परीक्षा में प्रविष्ट हुए। उच्च माध्यमिक वाणिज्य वर्ग की परीक्षा का परिणाम 99.07 प्रतिशत रहा। इसमें से छात्रों का उत्तीर्णता प्रतिशत 98.97 तथा छात्राओं का उत्तीर्णता प्रतिशत 99.27 रहा। उच्च माध्यमिक वाणिज्य वर्ग की परीक्षा में 18 हजार 637 छात्रों मे से 13 हजार 689 छात्र और 9373 छात्राओं में से 8312 छात्राएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई है। उन्होंने बताया कि उच्च माध्यमिक कला वर्ग की परीक्षा में 5 लाख 87 हजार 444 परीक्षार्थी पंजीकृत थे। इसमें से 5 लाख 78 हजार 164 परीक्षार्थी परीक्षा में प्रविष्ट हुए। उच्च माध्यमिक कला वर्ग की परीक्षा का परिणाम 97.78 प्रतिशत रहा। इसमें से छात्रों का उत्तीर्णता प्रतिशत 97.09 तथा छात्राओं का उत्तीर्णता प्रतिशत 98.42 रहा। उच्च माध्यमिक कला वर्ग की परीक्षा में 2 लाख 75 हजार 764 छात्रों में से एक लाख 64 हजार 9 छात्र और 3 लाख 2 हजार 400 छात्राओं में से 2 लाख 23 हजार 45 छात्राएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई है।

उन्होंने बताया कि इसी तरह वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा में 3907 परीक्षार्थी पंजीकृत थे। इसमें से 3847 परीक्षार्थी परीक्षा में प्रविष्ट हुए। वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा का परिणाम 97.76 प्रतिशत रहा। इसमें से छात्रों का उत्तीर्णता प्रतिशत 96.73 तथा छात्राओं का उत्तीर्णता प्रतिशत 98.68 रहा। वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा में 1806 छात्रों में से 882 छात्र और 2041 छात्राओं में से 1264 छात्राएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई है। इस अवसर पर राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड विशेषाधिकारी नीतू यादव, वित्तीय सलाहकार रश्मि बिस्सा, कर्मचारी संघ से अजय बंसल सहित अधिकारी एवं कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

सेप्टिक टैंक की सफाई करने के दौरान तीन मजदूरों की मौत

टैंक में कार्बन डाई ऑक्साइड बनने से तीनों अचेत हुये, तीनों ने कोई सुरक्षा उपकरण नहीं पहन रखे थे

बीकानेर, (निसं)। शहर के करणी औद्योगिक एरिया में वूलन मिल के सेप्टिक टैंक की सफाई के दौरान तीन मजदूरों की मौत हो गई। तीनों का सेप्टिक टैंक के अंदर दम घुट गया था। काफी देर तक टैंक के अंदर से आवाज नहीं आने पर अन्य साथी टैंक में उतरे। इसके बाद तीनों को बाहर निकालकर लेकर आए। अचेत हालत में पीबीएम हॉस्पिटल लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

- **तीनों का सेप्टिक टैंक के अंदर दम घुट गया था, काफी देर तक टैंक के अंदर से आवाज नहीं आने पर अन्य साथी टैंक में उतरे**
- **इसके बाद तीनों को बाहर निकालकर लेकर आए, अचेत हालत में पीबीएम हॉस्पिटल लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया**
- **भवानी वूलन टेक नामक कंपनी में सेप्टिक टैंक की सफाई करने के दौरान हादसा हुआ**

जानकारी के अनुसार मिल में ऊन बनाने के लिए उपयोग में आने वाले धागे धोने के लिए कई तरह के केमिकल यूज करते हैं। इसका पानी टैंक में जाता है। इस पानी को साफ करने के लिए तीन मजदूर शिवबाड़ी निवासी सागर, अनिल और गणेश करणी को बुलाया था। टैंक में सबसे पहले एक मजदूर उतरा था। भवानी वूलन टेक नामक कंपनी में सेप्टिक टैंक की सफाई करते हुए ये हादसा हुआ था। सुबह करीब दस बजे सेप्टिक टैंक की सफाई के लिए मजदूरों को बुलाया गया था। ये लोग सफाई करने उतरे। एक नीचे गया, लेकिन बाहर नहीं आया तो दूसरा मजदूर गया। इसके बाद तीसरा गया।

तीनों की ही अंदर से कोई आवाज नहीं आई। इसके बाद बाहर खड़े एक अन्य मजदूर ने मिल मालिक को सूचना दी। जिसके बाद तीनों को अचेतावस्था में बाहर निकला। पीबीएम अस्पताल ले गए थे, जहां डॉक्टर्स ने मृत घोषित कर दिया। सेप्टिक टैंक में उतरने से पहले कई तरह के सुरक्षा उपकरण पहनने होते हैं। जिन तीन मजदूरों को बाहर निकाला गया है, उन्होंने कोई सुरक्षा उपकरण नहीं पहने हुए थे। टैंक में कार्बन डाई ऑक्साइड बनने से तीनों अचेत हो गए थे।

बीकानेर के करणी इंडस्ट्रियल एरिया में तीन साल पहले भी चार मजदूरों की मौत हो गई थी। तब भी मजदूरों को पानी का टैंक साफ करने की कहकर बुलाया था और सेप्टिक टैंक में उतार दिया था। सेप्टिक टैंक में जहरीली गैस में दम घुटने से एक-एक कर चारों मजदूरों की मौत हो गई थी। टैंक की सफाई के लिए मजदूरों को कोई उपकरण देने के बजाय महज एक बाल्टी थमा दी थी।

हाजिरी पूरी करने के बीए बीएड की छात्रा से 10 हजार रुपये मांगे

बीकानेर, (निसं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने बीए बीएड चतुर्थ वर्ष की छात्रा से उसकी हाजरी पूरी करने के बदले 10 हजार रुपए की रिश्वत मांगने के आरोपी खाजूवाला एसडीपीजी कॉलेज के डायरेक्टर के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

- **खाजूवाला एसडीपीजी कॉलेज के डायरेक्टर के खिलाफ एसीबी में केस दर्ज**
- **आरोपी को भनक लगने और उसके सतर्क होने के कारण दो बार ट्रेप नहीं हो सका**

खाजूवाला में 12 केवाईडी निवासी भूपराम कुम्हार ने एसीबी को रिपोर्ट दी थी कि उसकी पुत्री रेणुबाला खाजूवाला के एसडीपीजी कॉलेज में बीए बीएड की चतुर्थ वर्ष की छात्रा है। उसने कॉलेज की पूरी फीस 27 हजार रुपए जमा करवा दी। परीक्षा के लिए उसने ऑनलाइन फार्म भरा जिसमें भूलवश एक विषय गलत भरा गया। वह 24 जनवरी, 2025 को अपने कॉलेज के डायरेक्टर दिलीप कुमार डेलू से विषय को ठीक करवाने, इंटरनल परीक्षा करवाने तथा लेसन की डायरी कॉलेज से प्राप्त करने के लिए मिली। डेलू ने उसे हाजरी पूरी नहीं होने की बात कही और इसके लिए 10 हजार रुपए मांगे। एसीबी के एसआई आनंद मिश्रा ने शिकायत का सत्यापन करवाया जिसमें 10 हजार रुपए रिश्वत मांगने की पुष्टि हुई। उसके बाद एसीबी ने ट्रेप का आयोजन किया, लेकिन, आरोपी को भनक लगने और उसके सतर्क होने के कारण दो बार ट्रेप नहीं हो सका। एसीबी की बीकानेर चौकी के एएसपी विनोद कुमार ने बताया कि क्योंकि रिश्वत मांगने की पुष्टि हो चुकी थी। इसलिए भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने रिपोर्ट तैयार कर जयपुर मुख्यालय जहां कॉलेज के डायरेक्टर के खिलाफ रिश्वत मांगने का मुकदमा दर्ज किया गया है। मामले की जांच डीवाईएसपी महेश श्रीमाली करेंगे।

हत्या के आरोपियों की पुलिस ने परेड निकाली

हत्या के दो आरोपियों को पुलिस पैदल ही मौके पर लेकर पहुंची। दोनों आरोपियों के पैर में चोट थी।

कोटा, (निसं)। जिले के कनवास कस्बे में 18 मई को एक बाइक के शोरूम में कुर्सी पर बैठने को लेकर विवाद में एक बदमाश ने युवक संदीप शर्मा की चाकू मारकर हत्या कर दी थी। इस मामले में गिरफ्तार आरोपी अतीक उर्फ आदिल और दीपक उर्फ दीपू का पुलिस ने गुरुवार को जुलूस निकाला। दोनों आरोपी पुलिस रिमांड पर है। ऐसे में पुलिस उन्हें सुबह थाने से घटनास्थल पर लेकर आई।

कोटा ग्रामीण एसपी सुजीत शंकर ने बताया कि आरोपियों से मौके की तस्दीक करवाने और घटनाक्रम का मौका नक्शा बनाने के लिए कार्रवाई की गई है। दोनों को चोट लगी हुई थी। इसीलिए उन्हें मौके पर पैदल ही ले जाया गया है। उन्होंने बताया कि सड़क पर रेंगते हुए अतीक चल रहा था क्योंकि उसके दोनों पैर टूटे हुए हैं। उनमें प्लास्टर चढ़ा हुआ है। दूसरी तरफ दीपू भी लंगड़ा कर चल रहा था। वह लाठी के सहारे चल रहा था। उसका एक पैर टूटा हुआ है जिसमें प्लास्टर बंधा हुआ है। भारी पुलिस जाप्ता और एसटीएफ टीम की सुरक्षा में उन्हें लेकर जाया जा रहा था। इस मामले में घटना वाली रात (18 मई) को आरोपी के घर पर बुलडोजर चलाया गया था। दूसरी तरफ पुलिस जब उसे पकड़ने पहुंची तब भागने की फिराक में दोनों चोटिल हो गए थे। थानाधिकारी श्यामाराम ने बताया कि आरोपी ने छुपने के लिए खुद के बाल कटवा लिए थे। साथ ही हुलिया बदल लिया था। पुलिस गिरफ्त में आने से बचने के लिए भागने पर ही उनको चोट लग गई। इससे दोनों के पैर में फ्रैक्चर भी आए हैं। आरोपी अतीक उर्फ आदिल के खिलाफ छह मुकदमे दर्ज हैं, जिनमें आर्म्स एक्ट, मारपीट, जानलेवा हमला, धोखाधड़ी और एनडीपीएस के मुकदमे हैं। वहीं दीपक के खिलाफ सट्टे के दो प्रकरण हैं। दोनों आदतन अपराधी हैं।

ऑनलाइन गेमिंग सट्टा लगाते चार गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। शहर के गोवर्धन विलास थाना पुलिस ने दुबाई में बैठकर बजरंगबुक ऑनलाइन गेमिंग के जरिये सट्टा खेलाने वाले चार आरोपियों को गिरफ्तार कर मौके से सट्टा उपकरण जब्त किए। दुबई में बैठ मुख्य आरोपी गेमिंग साईट चलाता था, जिसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने एलओसी जारी की है।

- **दुबाई में बैठकर बजरंगबुक ऑनलाइन गेमिंग गेमिंग साइट चलाता था मुख्य आरोपी, तलाश के लिए एलओसी जारी की**

जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल ने बताया कि अभियान के दौरान गोवर्धन विलास थाना क्षेत्र शिकारवाड़ी कॉलोनी में लेकविजन अपार्टमेंट के एक फ्लेट पर दबीश देकर बजरंग बुक ऑनलाइन गेमिंग वेबसाइट पर सट्टा लगाते कुलदीपसिंह पुत्र डूंगरसिंह कुम्पावत निवासी मैन रोड़ शिकारवाड़ी रेजेडेंसी अपार्टमेंट गोवर्धन विलास, मुकेश कुमार पुत्र टिंकुसिंह राजपूत निवासी जमशेदपुर टाटानगर पूर्वी सिंघयूम झारखंड, जयेश पुत्र सुखलाल रेगर निवासी देवपुरा थाना सदर राजनगर तथा निरजसिंह पुत्र शंकर चौधरी निवासी जाट मोहल्ला रेलमगरा को गिरफ्तार किया।

वहीं मौके से तीन लेपटॉप, चार पीसी सेटअप मय दो सीपीयू, 13 कंपनी के मोबाइल, 4 निजी मोबाइल, 27 एटीएम, 4 बैंक पासबुक, 8 चैक बुक 23 सीम कार्ड, वाईफाई राउटर व नकद 40 हजार रूपये जब्त किए। इस मामले में मुख्य आरोपी पुनित खतूरीरया उर्फ सोनू सिंधी पुत्र किशार सिंधी निवासी आलोक स्कूल के पास सवीना फरार है जिसकी तलाश की जा रही है। विदेश भागने की संभावना के लिए पुलिस ने सोनू की तलाश के लिए एलओसी जारी करवाई।

प्रकरण के अनुसार एक मई रात में सूचना मिलने पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गोपाल स्वरूप मेवाड़ा, पुलिस उप अधीक्षक सूर्यवीरसिंह के सुपरविजन में गोवर्धन विलास थानाधिकादी दिलिपसिंह झाला, डीओ कालूलाल एएसआई मय टीम ने शिकारवाड़ी कॉलोनी में लेकविजन अपार्टमेंट पहुंच दबीश दी, जहां चार युवक ऑनलाइन काम करते मिले, जो ऑनलाइन लेनेदेन कर बजरंगबुक पर काम करते दिखे।

पूछताछ करने पर सभी उक्त गेमिंग साइट मास्टरमाईंड पुनित उर्फ सोनी सिंधी द्वारा तेयार कर दुबई कार्यालय से संचालन वेबसाइट पर क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी सहित अन्य गेम पर ऑनलाइन सट्टा संचालन करने की जानकारी दी। इसके खेलने के लिए ग्राहक बजरंग बुक पर जुड़कर अपना आईडी प्राप्त कर खेलते हैं।

बजरी का परिवहन करते दो ट्रैक्टर-टॉली जब्त

पावटा, (निसं)। बजरी के अवैध खनन और परिवहन के मामले में प्रागपुरा थाना पुलिस ने दो ट्रैक्टर-टॉली जब्त कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जिला पुलिस अधीक्षक राजन दुष्यंत ने बताया कि प्रागपुरा थानाधिकारी किरण सिंह के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा बजरी के अवैध खनन और परिवहन करते दो ट्रैक्टर-टॉली जब्त कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। प्रागपुरा थानाधिकारी किरण सिंह ने बताया कि चालक सोहनलाल (28) पुत्र श्योराम निवासी अमाई तहसील व थाना कोटपुतली एवं राजाराम (30) पुत्र गोपीराम निवासी अमाई तहसील व थाना कोटपुतली को गिरफ्तार कर अवैध बजरी खनन एवं परिवहन का मुकदमा दर्ज किया है। ट्रैक्टर ट्रॉलियों में अवैध बजरी भरी होने पर जब्त कर थाने लाकर सुरक्षार्थ खड़ा करवाया दिया।

11 साल के बच्चे की हत्या, दो दिन से लापता था

गांव की पुरानी हवेली में चादर से ढका हुआ शव मिला

अलवर, (निसं)। दो दिन से लापता 11 साल के बच्चे का शव एक पुरानी हवेली में मिला। शव चादर से ढका था और आस-पास खून बिखरा था। परिजनों ने हत्या का आरोप लगाते हुए जांच सीबीआई से कराने की मांग की है।

- **परिजनों ने हत्या का आरोप लगाते हुए जांच सीबीआई से कराने की मांग की**

मामले की जानकारी पर बुधवार रात अलवर एसपी संजीव नैन, एएसपी डॉ. प्रियंका रघुवंशी और विधायक मांगेलाल मीणा मौके पर पहुंचे। बच्चे की हत्या से आक्रोशित ग्रामीण और परिजन धरने पर बैठ गए। जनप्रतिनिधियों के आश्वासन के बाद ग्रामीणों ने धरना समाप्त किया। इसके बाद शव को देर रात रैणी हॉस्पिटल की मोर्चरी में रखवाया गया। घटना अलवर के राजगढ़ थाना क्षेत्र के झांकड़ा गांव की है। जानकारी के अनुसार 11 साल का मयंक सिंह उर्फ कान्हा के पिता लाखन सिंह ने 20 मई को राजगढ़ थाने में बेटे की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इस बीच गांव की एक सूनी हवेली में शव मिला। हत्यारों की तलाश के लिए पुलिस की एक टीम गठित की गई है। ग्रामीणों ने जल्द से जल्द दोषियों की गिरफ्तारी की मांग की है।

परीक्षा में जांच के बहाने नाबालिग छात्र से अश्लील हरकत का आरोप

उदयपुर, (निसं)। मोहनलाल सुखाडयिा यूनिवर्सिटी के संघठक कॉमर्स कॉलेज में बाहर से परीक्षा देने आए एक नाबालिग छात्र की फैकल्टी द्वारा अश्लील हरकतें करने का मामला सामने आया है। छात्र के परिजनों ने इस संबंध में भूपालपुरा थाने में परिवाद दर्ज कराया। साथ ही कॉलेज डीन को शिकायत की।

- **परीक्षा देने गए स्टूडेंट ने फैकल्टी पर आरोप लगाया**

शिकायत में बताया कि कॉलेज में परीक्षा चेकिंग के नाम पर एक सर मुझे केबिन में ले गए और मेरे कपड़े उतारने को कहने लगे। जब मैंने मना किया तो चैकिंग के नाम पर मेरी पेंट खोल दी। फिर धमकी देने लगे कि मुझे चेक करने दो। नहीं तो चीटिंग का आरोप लगाकर करियर खराब कर दूंगा। छात्र ने रिपोर्ट में यह भी बताया कि अश्लील हरकतें करने लगे। छात्र को धमकाया कि किसी को बताया तो करियर खराब कर दूंगा। फैकल्टी की इस हरकत से नाबालिग बुरी तरह सहम गया। वह दो दिन मानसिक तनाव में रहा। वहीं घटना सामने आने के बाद कॉलेज छात्रों ने जमकर हंगामा किया।

नाबालिग ने हाल ही 12वीं की परीक्षा पास की है और वह सीए की तैयारी कर रहा है। कॉमर्स कॉलेज में 19 से 21 मई तक सीए फाउंडेशन की परीक्षा आयोजित हुई। यह पहले दिन 19 मई की घटना है जब छात्र के साथ एक टीचर ने चेकिंग के नाम पर अश्लील हरकतें की। दूसरे दिन 20 मई को छात्र की परीक्षा में गेप था। इसलिए वह कॉलेज नहीं गया। तीसरे दिन बुधवार को उसे वापस परीक्षा देने जाना था लेकिन वह जाने के लिए पेरेंट्स से मना करने लगा। पेरेंट्स ने जब उसके हाव-भाव देखकर कारण पूछा तो उसने पूरी घटना बताई। जिसके बाद पेरेंट्स ने कॉमर्स कॉलेज डीन को लिखित शिकायत की। साथ ही भूपालपुरा थाने में परिवाद दिया।

मामले में कॉलेज डीन बीएल वर्मा का कहना है कि छात्र के पेरेंट्स ने मुझे शिकायत की है। उन्होंने चेकिंग के बहाने हुई गलत हरकतों की आपबीती सुनाई। फैकल्टी कौन है इसकी जांच करवाकर उचित कार्रवाई की जाएगी।

अजमेर में दरगाह क्षेत्र से तीन बांग्लादेशी महिलाएं पकड़ी

अजमेर जिला पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स और सीआईडी जोन अजमेर ने तीन बांग्लादेशी महिलाओं को डिटेन किया।

अजमेर, (कासं)। केंद्र और राज्य सरकार के दिशा निर्देशों पर चलाए जा रहे अवैध नागरिकों के खिलाफ अभियान के तहत अजमेर जिला पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स और सीआईडी जोन अजमेर द्वारा संयुक्त कार्रवाई जारी है। पुलिस टीम ने दरगाह क्षेत्र से अवैध रूप से रह रही तीन बांग्लादेशी महिलाओं को डिटेन कर हिरासत में लिया है। अभियान के तहत अब तक 41 अवैध बांग्लादेशी नागरिकों को पकड़ा जा चुका है। पुलिस दस्तावेजों की जांच कर रही है।

पुलिस अधीक्षक वंदिता राणा के निर्देशन और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (शहर व मुख्यालय) हिमांशु जागिंड़ तथा वृत्ताधिकारी लक्ष्मण राम के नेतृत्व में गठित विशेष टीम ने दरगाह थाना क्षेत्र में सघन तलाशी अभियान चलाया। कार्रवाई के दौरान मुखबिरों से मिली सूचनाओं और तकनीकी साधनों के आधार पर दरगाह बाजार, नई सड़क, तारागढ़ की पहाड़ी, लंगरखाना गली आदि में संदिग्धों की तलाश की गई। इस दौरान तीन महिलाएं पन्ना बेगम उर्फ अमीना, समीरा और साहनी उर्फ समीना उर्फ रिहाना को पकड़ा गया। पकड़ी गई महिलाएं बांग्लादेश से बेनापोल और दिल्ली बॉर्डर के रास्ते भारत में अवैध रूप से दाखिल हुई थी। पूछताछ में महिलाओं ने बांग्लादेशी होने की पुष्टि की और बताया कि पश्चिम बंगाल के मैदनापुर होते हुए अजमेर पहुंची थी और दरगाह क्षेत्र में पिछले काफी समय से रह रही थी। इन महिलाओं को सिलावट मोहल्ला, दरगाह बाजार से दस्तयाब किया गया। पुलिस ने बताया कि प्रारंभिक पूछताछ में इनके भारत आने का उद्देश्य स्पष्ट नहीं हो पाया है और जांच जारी है।

पाक बॉर्डर के नजदीक संदिग्ध कबूतर मिला

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले के रायसिंहनगर के समीप समेजा थाना क्षेत्र के गांव सलेमपुरा में एक संदिग्ध कबूतर मिलने से हड़कंप मच गया। कबूतर लावारिस हालत में गांव के पास दिखाई दिया। ग्रामीणों ने जब उसे पकड़ा तो उसके पैर में छल्लेनुमा वस्तु बंधी हुई थी। शक होने पर ग्रामीणों ने तुरंत इसकी सूचना समेजा पुलिस थाने में दी। सूचना मिलते ही समेजा थाना प्रभारी कृष्ण कुमार मौके पर पहुंचे। पुलिस ने कबूतर को अपने कब्जे में ले लिया।

थाना प्रभारी ने बताया कि कबूतर के पैर में बंधी वस्तु संदिग्ध प्रतीत हो रही है। यह छल्ला किसी कोड या संदेश से जुड़ा हो सकता है। पुलिस ने कबूतर को वन विभाग के हवाले करने के लिए वन विभाग की टीम को सूचना दी गयी है। सुरक्षा एजेंसियों को भी इस मामले की जानकारी दे दी गई है। पुलिस ने बताया कि कबूतर की जांच के लिए विशेषज्ञों की मदद ली जाएगी। यह पता लगाया जाएगा कि कबूतर किसी देसी या विदेशी साजिश से जुड़ा है या नहीं। फिलहाल कबूतर को सुरक्षित स्थान पर रखा गया है। थाना प्रभारी कृष्ण कुमार ने बताया कि गांव सलेमपुरा पाक बॉर्डर से ज्यादा दूर नहीं है। ऐसे में किसी भी संदिग्ध गतिविधि को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। पुलिस ने ग्रामीणों से अपील की है कि यदि इस तरह की कोई और संदिग्ध वस्तु या जीव दिखाई दे तो तुरंत पुलिस को सूचना दें। पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां इस मामले को गंभीरता से ले रही हैं। कबूतर के छल्लू की जांच के बाद ही स्थिति स्पष्ट हो पाएगी। फिलहाल पुलिस जांच कर रही है।

जमीन विवाद में दो परिवारों में संघर्ष, एक की मौत, छह घायल

उदयपुर, (निसं)। जिले के झाड़ोल थाना क्षेत्र के वेलनिया गांव में बुधवार की रात जमीन के विवाद में दो परिवारों में हुये खूनी संघर्ष में 6 लोग घायल हो गए, जबकि संघर्ष में गंभीर घायल एक जने की मौत हो गई।

झाड़ोल डीएसपी नेत्रपाल सिंह ने बताया कि वेलनिया गांव में गोपाल सिंह और गणपत सिंह राजपूत के परिवारों में जमीनी विवाद को लेकर झगड़ा हुआ था। दोनों परिवारों में महिला और पुरुष आपस में भिड़ गए। लाठियां, कुल्हाडी, पत्थर आदि से एक दूसरे पर हमला कर दिया। घटना में कुल 7 लोग घायल हुए जिन्हें तुरंत झाडोल हॉस्पिटल पहुंचाया गया। जहां प्राथमिक उपचार कर दो गंभीर घायलों को उदयपुर एमबी हॉस्पिटल में रेफर कर दिया। उन्होंने बताया कि घटना में गोपाल सिंह, धन सिंह, मनोहर सिंह, गजेसिंह, गणपत सिंह, नरेंद्र सिंह और नाहर सिंह घायल हो गए, जिन्हें झाडोल हॉस्पिटल पहुंचाया गया। इनमें धन सिंह और नाहर सिंह की हालत गंभीर होने से उदयपुर एमबी हॉस्पिटल रेफर कर दिया। एमबी हॉस्पिटल में इलाज के दौरान धनसिंह (75) नाम के एक बुजुर्ग ने गुरुवार को दम तोड़ दिया। इधर सूचना पर झाडोल पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों पक्षों की तरफ से मामला दर्ज किया।

पांच लाख की धोखाधड़ी

जोधपुर, (कासं)। महाराष्ट्र के एक व्यक्ति से बोंबे मोटर चौराहा के पास में शतरंज इंस्टीट्यूट खोलने एवं पार्टनरशिप के नाम पर पांच लाख रूपए ऐंठ लिए। ना तो इंस्टीट्यूट खोला गया और ना ही रकम वापिस लौटाई। पीड़ित ने नामजद व्यक्ति के खिलाफ प्रतापनगर सदर थाने में धोखाधड़ी में रिपोर्ट दी है। प्रतापनगर सदर पुलिस ने बताया कि मूलतः कबनूर महाराष्ट्र हाल मालवीय नगर जयपुर के रहने वाले कौस्तुम कृष्णांत गोते ने रिपोर्ट दी है। उसने रिपोर्ट में बताया कि गत वर्ष उसकी मुलाकात बोम्बे मोटर के समीप दिल्ली के बुरादी निवासी मयंक शर्मा से हुई थी। यहां एक कार्यालय में उनके बीच में बोंबे मोटर के पास में शतरंज इंस्टीट्यूट खोलने की बात हुई थी, जिसमें पार्टनरशिप के तौर पर उससे मयंक शर्मा ने पांच लाख रूपए ले लिए। मगर इंस्टीट्यूट खोलने के नाम पर वह टालमटोल जवाब देता रहा। आखिरकार रकम को हड़प कर गया।

धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन: पावटा। भोनावास बाबा मोहनदास आश्रम मंदिर प्रांगण में शिव परिवार प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में आज भव्य कलश यात्रा के साथ तीन दिवसीय धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

संपर्क पोर्टल के प्रकरणों का गुणवत्ता के साथ निस्तारण करें : कलेक्टर

- जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल की अध्यक्षता में राजस्व अधिकारियों की बैठक सम्पन्न

जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल की अध्यक्षता में विभागीय उपलब्धियों एवं विकास कार्यों के संबंध में राजस्व अधिकारियों की बैठक का आयोजन किया।

कोटपूतली। जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय में गुरूवार को जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल की अध्यक्षता में विभागीय उपलब्धियों एवं विकास कार्यों के संबंध में राजस्व अधिकारियों की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल ने बजट घोषणाओं की क्रियान्विति की समीक्षा करते हुये कहा कि सभी राजस्व अधिकारी बजट घोषणाओं की क्रियान्विति को गति देने के लिये संबंधित विभागों से समन्वय करते हुये भूमि आवंटन, डीपीआर, टैंडर प्रक्रिया को शीघ्र पूरा करते हुये विकास कार्यों को समय पर पूरा करें। जिससे विकास कार्यों का लाभ आमजन को समयबद्ध मिल सकें। उन्होंने कहा कि संपर्क पोर्टल के प्रकरणों का गुणवत्ता के साथ निस्तारण करें। उन्होंने निर्देशित किया कि बजट 2025-26 में जिले के संबंध में की गई घोषणाओं को धरातल पर उतारने के लिये आवश्यक व भविष्य में सुगमता को देखते हुये उपयुक्त भूमि का चिन्हीकरण करते हुये आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि भूमि का चयन करते समय आमजन की पहुंच व सुविधाओं का विशेषता से ध्यान रखें।

राजस्व संबंधी प्रकरणों का गुणवत्ता से करें निस्तारण रू- जिला कलक्टर ने निर्देशित किया कि जिले में राजस्व अधिकारी राजस्व से संबंधित सभी प्रकार के प्रकरणों का विहित समय में निस्तारण करें, ताकि आमजन को जल्द से जल्द राहत मिल सकें। सभी उपखण्ड अधिकारी अपने दायित्वों का पालन करते हुये अपने क्षेत्र में संचालित समस्त गतिविधियों की नियमित मॉनिटरिंग करें। उन्होंने कहा कि सीमा ज्ञान व पत्थरगढ़ी के मामलों में दोनों पक्षों को सुनकर ही संवेदनशीलता से कार्यवाही करें।

उन्होंने अधिकारियों को जनसुनवाई व रात्रि चौपाल के माध्यम से आमजन के बीच पहुंचकर उनके परिवादों के त्वरित निस्तारण के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि संवेदनशीलता के साथ आमजन के बिजली, पेयजल, सडक आदि के प्रकरणों को सुन संतुष्टपूर्ण निस्तारण करने को कहा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री जनसुनवाई प्रकोष्ठ, संपर्क पोर्टल व जनप्रतिनिधियों से प्राप्त प्रकरणों का प्राथमिकता से निवारण करें।

गर्मी के मद्देनजर निर्बाध पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करें रू- जिला कलक्टर ने कहा कि गर्मी के मद्देनजर अधिकारी अपने क्षेत्र में निर्बाध पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिये पीएचईडी विभाग से समन्वय करते हुये ट्यूबवेल, टैंकर सप्लाई, पाईपलाईन मरम्मत, मोटर रिपेयर, टंकी सफाई आदि कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग करें। विभिन्न विषयों पर हुई चर्चा रू- बैठक के दौरान उन्होंने संपरिवर्तन प्रकरणों, भूमि अवाप्ति, गैर खातेदारी प्रकरण, 90 ए, मासिक सारांश रिपोर्ट, राजस्व सहित न्यायालयों व अदालतों के लंबित प्रकरण, एल आरध्पीडीआर एक्ट प्रकरण, जीएलएमएसी से संबंधित प्रकरण, जीसीएमएस पोर्टल, सहायता संबंधित बकाया प्रकरण, सडक सुरक्षा, गिरदावरी, अतिक्रमण, राजस्व वसूली के संबंध में आवश्यक निर्देश दिये।

विश्व जैव विविधता शिविर आयोजित

शाहपुरा। तालुका विधिक सेवा समिति शाहपुरा अध्यक्ष ललिता शर्मा अपर जिला एवं सत्र सैशन न्यायाधीश प्रथम के निर्देशानुसार पैरा लीगल वॉलिन्टियर दिनेश कुमार शर्मा के द्धारा कल्याण सिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शाहपुरा में गुरुवार को "विश्व जैव विविधता दिवस" विश्व जैव विविधता शिविर आयोजित किया गया। शिविर की अध्यक्षता रोहिताश यादव व्याख्याता द्धारा की गई। इस दौरान पैरा लीगल वॉलिन्टियर दिनेश कुमार शर्मा ने बताया कि पृथ्वी पर जीवन की विविधता है जिसका संरक्षण करना आज आवश्यक है। पेड़ पौधे, हमारे लिए जीवनदायिनी आंक्सीजन को पैदा करते है। पेड़ पौधों से फल फ्रूट्स, जड़ी बूटियों की दुर्लभतम प्रजातियां जंगलों में उपलब्ध होती है। जंगलों में पाये जाने वाले जीव जंतुओं एवं पशु पक्षियों, जमीन पर रेंगने वाले वन्यजीव, पृथ्वी को बचाने का कार्य करते है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 29 दिसम्बर 1992 में नोरोबी अधिवेशन में 22 मई को विश्व जैव विविधता दिवस मनाने का संकल्प दिलाया था इसलिए हमें पृथ्वी को बचाने के लिए पर्यावरण को आधार बनाकर पौधारोपण का कार्य करना चाहिए। भारत वर्ष में वैदिक संस्कृति काल से ही "वसुधैव कुटुम्बकम" का भाव देखने में आया है। पीपल के पौधे से आक्सीजन, गाय एवं पशुओं के गोबर से खाद मिलती है जो पृथ्वी की उर्वरता शक्ति को कायम रखती है। फलदार पेड़ लगाना चाहिए। भारत में उष्ण जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए पौधारोपण कार्य किया जाता रहा है।

वन्य प्राणी के लिए आहार, स्वास्थ्य एवं जल सुरक्षा इन्हीं सघन वनों में उन्हें उपलब्ध होती है। वन्य पेडों की अंधाधुंध कटाई के कारण हाल के कुछ दिनों पूर्व चीता, तेंदुआ, बघेरा विराटनगर, मैड़ ग्रामीण क्षैत्र में रेस्क्यू किया गया था। क्योंकि अगर सरकारी योजनाओं की उचित देखभाल एवं सुनिश्चित हाथों से सघन पौधारोपण किया जावे एवं संकल्प दिलाया जावे कि हमें हमारे घर के प्रत्येक सदस्य के नाम पर फलदार पौधारोपण किया जायेगा। सरकार इस दशा पर संज्ञानात्मक कार्य करें।

हाइपरटेंशन जागरूकता का संदेश दिया

टोंक। विश्व उच्च रक्तचाप दिवस के उपलक्ष्य में गुरुवार को राजकीय नर्सिंग महाविद्यालय एवं एएनएम ट्रेनिंग सेंटर के विद्यार्थियों ने गैर संचारी रोग एवं उच्च रक्तचाप विषय पर क्विज, स्लोगन एवं पेंटिंग के माध्यम से जागरूकता का संदेश दिया। सीएमएचओ डॉ. शैलेंद्र सिंह चौधरी ने बताया कि जागरूकता का संदेश के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी साझा की गई।

डिप्टी सीएमएचओ डॉ. अभिमन्यु डासवानी ने बताया कि प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

इस आयोजन के माध्यम से न केवल विद्यार्थियों की प्रतिभा को मंच मिला, बल्कि स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का संदेश भी प्रसारित हुआ। उन्होंने बताया कि पेंटिंग प्रतियोगिता में योगिता एंड ग्रुप प्रथम, पलक कुमावत द्वितीय, प्रियंका कुमावत एवं चेल्सी गोदीवल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार स्लोगन कंपटीशन में रोहित ढाका प्रथम एवं प्रियंका कुमावत द्वितीय स्थान पर रही।

कला और वाणिज्य में बेटियों ने मारी बाजी

- फुलेरा क्षेत्र में विज्ञान संकाय में छात्र यश जांगिड़ पुत्र विजय कुमार ने 94.80 प्रतिशत अंक अर्जित करते हुए प्रथम स्थान हासिल किया

फुलेरा । राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर की उच्च माध्यमिक परीक्षा के परिणाम गुरुवार सांय 5 बजे घोषित हुए। जिसमें फुलेरा क्षेत्र में विज्ञान संकाय में छात्र यश जांगिड़ पुत्र विजय कुमार ने 94.80 प्रतिशत अंक अर्जित करते हुए प्रथम स्थान हासिल किया। छात्र यश जांगिड़ ने अपनी सफलता का श्रेय अपने दादा दादी, माता-पिता परिजनों सहित बड़ी बहन ऐश्वर्या शर्मा को देते हुए कहा कि मुझे हमेशा मेरे शिक्षकों ने आत्मबल प्रदान किया। जिसकी वजह से मैंने ये मुकाम हासिल किया। विज्ञान संकाय में दूसरा स्थान राजकुमार सैनी ने हासिल किया। वहीं वाणिज्य संकाय में विवेकानन्द कॉमर्स फाउण्डेशन की छात्रा दर्शिता जांगिड़ पुत्री सत्यनारायण शर्मा ने 95 प्रतिशत अंक हासिल करते हुए नगर की वरीयता सूची में प्रथम रही। दर्शिता ने अपनी सफलता का श्रेय अपने शिक्षक दौलत सिंह राठौड़ और मुकेश गेनोलिया को देते हुए सीए बनने की इच्छा जाहिर की। उसने कहा कि माता पिता की प्रेरणा से मुझे हौंसला मिला। अगर बेटियों को आगे बढ़ने के अवसर प्रदान किए जाए तो वो एक दिन व्योमिका सिंह और सोफिया कुरैशी जैसे व्यक्तित्व में उभरकर सामने आती है। वहीं कला संकाय में छात्रा सपना चौधरी पुत्री जगदीश प्रसाद जाट ने 91.80 प्रतिशत अंक अर्जित करते हुए नगर में अव्वल रही। सपना ने कहा कि नियमित अध्ययन से सटीक परिणाम मिलते है। उसने अपने माता पिता को अपना आइडल बताते हुए आईपीएस बनने की इच्छा जाहिर की। उन्होंने कहा कि हमारे निदेशक ज्योति शर्मा और सभी शिक्षकों का हमें सदैव मार्ग दर्शन मिला, जिस वजह से में ये मुकाम हासिल कर पाई।

'ग्रामीणों की समस्याओं का समाधान कर कराएं अवगत'

- कोटकासिम क्षेत्र के गांव लाडपूर में रात्रि चौपाल कार्यक्रम में ग्रामीणों ने 42 शिकायत दर्ज कराई

कोटकासिम/ खैरथल। जिला कलेक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में कोटकासिम क्षेत्र की ग्राम पंचायत लाडपुर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में रात्रि चौपाल का आयोजन किया गया। इस मौके पर एडीएम शिवपाल जाट, डीएसपी राजेंद्र निर्वाण, कोटकासिम एसडीएम रेखा यादव, तहसीलदार धर्मेंद्र मीणा, सरपंच सहित विभागों के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

ग्रामीणों ने चौपाल पर पहुंचकर समस्याएं जिला कलेक्टर के समक्ष रखी। कलेक्टर ने ग्रामीणों की समस्याओं को सुना और समझा मौके पर निस्तारण के लिए अधिकारियों को निर्देशित कर समस्याओं का टाइम अवधि में निराकरण कर अवगत कराने के निर्देश दिए। कुल 42 मामले दर्ज किए गए। सुनवाई में कलेक्टर के समक्ष जो मामले दर्ज किए गए उनमें पट्टे, रास्ते पर अवैध अतिक्रमण हटाने, सड़क बनवाने, खाद्य सुरक्षा में नाम जुड़वाने, पानी, बिजली के संबंध में थे।

रात्रि चौपाल के दौरान जिला स्तरीय अधिकारियों ने सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं जैसे वृद्ध जन पेंशन योजना, विधवा पेंशन योजना, मुख्यमंत्री पालनहार योजना, मुख्यमंत्री कन्यादान योजना, सशक्त खैरथल तिजारा, लाडो योजना, स्वास्थ्य जीवन शैली नवाचार, तंबाकू फ्री कैंपियन, जल जीवन मिशन, पीएम सूर्यघर योजना, पीएम विश्वकर्म योजना किया के बारे में विस्तार से आवेदन की प्रक्रिया के बारे में ग्रामीणों को बताया।

चौपाल पर जनसुनवाई व योजनाओं की जानकारी देने के पश्चात कलेक्टर रात्रि विश्राम के लिए गांव के स्कूल में ही ठहराव किया। रात्रि ठहराव के दौरान कलेक्टर ने पंचायत के जनप्रतिनिधियों व ग्रामीणों से गांव के विकास को लेकर चर्चा की सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित परिवारों एवं वंचित रहे परिवारों के बारे में जानकारी हासिल की ओर कहा जो परिवार गांव में सरकार की योजनाओं से वंचित है उन्हें योजनाओं का लाभ दिलाने में उनकी मदद करें परेशानी और रुकावट आने पर अधिकारी से सीधे संपर्क कर अवगत करावे कोई सुनवाई नहीं करें तो मुझे बताएं। ग्रामीणों ने कलेक्टर को भरोसा दिया।

शार्ट सर्किट से किसान के मकान में लगी आग

पावटा। उपखंड पावटा क्षेत्र की ग्राम पंचायत वीर तेजाजी नगर स्थित जोगियों की ढाणी में बुधवार को एक किसान के घर में शार्ट सर्किट से आग लग गई, जिससे बाड़े में बंधे चार पशुओं की जलकर मौत हो गई। घर में आग लगने से गृहस्थी का सारा सामान व घर में रखा खाने पीने का सारा समान भी जलकर राख हो गया। किसान का रो रोकर बुरा हाल है, पीड़ित ने तहसील प्रशासन से मुआवजे की मांग की है। किसान मुकेश , जीतू, राहुल ने बताया कि सोमवार की रात अचानक आए तेज अंधड के कारण मकान में शार्ट सर्किट से आग लग गई, जो फैलती हुई पशुओं के बाड़े में पहुंच गई व बाड़े में बंधे तीन भैंस, एक गाय आग की चपेट में आ गई, जिनकी झुलसकर मौत हो गई व पांच मवेशी गंभीर रूप से झुलस गए जिनका उपचार जारी है। पशुओं की कराहते हुए आवाज सुनकर मौके पर पहुंचे आसपास के लोगों ने आग बुझाने का काफी प्रयास किया। लेकिन आग पर काबू पाने में समय लग गया, इतनी देर में पशुओं की जलकर मौत हो गई। पशुओं की मौत से किसान परिवार में कोहराम मच गया और गांव में अफरा तफरी का माहौल बन गया। पीड़ित किसान ने बताया कि उसके पशुओं की मौत होने से काफी नुकसान हुआ है, जिससे पूरा परिवार रो रोकर परेशान है। पीड़ित किसान ने तहसील प्रशासन से मुआवजे की मांग की है। वही सूचना पर विधायक प्रतिनिधि आशीष धनकड ने आगजनी के घटना स्थल पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया। घटना की गंभीरता को देखते हुए प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी एसडीएम कपिल उपाध्याय, तहसीलदार संजय खेदड़, पटवारी, सरपंच प्रतिनिधि अमित गजराज, मदन बाज्या, रंजीत सिंह, ओमप्रकाश बाज्या सहित जनप्रतिनिधि, ग्रामीण व अधिकारी मौके पर पहुंचे ।

उर्स पर चद्दर पेश की:- मनोहरपुर। जयपुर की प्रसिद्ध दरगाह मौलाना ज़ियाउद्दीन साहब के 216 वें उर्स के अवसर पर आज दी बार एसोसिएशन जयपुर के अध्यक्ष संदीप लुहाड़िया व सैयद सादात अली एडवोकेट राजस्थान हाई कोर्ट ने पूर्व महासचिव दी।

कलेक्टर ने चिकित्सा संस्थानों को कार्य प्रणाली में सुधार के निर्देश दिए

टोंक। जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक जिला कलेक्टर डॉ. सौम्या झा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई, बैठक में जिला कलेक्टर ने लू-तापघात, मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए विभाग द्वारा की जा रही गतिविधियों एवं मौसमी बीमारियों की रोकथाम के कार्यो की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिए। साथ ही, मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा एवं जांच योजना की ब्लॉकवार समीक्षा कर पीएचसी व सीएचसी की जानकारी लेकर आवश्यक उपलब्धता सुनिश्चित करने पर जोर दिया, उन्होंने जिले के समस्त चिकित्सा संस्थानों में आवश्यक दवाईयों की शत-प्रतिशत उपलब्धता रखने के निर्देश दिए।

जिला कलेक्टर ने टीबी उन्मूलन कार्यक्रम के तहत जिले में आयोजित होने वाले टीबी मुक्त भारत अभियान के सफल संचालन, टीबी रोग की शीघ्रता से पहचान, जांच और उपचार, अभियान में जनभागीदारी, निक्षय मित्र, सीबीनाट टेस्ट समेत अन्य गतिविधियों को लेकर बीसीएमओ को आवश्यक निर्देश दिए। हाइपरटेंशन, सीबैक फॉर्म, टीकाकरण, जननी सुरक्षा योजना, लाडो प्रोत्साहन योजना, परिवार कल्याण, एनीमिया मुक्त राजस्थान, संस्थागत प्रसव, संपूर्ण टीकाकरण, मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना संबधित कार्यो में कम प्रगति वाले चिकित्सा संस्थानों को कार्य प्रणाली में सुधार के निर्देश दिए। बैठक में सीएमएचओ डॉ. शैलेंद्र सिंह चौधरी, अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जितेंद्र शर्मा, डिप्टी सीएमएचओ डॉ. अभिमन्यु डासवानी, आरसीएचओ डॉ. गोपाल जांगिड़, जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. हिमांशू मित्तल, पीएमओ डॉ. हनुमान बैरवा, डॉ. मानवेंद्र, डीपीओ अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

प्ररूप-5 (नियम 6 (2) देखिए)
कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी नगर पालिका मण्डल जोबनेर जयपुर
सं.: 487 लोक सूचना दिनांक: 21.5.25

मैसर्स पॉपुलर इंडिया वेकेशंस प्रा.लि. जरिये निदेशक श्री भगवती सिंह पुत्र श्री मूल सिंह, निवासी-ई-117 1/415 चित्रकूट स्कीम वैशाली नगर जिला-जयपुर ने नीचे वर्णित भूमि में के अपने अधिकार आवासीय के प्रयोजन के लिए ऐसी भूमि के उपयोग के लिए पूर्ण स्वामित्व पट्टा अधिकार प्राप्त करने के लिए नगर पालिका पक्ष में अभ्यर्पित कर दिये है। अर्थात् :-
जिले सहित नगर का नाम: डेहरा-जोबनेर जिला-जयपुर
ग्राम का नाम: राजस्व ग्राम डेहरा, तहसील-जोबनेर
खसरा न.: 2413/1851
क्षेत्र: रकबा 0.3540 हैक्टेयर सम्पूर्ण

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज 21.5.25 को जारी की गयी।
प्राधिकारी अधिकारी (अधिशाषी अधिकारी) नगरपालिका जोबनेर

कार्यालय आवासीय अभियंता
राजस्थान आवासन मण्डल, खण्ड-कोचिंग हब, जयपुर (उपखण्ड दौसा)
(Email Id:reeh.rhb@rajasthan.gov.in)
-: आवश्यक सूचना :-

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवास संख्या 3/126, स्काउट फील्ड योजना, सवाई माधोपुर, क्षेत्रफल 260.10 वर्ग मीटर का आवंटन श्री राजेन्द्र सिंह चौहान पुत्र श्री कल्याण सिंह चौहान को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 932 दिनांक 30.03.1991 को जारी किया गया था व मूल आवंटी को कब्जा दिनांक 10.02.1992 को संभलवा दिया गया। तत्पश्चात मूल आवंटी श्री राजेन्द्र सिंह चौहान की दिनांक 05.06.1996 को मृत्यु हो जाने के पश्चात् नामित उत्तराधिकारी पुत्र श्री शैलेन्द्र सिंह चौहान पुत्र स्व. श्री राजेन्द्र सिंह चौहान ने उक्त आवास का हस्तांतरण अपने पक्ष में करने हेतु निवेदन किया है।

अत: आवास संख्या 3/126, स्काउट फील्ड योजना, सवाई माधोपुर के हस्तांतरण के संबंध में किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति/आक्षेप हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 10 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर देवें, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर उक्त वर्णित उत्तराधिकारी श्री शैलेन्द्र सिंह चौहान पुत्र स्व. श्री राजेन्द्र सिंह चौहान के पक्ष में उक्त आवास के हस्तांतरण की कार्यवाही कर दी जावेगी।
आवासीय अभियंता
राजस्थान आवासन मण्डल
खण्ड-कोचिंग हब जयपुर

आम सूचना
मेरे अभिभाष्य श्री सुरेश जाजू पुत्र स्व. श्री माधोनारायण जाजू निवासी-जाल की गली, सांभरलेक, जिला जयपुर हाल निवासी चित्तौड़गढ़ के निर्देशानुसार एवं उनकी ओर से श्री विकास गर्ग पुत्र श्री नारायण गर्ग निवासी-जी 148, सूर्य नगर विस्तार, मांग्यावास, मानसरोवर, जयपुर की ओर से राष्ट्रदूत अखबार में जो सूचना दिनांक 18.05.2025 को संपत्ति जाजू भवन, जाल की गली सांभरलेक के संबंध में श्री राजेश जाजू पुत्र श्री एस.एन.जाजू निवासी जाल की गली, सांभरलेक, जिला जयपुर के द्वारा विक्रय बाबत् प्रकाशित करवाई गई है, वह संपत्ति जाजू भवन मेरे अभिभाष्य के हित व अधिकार की संपत्ति है। संपत्ति जाजू भवन मेरे अभिभाष्य पिता स्व. श्री माधोनारायण जाजू एवं श्री राजेश जाजू के दादा स्व. श्री रामनारायण जाजू की संयुक्त संपत्ति है एवं बराबर - बराबर हिस्सेदारी की अविभाजित संपत्ति है। इस प्रकार से मेरे अभिभाष्य संपत्ति जाजू भवन के आधे हिस्से के स्वामी, हितधारी एवं कब्जेधारी है। श्री राजेश जाजू को संपत्ति जाजू भवन को विक्रय करने का कोई अधिकार विधिक रूप से नहीं है इसलिए उसे अकेले श्री राजेश जाजू के द्वारा विक्रय नहीं किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति संपत्ति जाजू भवन को विक्रित करता है या यदि कोई व्यक्ति उक्त संपत्ति को क्रय करता है तो वह मेरे अभिभाष्य के हित एवं अधिकार से अमान्य होगी। सूचित रहे।
राघव मिश्रा, एडवोकेट, मो. 9414760026

तीये की बैठक
हमारे बड़े भाई श्रीमान विकेश गौड़ (रवि) पुत्र श्री सत्यनारायण गौड़ का स्वर्गवास 21.05.2025 को हो गया।
जिनकी तीये की बैठक (शुक्रवार) 23.05.2025 को शाम 5 से 6 बजे झूलेलाल मंदिर, डी-ब्लाक, सेक्टर-8, विद्याधर नगर जयपुर पर होगी।
शोकाकुल :- सत्यनारायण जी (पिताजी), रमेश, शेखर, उमेश (चाचाजी), स्व. मुकेश, राजेश, तपेश, नरेश, दिलीप, सोनू, मोनू (भाई), स्व. मृगांक, मृदुल, मृणाल, मानस (भतीजे), निमिषा (भतीजी) एवं समस्त गौड़ परिवार।
मो. 8209946506, 9829437544

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18(2) के अधीन नोटस
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर समस्त व सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर : DEV/JAIPUR-I/TRUST/2025/312
चूंकि प्रार्थी श्री Charu, 1, Laxmi Path, Hathroi, Ajmer Road, Jaipur 302001 ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत प्रन्यास
इण्डियन इन्स्टिट्यूट ऑफ डाटा इंटरप्रिटेशन एण्ड एनालिसिस, 1, Laxmi Path, Hathroi, Ajmer Road, Jaipur 302001 के संबंध में अग्रिम जांच, किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।
अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें। और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच प्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा। आज दिनांक 22.05.2025 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया। आइदा तारीख पेशी 28/07/2025
सहायक आयुक्त
देवस्थान विभाग, जयपुर-प्रथम

उद्घोषणा (इश्तिहार) न्यायालय (राज.)
उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र वाद सं. 08/25
विषय : उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र।
प्रार्थी नाम सौरभ सिन्हा पुत्र सुभाष चन्द सिन्हा जाति कायस्थ
विवाद स्थान जयपुर
मृतक सुभाष चन्द सिन्हा एवं सरोज सिन्हा की सम्पत्ति के विषय में
पेशी दिनांक 11.08.2025
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि, उपरोक्त प्रार्थी/प्रार्थीगण ने इस न्यायालय में इस आशय का प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया है कि मृतक, नाम 1. सुभाष चन्द सिन्हा पुत्र श्री पी.डी. सिन्हा 2. श्रीमती सरोज सिन्हा धर्मपत्नी श्री सुभाष चन्द सिन्हा जाति कायस्थ निवासी 52/145, प्रताप नगर, सेक्टर-5, सांगानेर, जयपुर का उत्तराधिकारी स्वीकार कर उसके पक्ष में उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र, प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, प्रदान किया जावे। अतः उक्त प्रार्थना-पत्र की स्वीकृति में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह इस न्यायालय में दिनांक 11 माह 8 सन् 2025 को न्यायालय में उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रमाण सहित प्रस्तुत करें। उक्त दिवस के पश्चात् कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी। आज दिनांक 22 माह 5 सन 2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुद्रांकन से जारी किया गया।
आज्ञा से
सरिश्तेदार
अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश संख्या-10, जयपुर महानगर न्यायालय सांगानेर
मुहर

नम्बर मिलाइए
9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक कराये।

कार्यालय नगर निगम, भरतपुर
क्रमांक : पट्टा शा०/न.नि.भ./2025-26/ सार्वजनिक सूचना दिनांक : 21.05.2025

नजूल विभाग भरतपुर द्वारा नजूली दुकान सं० 33, 34 का आवंटन दिनांक 15.07.1968 को श्री देवीराम शर्मा पुत्र दयाचन्द शर्मा, निवासी मथुरा दरवाजा बाहर, भरतपुर को किया गया था। तदोपरान्त देवीराम शर्मा द्वारा जरिये पंजीकृत बयनामा दिनांक 30.06.1998 से उक्त नजूली दुकान श्री भगवानदास पुत्र फत्तनदास एवं श्रीमती लक्ष्मी देवी पत्नि भगवानदास निवासी मोरी चार बाग, भरतपुर को विक्रय कर दिया गया। तत्पश्चात भगवानदास व लक्ष्मीदेवी द्वारा जरिये बयनामा दिनांक 26.02.2018 से श्री संजय व मुकेश कुमार पुत्रान गोरधनदास, निवासी मोरी चार बाग, भरतपुर को विक्रय कर दिया गया है। अब श्री संजय व मुकेश कुमार पुत्रान गोरधनदास द्वारा नाम हस्तान्तरण कराने हेतु शपथ पत्र, बयनामाओं की प्रति प्रस्तुत की है। निगम द्वारा नाम हस्तान्तरण की अग्रिम कार्यवाही की जानी है।

उक्त के सम्बन्ध में यदि किसी व्यक्ति को किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो अन्दर अवधि सात दिवस में अपनी लिखित आपत्ति साक्ष्य सहित इस कार्यालय में प्रस्तुत करें अन्यथा नाम हस्तान्तरण आवेदकान् के पक्ष में किये जाने की अग्रिम कार्यवाही की जावेगी।
प्रभारी अधिकारी
नगर निगम, भरतपुर

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर
उच्च माध्यमिक (विज्ञान, वाणिज्य ,कला वर्ग व वरिष्ठ उपाध्याय) परीक्षा 2025 की उत्तर-पुस्तिकाओं की संवीक्षा एवं उत्तर-पुस्तिकाओं की स्कैन फोटो प्रति ऑनलाईन प्राप्त करने हेतु परीक्षार्थियों के सूचनार्थ

उच्च माध्यमिक (विज्ञान, वाणिज्य, कला वर्ग व वरिष्ठ उपाध्याय) परीक्षा 2025 का परिणाम दिनांक 22.05.2025 को घोषित किया गया है। संवीक्षा एवं उत्तर-पुस्तिका की स्केन फोटो प्रति प्राप्त करने हेतु बिना विलम्ब शुल्क दिनांक 29.05.2025 एवं विलम्ब शुल्क सहित दिनांक 01.06.2025 तक ई-मित्र पर अथवा स्वंय के स्तर पर ऑनलाईन आवेदन कर सकते है। विस्तृत जानकारी, नियम, निर्देश, शर्तें व आवेदन पत्र प्रारुप/प्रक्रिया आदि बोर्ड वेबसाईट www.rajeduboard.rajasthan.gov.in पर एवं दिनांक 22.05.2025 को अपलोड की गई विज्ञप्ति में देखे।
सचिव

कार्यालय नगर निगम, भरतपुर
क्रमांक : न.नि.भ./स्कीम/2025-26/3105 सार्वजनिक सूचना दिनांक : 21.05.2025

हरिजन गृह निर्माण स०स० (शास्त्रीपुरम्) योजना भरतपुर के भूखण्ड संख्या 37 क्षेत्रफल 167.87 वर्गगज का आवासीय रूपान्तरण पट्टा विलेख क्रमांक 232 दिनांक 22.04.2025 नगर निगम, भरतपुर द्वारा श्री साकेत पुत्र डॉ० डी०डी० आर्य जाति वैश्य निवासी - आर्य नर्सिंग होम, पुराने जनरल हॉस्पीटल के सामने, मौहल्ला मोरी चार बाग, भरतपुर के नाम जारी किया गया। श्री साकेत पुत्र डॉ० डी०डी० आर्य ने उक्त भूखण्ड जरिये रजिस्टर्ड बयनामा दिनांक 23.04.2025 के द्वारा श्री राजीव अग्रवाल पुत्र श्री मोहन लाल अग्रवाल को विक्रय कर दिया। आवेदक श्री राजीव अग्रवाल पुत्र श्री मोहन लाल अग्रवाल जाति वैश्य निवासी-मकान संख्या 100, सैक्टर संख्या 3, 100 फुट रोड, भरतपुर उक्त भूखण्ड का नाम परिवर्तन कराना चाहते हैं। भूखण्ड संख्या 37, हरिजन गृह निर्माण स०स० (शास्त्रीपुरम्), भरतपुर का नाम परिवर्तन कराने हेतु आवेदन पत्र इस कार्यालय में प्रस्तुत किया है।

भूख्या संख्या 37, हरिजन गृह निर्माण स०स० (शास्त्रीपुरम्), भरतपुर का नाम परिवर्तन करने की कार्यवाही इस कार्यालय द्वारा की जानी है। इस सम्बन्ध में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो अन्दर अवधि सात दिवस में कार्यालय नगर निगम, भरतपुर में अपनी आपत्ति दर्ज करावें अन्यथा गुजरने म्याद भूखण्ड संख्या 37, हरिजन गृह निर्माण स०स० (शास्त्रीपुरम्), भरतपुर का नाम परिवर्तन करने की कार्यवाही कर दी जावेगी एवं कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।
प्रभारी अधिकारी
स्कीम शाखा, नगर निगम, भरतपुर

कार्यालय नगर पालिका मण्डल, सांभर लेक जिला जयपुर
क्रमांक: न.पा.सा./2024-25/ दिनांक :-
-: आपत्ति सूचना :-
एतद् द्वारा हितबद्ध, व्यक्ति विशेष, आम खास को सूचित किया जाता है कि निम्न व्यक्तियों ने फोति नामान्तरण हेतु इस कार्यालय में आवेदन किया है।

क्र. सं.	प्रार्थी का नाम	स्थान	पट्टाधारक का नाम	क्षेत्रफल वर्गगज	प्रयोजनार्थ
1	श्री राम रतन माली पुत्र श्री नेमी चन्द	ब्रहम सागर के पास, बस स्टेण्ड, फुलेरा	श्री नेमीचन्द पुत्र श्री मांगीलाल	163.61	नामान्तरण
2	श्री राम रतन माली पुत्र श्री नेमी चन्द	ब्रहम सागर के पास, बस स्टेण्ड, फुलेरा	श्री नेमीचन्द पुत्र श्री मांगीलाल	29.27	नामान्तरण

किसी भी व्यक्ति को उपरोक्त ईजाजत बाबत आपत्ति हो तो आपत्ति आमंत्रण सूचना जारी होने की तिथि से 07 दिवस के अन्दर मयाद विधिमान्य दस्तावेजों सहित लिखित में आपत्ति कार्य दिवस के दौरान कार्यालय समय में अद्योहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत करावें। बाद मयाद गुजरने आपत्ति मान्य नहीं होगी।
अधिशाषी अधिकारी, नगरपालिका सांभर लेक

प्ररूप-5 (नियम 6 (2) देखिए)
कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी नगर पालिका मण्डल जोबनेर जयपुर
सं.: 485 लोक सूचना दिनांक: 21.5.25

1. श्री सेवा राम कुमावत पुत्र श्री गोरधन लाल कुमावत निवासी-तिबाडीयों का बास, आसलपुर एवं 2. श्री गोपाल पुत्र श्री सुजा राम, निवासी- चौरास्यो की ढाणी, दहमी कलां जिला-जयपुर ने नीचे वर्णित भूमि में के अपने अधिकार आवासीय के प्रयोजन के लिए ऐसी भूमि के उपयोग के लिए पूर्ण स्वामित्व पट्टा अधिकार प्राप्त करने के लिए नगर पालिका पक्ष में अभ्यर्पित कर दिये है। अर्थात् :-

जिले सहित नगर का नाम	ग्राम का नाम	खसरा न.	क्षेत्र
आसलपुर-जोबनेर जिला-जयपुर	राजस्व ग्राम आसलपुर तहसील-जोबनेर	1965/842	रकबा 0.2529 हैक्टेयर में से 2344.22 वर्गमीटर भूमि

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर ओर मुहर के अधीन आज 21.5.25 को जारी की गयी।
प्राधिकारी अधिकारी (अधिशाषी अधिकारी) नगरपालिका जोबनेर

जयपुर विकास प्राधिकरण
इन्दिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरु मार्ग, जयपुर-302004
क्रमांक : जविप्रा./उपा./जोन-12/2025/डी-3754 दिनांक: 22.05.2025
आम सूचना
जयपुर विकास प्राधिकरण की योजना रजत विहार के बी ब्लॉक के माननीय न्यायालय राजस्व अपील अधिकारी के स्थगन प्रभावी होने के कारण बी ब्लॉक के सफल आवंटियों को पूर्व में आवंटित भूखण्ड के स्थान पर जविप्रा की एलपीसी के निर्णयानुसार लॉटरी में पूर्व मे आवंटित सड़क से बढ़ी सड़क पर भूखंड निकलता है उन्हे समतुल्यता के आदेश दिनांक 12.07.2024 की पालना मे अंतर राशि जमा कराते हुए अन्य भूखण्ड आवंटन किये जाने हेतु दिनांक 02.06.2025 को समय 11.00 AM पर नागरिक सेवा केन्द्र हॉल में लॉटरी निकाली जावेगी।
राज. संवाद/सी/2025-26/2830 उपायुक्त जोन-12

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय
कुलसचिव कार्यालय, जोबनेर, जयपुर (राज.) पिन. 303 329 Phone : 01425-254980
Email. id- registrar@sknau.ac.in
क्रमांक :- प.व्य.प./स्था-2/श्रीकनकृविवि/2281 दिनांक :- 06/05/2025
अन्तिम नोटिस
श्री रमा शंकर शर्मा (इलेक्ट्रीशियन) पुत्र श्री गोकुल चंद शर्मा,
प्लॉट नं. 14, गणेश नगर-8, निवारू रोड़, झोटवाड़ा-जयपुर - 302018,
मो.नं. : 9587878703
विषयः बिना अवकाश स्वीकृति के 10.10.2024 से अनुपस्थिति रहने बाबत।

जोबनेर स्थित इस विश्वविद्यालय के प्रशासनिक कार्यालय में आपकी नियुक्ति इलेक्ट्रीशियन के पद पर आदेश क्रमांक प.71/स्था-2/श्रीकनकृविवि/2072 दिनांक 11.03.2024 के द्वारा की गयी थी, जिसकी अनुपालना में आप द्वारा दिनांक 20.03.2024 को कार्यग्रहण किया गया। आप दिनांक 10.10.2024 से आदिनांक तक बिना अवकाश स्वीकृति के कार्यालय से अनुपस्थित हैं।

आपको इस कार्यालय के पत्रांक क्रमशः 1243 दिनांक 12.11.2024, 1495 दिनांक 17.12.2024 एवं 2029 दिनांक 12.03.2025 आपकी ईमेल व रजिस्टर्ड डाक से प्रेषित कर कार्यालय में उपस्थित होने हेतु निर्देशित किया गया था।

अतः आपको आदेश दिया जाता है कि समाचार पत्र में इस नोटिस के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस के भीतर उपस्थित होवें अन्यथा नियमानुसार सेवा समाप्ति व न्यायिक (न्यायालय) कार्यवाही की जावेगी। और यदि आप कार्यग्रहण दिनांक से तीन वर्ष पूर्व विश्वविद्यालय सेवा छोड़ना चाहते हैं तो आपके द्वारा प्रस्तुत शपथ-पत्र व नियुक्ति की शर्तों के अनुसार रु. 3.00 (तीन) लाख वित्त नियंत्रक, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर के पक्ष में डी.डी. बनवाकर अधोहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत करें।
राज.संवाद/सी/25/2755 कुलसचिव

JAIPUR METRO RAIL CORPORATION LIMITED
Room No. 314, 3rd Floor, Admin Building, Metro Depot , Bhrigu Path, Mansarovar, Jaipur-302020, Tel. No. 0141- 2822106, E-mail: edst@jaipurmetrorail.in
No. : JMRC/O&S/S&T/NIB/2025-26/01
NOTICE INVITING BID
JMRC invites bids from the eligible contractors/suppliers for **"Supply of Contactless Smart Cards for Jaipur Metro Rail Corporation."** With estimated cost ₹ 68,52,290. Scheduled Last Date and Time for Submission of Bids is 11.06.2025 by 1500 Hrs. Please visit JMRC website **https://transport.rajasthan.gov.in/jmrc**, SPP Portal **https://sppp.rajasthan.gov.in** & **https://eproc.rajasthan.gov.in** for all Corrigendum/clarification/addendum. **(UBN No. JMR2526GLOB00012)**
Raj.Samwad/C/25/2826 ED (S&T)
प्रदूषण रहित, सस्ता, सुरक्षित एवं आरामदायक सफर - जयपुर मेट्रो

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर, jda.rajasthan.gov.in
क्रमांक:जविप्रा/उपा.जोन-08/2025/डी-145 विज्ञप्ति दिनांक: 22.05.2025
आवेदक श्रीमती सरोज बागला पत्नी श्री मनमोहन कृष्ण बागला द्वारा आवेदन प्रस्तुत कर इन्द्रा गृ.नि.स.स. की योजना श्री कुशल नगर के भूखण्ड संख्या 39 का फ्री होल्ड पट्टा जारी किये जाने हेतु आवेदन किया गया है। इन्द्रा गृ.नि.स.स. की योजना श्री कुशल नगर के भूखण्ड संख्या 39 का आवंटन पत्र दिनांक 24.09.1994 को सावित्री मीणा पत्नी श्री जगमाल सिंह मीणा के नाम से जारी किया गया है। तत्तश्चात् इनके द्वारा दिनांक 22.08.2012 को जरिये रजि. विक्रय पत्र के माध्यम से उक्त भूखण्ड का बेचान श्रीमती शशीकला गुप्ता पत्नी श्री मदन मोहन गुप्ता को बेचान किया गया। तत्तश्चात् इनके द्वारा दिनांक 01.08.2018 को जरिये रजि. विक्रय पत्र के माध्यम से उक्त भूखण्ड का बेचान आवेदक श्रीमती सरोज बागला को बेचान किया गया। वर्तमान में इनके द्वारा उक्त भूखण्ड का फ्री होल्ड पट्टा जारी किये जाने हेतु निवेदन किया गया है। इस संबंध में यदि किसी व्यक्ति/संस्था/हितधारी को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन दिनांक से 07 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष आपत्ति प्रस्तुत कर दें, अन्यथा समय सीमा पश्चात आवेदक के पक्ष में पट्टा जारी कर दिया जावेगा। समय सीमा पश्चात कोई आपत्ति स्वीकार नहीं होगी। सूचित रहें।
उपायुक्त जोन-8, जविप्रा, जयपुर

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर
उच्च माध्यमिक परीक्षा-2025 की उत्तर-पुस्तिकाओं की संवीक्षा एवं उत्तर-पुस्तिकाओं की स्कैन प्रति ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु व परीक्षार्थियों के सूचनार्थ
[illegible]
सचिव

संक्षिप्त

जीते सात गोल्ड मेडल

टोंक। भवानी निकेतन स्नातकोत्तर महाविद्यालय जयपुर में आयोजित दस दिवसीय वार्षिक प्रशिक्षण कैंप में राजकीय महाविद्यालय टोंक के एनसीसी कैडेट्स ने सात स्वर्ण व दो रजत पदक जीत कर कॉलेज का नाम रोशन किया। प्राचार्य प्रो. लोकेश कुमार शर्मा ने महाविद्यालय के कैडेट्स द्वारा किए गए श्रेष्ठ प्रदर्शन पर बधाई देते हुए कहा कि यह गर्व का विषय है कि हमारे कॉलेज के कैडेट्स ना केवल शैक्षणिक, बल्कि अनुशासन व देश सेवा में भी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। इस अवसर पर टोंक एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट मोहम्मद बाकिर हुसैन ने कहा कि कर्नल एस चंद्रशेखर के नेतृत्व में आयोजित कैंप में महाविद्यालय के कैडेट्स को गोल्ड मेडल मिलने पर उन्हे गर्व की अनुभूति हो रही है जो कि उनके लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है।

शिव महापुराण कथा 6 से

भरतपुर। मथुरा गेट स्थित प्राचीन पंचमुखी हनुमान मंदिर पर 6 जून 2025 से शिव महापुराण का आयोजन किया जा रहा है यह आयोजन निर्जला एकादशी तिथि से चालू होगा जो 6 जून 2025 को आ रही है। शिव महापुराण कथा का आयोजन 6 जून 2025 से 12 जून 2025 तक होगा जिसका समय 1:00 से शाम 5:00 बजे तक कथा का आयोजन किया जाएगा कथावाचक बेनामी शांति आश्रम मोती झील वृंदावन से पधारे अचार्य भूपेंद्र मिश्रा महाराज के सानिध्य में कथा का आयोजन किया जाएगा पंचमुखी हनुमान भरतपुर के महंतअनिल शर्मा ने बताया कि यह निर्जला एकादशी 6 जून 2025 को पड़ रही है इसमें धार्मिक आयोजन का बड़ा महत्व होता है इस दिन भक्तों को भगवान का स्मरण करके अपने पापों का छय करना चाहिए और अपने सत्य के मार्ग पर चलकर मोक्ष की प्राप्त करनी चाहिए कलश यात्रा का समय 6 जून 2025 को सुबह 9:00 बजे से रहेगा।

ज्ञापन दिया

टोंक। केन्द्रीय सरकार ने हाल ही में पास किये गये तर्मिमी वक्फ एक्ट 2025 के विरोध में आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की तरफ से विरोध व धरना प्रदर्शन किया गया। टोंक में तहफ्फुजे ओकाफ कमेटी, यूनिट द्वारा धरना घन्टाघर स्थित भीमराव अंबेडकर सर्किल पर आयोजित हुआ और बाद में राष्ट्रपति को जिला कलेक्टर टोंक के माध्यम से ज्ञापन पेश किया गया। प्रदर्शनकर्ताओं ने बताया कि यह कानून एक जाति विशेष (मुस्लिम समुदाय) को टारगेट करके पास किया गया है, जो ना सिर्फ गेर कानूनी है बल्कि संविधान के खिलाफ भी है। जिसको वापस लेने के लिए विरोध प्रदर्शन किया जा रहा है, जिसके तहत बीते दिन 22 मई पूरे देश के जिला मुख्यालयों पर धरना प्रदर्शन हुआ।

निवाई भाजपा मंडल अध्यक्ष बने छाबडा

टोंक। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ की आदेशो पर टोंक जिला अध्यक्ष चंद्रवीर सिंह चौहान ने निवाई में भाजपा के शहर मंडल अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी पार्षद नितिन जैन छाबड़ा को सौंपी। इस घोषणा के बाद बस स्टैंड निवाई पर कार्यकर्ताओं ने नारेबजी की तथा विधायक रामसहाय वर्मा, नगर पालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी और भाजपा जिला मंत्री अंकुर गुप्ता का माल्यार्पण किया। नव नियुक्त अध्यक्ष छाबडा का स्वागत आतिशबाजी के साथ किया गया, बाद में उन्हें माला, साफा और स्मृति चिन्ह भेंट कर अहिंसा सर्किल पर भी कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत किया।

चार धाम की यात्रा का जत्था रवाना

फुलेरा । कस्बे से श्रद्धालुओं का एक जत्था उत्तराखण्ड सहित चार धाम के लिए गुरुवार सांयकाल को रवाना हुआ। कार्यक्रम के संयोजक वेदप्रकाश पारीक ने बताया कि फुलेरा से तकरीबन 30 यात्रियों का समूह उत्तराखण्ड सहित केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री, यमनोत्री, हरिद्वार आदि धार्मिक स्थलों की यात्रा करेगा। वहीं धर्मप्रेमी छगनराज गहलोत ने कहा कि यह यात्रा हमारे जीवन के सबसे सुखद दिनों में शुमार होगी।

वृक्ष से गिरकर राष्ट्रीय पक्षी मोर घायल

बौंली -बामनवास। क्षेत्र के कोडियाई गांव के सड़क के बाडा कालूराम के पास पेड़ से गिरकर गुरुवार को एक राष्ट्रीय पक्षी मोर गंभीर रूप से घायल हो गया। ग्रामीणों ने इसकी सूचना बौंली वन विभाग को दी, सूचना पाकर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची।

राजगढ़ व गोविन्दगढ़ रेलवे स्टेशन का हुआ वर्चुअल लोकार्पण

अलवर/राजगढ़। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बीकानेर के देशनोक से रेल अवसंरचना को निरंतर बेहतर बनाने की अपनी प्रतिबद्धता के अमृत स्टेशनों का वर्चुअली उद्घाटन के अंतर्गत 13.10 करोड़ की लागत से अलवर के राजगढ़ रेलवे स्टेशन व 4.26 करोड़ रूपए की लागत से गोविन्दगढ रेलवे स्टेशन पर कराए गए पुनर्विकास कार्य का उद्घाटन किया। इस अवसर पर राजगढ़ रेलवे स्टेशन के उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री एवं अलवर सांसद भूपेन्द्र यादव मौजूद रहे।

इस मौके पर केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने देश में रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास के लिए संचालित अमृत भारत स्टेशन योजना में अलवर के राजगढ व गोविन्दगढ रेलवे स्टेशन का चयन कर विकास कार्य कराए जाने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार

लोकार्पण के अवसर पर उपस्थित केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव, रेलवे मंडल के अधिकारी व जनप्रतिनिधि।

व्यक्त करते हुए क्षेत्रवासियों को बधाई दी और कहा राजगढ व गोविन्दगढ स्टेशन को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया गया है। इन विकास एवं पुनर्निर्माण कार्यों से यात्रियों को आधुनिक व बेहतर सुविधाएं मिलेगी।

उन्होंने खुशी जाहिर की कि दोनों स्टेशन पर कराए गए विकास कार्यों में स्थानीय कला व यात्रियों की सुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। उन्होंने कहा कि क्षेत्रवासियों की

■ अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत राजगढ़ व गोविन्दगढ़ रेलवे स्टेशन पर हुए पुनर्निर्माण कार्यों के लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान मंत्री भूपेंद्र यादव रहे मौजूद

मांग के अनुरूप राजगढ स्टेशन पर और अधिक ट्रेनों का ठहराव कराने की दिशा में सकारात्मक कार्य किया जाएगा।उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की प्रेरणा से क्षेत्र में शिक्षा और खेल को बढावा देने के कार्य किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि स्टेशन को आधुनिक स्वरूप मिल गया है अब इसे हरा-भरा करने के लिए नगर पालिका से समन्वय कर पौधारोपण करावे। उन्होंने ईआरसीपी (रामसेतु) योजना की नई डीपीआर में राजगढ क्षेत्र को जोडने पर प्रधानमंत्री मोदी व मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार जताया।

इस अवसर पर जिला प्रमुख बलबीर सिंह छिल्लर, राजगढ-लक्ष्मणगढ विधायक मांगीलाल मीणा, पूर्व केबिनेट मंत्री हेमसिंह भडाणा, सरस डेयरी के पूर्व चेयरमैन बन्नाराम मीणा, नगर पालिका के चेयरमैन सतीश दुहानिया, जिलाध्यक्ष अशोक गुप्ता, पूर्व विधायक बनवारी लाल सिंघल, संजय नरुका, लक्ष्मी नारायण गुप्ता,ऋषिराज शर्मा, विष्णु शर्मा, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक जयपुर पूजा मित्तल, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी डॉ. हीरा अरोड़ा एवं सहित प्रबुद्ध व्यक्ति एवं बडी संख्या में आमजन मौजूद रहे।

अभिरुचि शिविर का आयोजन जारी

कोटपूतली। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड स्थानीय संघ कोटपूतली के तत्वाधान में विगत 17 मई से ग्रीष्मकालीन कौशल विकास एवं अभिरुचि शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर आगामी 28 जून तक निरन्तर जारी रहेगा। यह शिविर बच्चों के लिये ना केवल गर्मियों की छुट्टियों को रचनात्मक ढ़ंग से बिताने का माध्यम है, बल्कि उनकी प्रतिभा, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता को निखारने का सुनहरा अवसर भी है।

शिविर में डांस, जूड़ो-कराटे, कम्प्यूटर, पेंटिंग, शतरंज, मेहंदी, ब्यूटीशियन, सिलाई, योग व इंग्लिश स्पोकन जैसी रोचक और जीवनोपयोगी गतिविधियों का प्रशिक्षण विशेषज्ञ प्रशिक्षकों द्वारा दिया जा रहा है। शिविर का मूल मंत्र प्रतिभा निखारो, आत्मबल बढ़ाओ है। प्रातरू 07.30 से 11.30 बजे तक चलने वाले इस शिविर में बच्चों को समय का सदुपयोग करना और अनुशासन में रहना सिखाया जा रहा है।

किडनी के रोगियो को नही मिल रहा सरकारी योजनाओं का लाभ

■ पच्चीस से तीस हजार रूपये प्रति सप्ताह खर्च कर जयपुर व केकडी मे उपचार करवाने पर मजबूर हुये मालपुरा के दर्जनो किडनी के मरीज, छः माह पूर्व किया गया था मशीन डायलिसीस का इंस्टालेशन, नेफ्रोलॉजिस्ट के अभाव मे गंभीर रोगियो को नही मिल रहा सरकार की योजनाओं का लाभ

मालपुरा । राजस्थान मे तीव्र गति से बढ रहे किडनी के मरीजो को सरकारी अस्पताल मे मुफ्त उपचार की योजना को लेकर राज्य सरकार द्वारा मालपुरा जिला अस्पताल मे भेजी गई लाखो रूपये की डायलिसीस मशीन बीते एक साल से बंद कमरे मे धुल चाट रही है तो चिकित्सा विभाग की घोर लापरवाही के चलते मालपुरा व टोडारायसिंह क्षेत्र के दर्जनो मरीज प्रति सप्ताह 25 से 3० हजार रूपये खर्च कर जयपुर व केकडी मे डायलिसीस करवाने का मामला आया सामने। राजस्थान सरकार एवं चिकित्सा विभाग द्वारा प्रदेश के सरकारी अस्पतालो मे किडनी के गंभीर मरीजो को निःशुल्क डायलिसीस उपचार की सुविधा मुहैया करवाने का दावा कर सीएचसी लेवल के सभी अस्पतालो मे अनुमानित 45 लाख रूपये से अधिक कीमत की डायलिसीस मशीन, आरो सिस्टम व अन्य उपकरण भेजे गये थे। मालपुरा जिला अस्पताल मे भी एक वर्ष पूर्व डायलिसीस की मशीन अस्पताल प्रभारी के सुपुर्द की गई थी। तकरीबन छः माह पूर्व सम्पूर्ण राजस्थान मे इनडायलिसीस मशीनो की मॉनिटरिंग कर रही रियल प्रोजेक्ट कम्पनी बॉम्बे के एक्सपर्ट ने मालपुरा जिला अस्पताल मे मशीन इंस्टोलेशन कर प्रभारी को सुपुर्द की गई। तकरीबन दो माह पूर्व इस मशीन को चलाने के लिये टेक्निशियन अरबाज नकवी की नियुक्ति की गई। तो टोडारायसिंह उपजिला अस्पताल मे भी टेक्निशियन नियुक्त किया गया।

केबिनेट मंत्री कन्हैयालाल चौधरी के मालपुरा विधानसभा क्षैत्र मे मालपुरा व टोडारायसिंह दोनो ही सरकारी अस्पतालो मे मिली यह लाखो रूपयो की डायलिसीस मशीने नेफ्रोलॉजिस्ट के अभाव मे या फिर चिकित्सा विभाग के जिला अधिकारी एवं स्थानीय अधिकारी की निष्क्रियता के चलते बंद कमरे मे धुल चाट रही है। मालपुरा उपखण्ड क्षैत्र से लगभग दो दर्जन से अधिक किडनी की बिमारी से ग्रसित मरीज सप्ताह मे तीन दिन यूं कहे की महिने मे बारह दिन जयपुर व केकडी जाकर उपचार करवाने पर विवश हो रहे है। पिडित किडनी के रोगियो ने बताया कि एक बार डायलिसीस करवाने के लिये 32०० रूपये फीस, 3००० रूपये गाडी खर्च, 3०० रूपये डॉक्टर फीस व हजार रूपये अतिरिक्त चार्ज उठाना पड रहा है ऐसे मे प्रत्येक मरीज प्रतिमाह 8० से 9० हजार रूपये का आर्थिक भार उठाकर डायलिसीस करवाने पर मजबूर है। लाखो रूपयो की सरकारी मशीनरी व सरकार की महत्वपूर्ण योजना का लाभ किडनी के रोगियो को मालपुरा व टोडारायसिंह सरकारी चिकित्सालयो मे नही मिल रहा है। मालपुरा जिला अस्पताल प्रभारी डॉ. कैलाश साम्भरिया ने बताया कि अस्पताल के बडे वार्ड मे डायलिसीस मशीन, आरो प्लांट व दो बेड लगाये गये है।

'महिला सशक्तिकरण के लिए लक्ष्यानुसार प्रगति सुनिश्चित करें'

अलवर। जिला कलेक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने सचिवालय स्थित कलक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक लेकर बेटी-बचाओ, बेटी-पढ़ाओ, जिला महिला समाधान समिति, वन स्टॉप केंद्र प्रबंधन समिति तथा

■ बैठक में बेटी-बचाओ, बेटी-पढ़ाओ, जिला महिला समाधान समिति, वन स्टॉप केंद्र प्रबंधन समिति तथा जिला प्रशासन के नवाचार अलवर शक्ति अभियान की गई समीक्षा।

जिला प्रशासन के नवाचार अलवर शक्ति अभियान की समीक्षा कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

जिला कलेक्टर ने समीक्षा बैठक में निर्देशित किया कि महिला सशक्तिकरण के लिए संबंधित विभाग आपसी समन्वय से कार्य करते हुए योजनाओं की धरातल

कलक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक लेते जिला कलेक्टर डॉ अर्तिका शुक्ला।

पर क्रियान्वित सुनिश्चित करें। उन्होंने लाडो प्रोत्साहन योजना एवं प्रधानमंत्री मातृत्व वंदन योजना सहित अन्य योजनाओं की बिंदुवार समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को पात्र महिला लाभार्थियों का शत-प्रतिशत पंजीकरण कर उनको लाभान्वित करवाने के निर्देश दिए।

उन्होंने सीएमएचओ को निर्देशित किया कि शिशु लिंगानुपात (एसआरबी) सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाएं, साथ ही पीसीपीएनडीटी एक्ट के तहत डिकॉय ऑपरेशन एवं सोनोग्राफी केंद्र की जांच करें। मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया कि जिले के सभी राजकीय विद्यालयों में शौचालय क्रियाशील रहे, साथ ही जीर्णशीर्ण शौचालयों की मम्मत आदि कार्य करावे। महिला अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक को निर्देशित किया कि महिलाओं एवं एनफोर्समेंट एजेंसीज को जेंडर संबंधी कानूनी प्रावधानों की विस्तृत जानकारी देने के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाए, जिसमें पोक्सो एक्ट, दहेज प्रतिषेध अधिनियम, पीसीपीएनडीटी एक्ट, घरेलू हिंसा अधिनियम व लैंगिक उत्पीड़न रोकथाम एक्ट इत्यादि के बारे में विस्तार पूर्वक अवगत करवाया जाए।

उन्होंने वन स्टॉप सेंटर की कार्यप्रणाली एवं दर्ज होने वाले केसों की वस्तुस्थिति का फीडबैक लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने निर्देशित किया कि कार्यस्थल

10 करोड़ की नॉन पेचेवल सड़कों के नवीनीकरण की सौगात मिली

पावटा। विराटनगर विधानसभा क्षेत्र को विकास की दिशा में बड़ी सौगात मिली है। क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड के निरंतर प्रयासों से उनकी अनुसंशा पर राजस्थान के लोक कल्याणकारी बजट घोषणा 2025- 26 के अंतर्गत राजस्थान सरकार द्वारा 10-10 करोड़ रूपये प्रस्तावित किये गए है जिनमे से 5 करोड़ की नॉन पेचेवल एवं 5 करोड़ की मिसिंग लिंक सड़कों का निर्माण कार्य प्रस्तावित है। 10 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाली 23 नॉन पेचेबल और मिसिंग लिंक सड़कों के निर्माण कार्यों को सैद्धांतिक मंजूरी प्रदान की गई है। इस स्वीकृति से विराटनगर विधानसभा क्षेत्र के साथ-साथ ग्रामीण इलाकों को भी जर्जर या अनुपस्थित सड़कों से मुक्ति मिलेगी और आवागमन सुगम होगा। यह स्वीकृति राजस्थान सार्वजनिक निर्माण विभाग के माध्यम से दी गई है और संबंधित सड़कों पर जल्द ही निर्माण कार्य शुरू किया जाएगा। इनमें नॉन पेचेबल सड़कों में बागावास चौरासी से परमानन्द मन्दिर, नवरंगपुरा मेड रोड से जाटों की ढाणी, अलवर रोड से सूरपुरा, जसवंतपुरा रोड से गौतमनगर, जाजें कलां से सांतवास, कल्याणपुरा रोड से सेढूसिंह की ढाणी, भांकरी से छानी की ढाणी, अम्बेडकर नगर से ढाणी थालोड़ा, निंझर से नीमोरी, नवोदय विद्यालय रोड से ढाणी थालोड़ा, रामावतार बराला के मकान के सामने से नागाजी मंदिर, बद्री सैनी के मकान तक प्रागपुरा, छापुडा खुर्द से खटकड़ की ओर सीमा तक, पंचायत भवन जवानपुरा से राजीव गाँधी पाठशाला सेवदों की ढाणी तक, स्वामियों की ढाणी से बडनगर वाया किशनसिंह की कुई व मिसिंग लिंक सड़कों के तहत सूरपुरा स्कूल से ब्रहाम्णों का मोहल्ला, संपर्क सड़क बडनगर से भांकरी, मालीराम के मकान से लेकर जवानपुरा रोड तक, जाजें कलां सीमा से लीलों का बास , एमडीआर 251भांकरी से ढाणी राठी किशन राठी व बद्री धनकड़ तक, एमडीआर 251 भांकरी से लेकर भोयता वाली ढाणी, निर्वाला वाली ढाणी तक, जसवंत पुरा रोड से ढाणी करनी सागर, जसवंतपुरा रोड से ढाणी पीरावाली, एमडीआर 251 से देव का जोहडा होते हुए पांचुडाला रोड तक सड़कों का निर्माण कार्य शुरू होगा विधायक कुलदीप धनकड ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा व उपमुख्यमंत्री एवं सार्वजानिक निर्माण विभाग मंत्री दिया कुमारी का हार्दिक आभार आभार जताते हुए कहा कि, यह मंजूरी मुख्यमंत्री व उप मुख्यमंत्री की विकासपरक सोच का प्रमाण है। इससे विराटनगर विधानसभा क्षेत्र के आमजन को राहत मिलेगी।

तिरंगा यात्रा में उमड़ा देशभक्ति का सैलाब, जयकारों से गूंज उठा कस्बा

चाकसू। भारतीय सेना के तीनों अंगो द्वारा संयुक्त रूप से चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर की सफलता को लेकर गुरुवार को कस्बे में भाजपा की ओर से आमजन के सहयोग से क्षेत्रीय विधायक रामावतार बैरवा के नेतृत्व में तिरंगा यात्रा निकाली गई।इस तिरंगा यात्रा में देशभक्ति का अद्भुत नज़ारा देखने को मिला। भारत माता की जय और वंदे मातरम् के नारों से पूरा क्षेत्र गूंज उठा। डीजे एवं बैंड-बाजा पर देशभक्ति के तराने, यात्रा में शामिल भाजपा पदाधिकारियों कार्यकर्ताओं जनप्रतिनिधियों महिलाओं एवं किशोरियों के अलावा युवाओं के हाथों में लहराता तिरंगा, भारत माता के जयघोष संपूर्ण वातावरण को देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत कर रहे थे। मुख्य बाजार में जगह जगह ठंडे पानी की व्यवस्था पुष्प वर्षा का आयोजन रहा। यात्रा का समापन राधावल्लभ मंदिर पर भव्य आरती के बाद राष्ट्र गान के साथ हुआ।

कार्यक्रम का नेतृत्व कर रहे

चाकसू में मुख्य बाजार से विधायक के नेतृत्व में निकाली तिरंगा यात्रा।

विधायक रामावतार बैरवा ने कहा कि हमारे वीर जवानों की कुर्बानी कभी व्यर्थ नहीं जाएगी। देश पर अगर किसी भी आतंकी संगठन या फिर उन्हें पनाह देने वाले देश ने आंख उठाई, तो उसका मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। आतंकवादियों ने पहलगांव में कायरतापूर्ण तरिके से मां, बहनों का

■ भाजपा की ओर से आमजन के सहयोग से क्षेत्रीय विधायक रामावतार बैरवा के नेतृत्व में तिरंगा यात्रा निकाली

सिंदूर उजाड़ा ,उसका बदला भारतीय जवानों ने चार दिन में ही ले लिया, पाकिस्तान घुटनों पर आ गया। भाजपा नेता एवं पूर्व कृषि मंडी अध्यक्ष कैलाश शर्मा ने कहा कि हमारे सैनिकों का शौर्य, पराक्रम और बलिदान हमें गर्व से भर देता है। उन्होंने आगे कहा कि यह तिरंगा सिर्फ एक झंडा नहीं, बल्कि हमारे जज्बे, एकता और राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है। इसको लेकर हम हर घर, हर दिल तक देशभक्ति की भावना पहुंचाना चाहते हैं

इस दौरान क्षेत्रवासी भी बड़ी संख्या में तिरंगा लेकर शामिल हुए और देशभक्ति गीतों पर झूमते रहे। कार्यक्रम में भाजपा पार्टी के कई नेता और कार्यकर्ता शामिल थे।

नवनीत वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष पद पर मनोनीत

देवली। धाकड़ महासभा ने देवली निवासी नवनीत नागर को वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष पद पर मनोनीत किया । इसी प्रकार धाकड महासभा ने सूरज मल को जिला अध्यक्ष और हंसराज को मंत्री पद पर नियुक्त किया है। महासभा के रामेश्वर प्रसाद धाकड़ ने जानकारी में बताया कि धाकड महासभा ने महासभा के राजस्थान इकाई कार्यकारिणी में देवली निवासी नवनीत नागर को प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष,और सूरजमल धाकड़ को टोंक जिला अध्यक पद पर नियुक्त किया गया है। धाकड़ महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेंद्र नागर ने राजस्थान प्रदेश कार्यकारिणी का गठन करते हुए। इसी क्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने नवनीत नगर को राजस्थान प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपी है। और सूरजमल धाकड़ को टोंक जिला अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया है । धाकड महासभा के राजस्थान अध्यक्ष इंदर सिंह धाकड़ ने इस अवसर पर कहा कि महासभा ने राजस्थान प्रदेश मैं 15 जिला अध्यक्षों को नियुक्त किया गया है।

सार-समाचार

गौवंश बचाओ महा रैली 26 मई को

फुलेरा । कस्बे सहित आस पास के क्षेत्रों वर्तमान समय में हो रही गौवंश की दुर्दशा को देखते हुए सांभर पंचायत समिति सदस्य एवं राजस्थान जाट महासभा फुलेरा तहसील के अध्यक्ष धन्ना लाल नोदल ने आगामी 26 मई को जोबनेर क्षेत्र में "गौवंश बचाओ" महारैली का आ ान किया है। इसके लिए पोस्टर का विमोचन किया गया है। इस दौरान नोदल ने बताया कि पूर्व में भी नगर पालिका प्रशासन, तहसील एवं उपखण्ड अधिकारी को गौवंश की दुर्दशा के बारे में अवगत करवाया था। परन्तु प्रशासन की ओर से इस पर कोई कार्यवाही नहीं की गई है। इसको लेकर उन्होंने बताया कि 26 मई को जन सहयोग से जोबनेर क्षेत्र के मुख्य मार्गों, मौहल्ले एवं सरकारी कार्यालयों के समक्ष से महारैली निकाल कर गोवंश बचाओ से अवगत करवाया जाएगा। इसके साथ ही गौवंश के बिगड़ रहे हालत पर अंकुश लगाने की मांग को लेकर सामूहिक रूप से उपखण्ड अधिकारी को एक ज्ञापन भी दिया जायेगा। इसके अलावा नोदल ने बताया कि यदि ज्ञापन के बाद भी प्रशासन की कार्यवाही और गौवंश के हालात में सुधार नहीं हुआ तो ग्रामीणों के सहयोग से गौवंश को बचाने के लिए धरना दिया जाएगा।

आरटीओ टीम पर अज्ञात हमलावरों ने की पत्थरबाजी

कोटपूतली। कस्बे से होकर गुजर रहे दिल्ली-जयपुरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर निकटवर्ती ग्राम पनियाला मोड़ के पास बुधवार अल सुबह वाहनों की जाँच कर रहे तीन मोटर व्हीकल इंस्पेक्टरों पर अज्ञात हमलावरों ने पत्थरबाजी कर दी। हमले में अधिकारियों की सरकारी गाड़ी का मुख्य शीशा क्षतिग्रस्त हो गया और अधिकारी मौके से भाग कर अपनी जान बचाई। उक्त घटना बुधवार तडके करीब 04 बजे ग्राम पनियाला के हीरामल मंदिर के पास की बताई जा रही है। मामले में आरटीओ विभाग के कर्मचारी मानवेन्द्र डोई, श्रीचंद व अनिल बसवाल ने जानकारी देते हुये बताया कि तीनों आरटीओ कर्मी कोटपूतली-बहरोड़ जिले में प्रवर्तन कार्य के लिये विगत 20 मई की रात्रि करीब 10 बजे से 21 मई प्रातरू 06 बजे तक ड्यूटी पर थे। ड्यूटी के दौरान उन्होंने मंदिर के पास एक ओवरलोड वाहन देखा और जाँच के लिए रुके ही थे कि तभी मंदिर में आरती शुरू हो गई और अचानक वहाँ से तेज आवाजें और पत्थरबाजी शुरू हो गई। हमले के दौरान वाहन की नंबर प्लेट पर मैल होने से उसका पंजीकरण क्रमांक भी स्पष्ट नहीं हो पाया। इस घटना में सरकारी वाहन आरजे 14 यूबी 8595 (डीएफएस 202) का मुख्य शीशा टूट गया, जिससे सरकारी संपत्ति को नुकसान और राजकार्य में बाधा उत्पन्न हुई। पुलिस को दिये गये पत्र में अज्ञात हमलावरों की पहचान कर सख्त कार्यवाही की मांग की गई है।

निरमा ने 90.80अंक हासिल कर रचा कीर्तिमान

चाकसू। संकटों की आँधी आई, घर के दीप बुझे, लेकिन एक बेटी ने हौसले की लौ जलाए रखी। उपखंड क्षेत्र चाकसू के भूगड़ियावास गाँव की बेटी निरमा गुर्जर ने 12वीं बोर्ड परीक्षा (विज्ञान वर्ग) में 90.80 अंक प्राप्त कर न केवल अपने विद्यालय, बल्कि पूरे गाँव और समाज का नाम गर्व से ऊँचा कर दिया है।निरमा के पिता हरजीराम गुर्जर पिछले एक वर्ष से अधिक समय से एक सड़क दुर्घटना के चलते कोमा में हैं और आज भी उनका इलाज चल रहा है। परिवार के इस सबसे बड़े सहारे के यूँ असहाय हो जाने के बाद, मुश्किलों का अंत नहीं हुआ। उसी दौरान निरमा की छोटी बहन एक हादसे में पेड़ से गिरकर रीढ़ की हड्डी तुड़वा बैठी। घर में आर्थिक तंगी, मानसिक तनाव, और भावनात्मक संघर्ष - सब कुछ एकसाथ हुआ, लेकिन निरमा ने न हालात को कोसा, न हिम्मत छोड़ी। माँ कैला देवी, जो एक साधारण गृहिणी हैं, ने भी तमाम विपत्तियों के बीच बेटी का हौसला बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।निरमा आदर्श बाल विद्या मंदिर, शिवदासपुरा, चाकसू की छात्रा रही है। स्कूल के शिक्षकों के अनुसार, वह हमेशा से मेहनती और आत्मविश्वासी रही। उसने अपनी सफलता का श्रेय अपने गुरुजनों, माता-पिता और पूरे परिवार को दिया।

कक्षा 12 के बोर्ड परिणामो मे मालपुरा की बेटियों ने लहराया परचम

मालपुरा । गुरूवार को माध्यमिक शिक्ष बोर्ड द्वारा जारी कक्षा 12 के कलां वर्ग, वाणिज्य व विज्ञान वर्ग परीक्षा परिणाम जारी किये गये जिनमें मालपुरा की बेटियों ने किया कमाल। बोर्ड परिणामो पर नजर डाले तो राउमावि अविकानगर की छात्रा कविता पुत्री बाबूलाल बैरवा ने 98.20 प्रतिशत अंक प्राप्त किये है। राउमावि मालपुरा से विष्णु गुर्जर ने 97.80 प्रतिशत, तिलक बाल विद्यापीठ मालपुरा की मोनिका चौधरी व पार्थ जैन ने 97 प्रतिशत, तिलक बाल निकेतन दूदू रोड मालपुरा से कृष्णा चौधरी ने 96.80 प्रतिशत, हॉलिस्टिक स्कुल मालपुरा से गर्विता जैन ने 95.20 प्रतिशत,बालिका आदर्श विद्या मंदिर मालपुरा से पलक साहू ने 96.40 व भूमिका सोनी ने 92.60 प्रतिशत, राधिका शर्मा ने 95.00 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय व परिवारजनो का नाम रोशन किया। वही राउमावि कांटोली का शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम रहा। तो कोमल गुर्जर ने 83.40 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय मे अव्वल रही। सभी होनहार बेटियों को बधाई देने वालो का तांता लगा रहा।

आशीष ने 96.20 प्रतिशत अंक प्राप्त कर किया नाम रोशन

चाकसू। कस्बे स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चाकसू के छात्र आशीष स्वामी ने कला वर्ग में 96.20 अंक प्राप्त कर ब्लॉक में प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का किया नाम रोशन स्थानीय विद्यालय के नोडल प्रधानाचार्य रामलाल मीणा ने बालक आशीष स्वामी को बधाई प्रेषित की है एवं समस्त स्टाफ ,कक्षा अध्यापक, विषयाध्यापकों को कड़ी मेहनत के लिए धन्यवाद देते हुए शुभकामनाएं प्रदान की है कृषि विज्ञान एवं विज्ञान विषय का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा है कृषि विज्ञान में छात्रा प्रियंका मीणा ने 92.60 प्रतिशत अंक प्राप्त कर ब्लॉक में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है वहीं कस्बा स्थित राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्रा पलक सैनी ने वाणिज्य वर्ग में 88.40 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

कार्यशाला का आयोजन

अलवर। पुण्यशलोका रानी अहिल्याबाई होल्कर की 300 वी जयंती के अवसर पर अम्बेडकर नगर स्थितभाजपा जिला कार्यालय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में नगर से पूर्व विधायक अनीता गुर्जर उपस्थित रहे कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए अनीता गुर्जर ने बताया कि माता अहिल्याबाई होलकर का जीवन सादगी पूर्ण उच्च आदर्श वाला था जिन्होंने सदैव वंचित वर्ग को मुख्य धारा मे लाने का कार्य किया वह सनातन धर्म को जीवित रखते हुए काशी विश्वनाथ मंदिर, सोमनाथ मंदिर का पुन उद्धार कराया जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि यह जन्म जयंती कार्यक्रम मंडल स्तर पर आयोजित होगा जो 31 मई तक जारी रहेगा।

पूर्व बॉक्सिंग कोच जी.एस संधू से मुलाकात की

पावटा। फुटबॉल कोच हर्षवर्धन शर्मा व यशवर्धन शर्मा दोनों जुड़वा भाइयों ने द्रोणाचार्य अवार्ड व लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित भारतीय टीम के पूर्व बॉक्सिंग कोच जी.एस संधू से मुलाकात कर खेलो के बारे मे जानकारी प्राप्त की जी.एस संधू ने कहा कि अच्छे कोच द्वारा तैयार किए खिलाडी कभी पीछे नहीं रहते। खिलाड़ी की जीत में कोच की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। तैरने के लिए पानी में जाना होता है, वैसे ही सफलता के लिए कड़ी मेहनत की जरूरत रहती है।

दिल्ली कैपिटल्स के सभी फैंस से सॉरी- आपकी तरह ही मैं भी इस सीजन के बाद वाले आधे हिस्से से परेशान रहा। शुरुआत जितनी बेहतरीन रही अंत उतना ही बुरा रहा।
- पार्थ जिंदल

दिल्ली कैपिटल्स के सह-मालिक, अपने प्रदर्शन से निराश फैंस से माफी मांगते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶ ऋषभ पंत

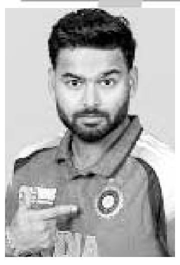

आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन में ऋषभ पंत सबसे महंगे खिलाड़ी के तौर पर बिके। तब से ही वह चर्चाओं में हैं। लखनऊ सुपर जांयट्स ने उन्हें 27 करोड़ रुपये में खरीदा और टीम का कप्तान भी बनाया। लेकिन लखनऊ उम्मीद के अनुसार प्रदर्शन नहीं कर पाई और प्लेऑफ से बाहर हो गई। वहीं आईपीएल 2025 में पंत काप्रदर्शन भी निराशाजनक रहा। जिसके बाद अटकलें लगने लगी कि पंत को एलएसजी से बर्खास्त कर दिया है जिस पर अब खुद पंत ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने लिखा कि, मैं समझता हूं कि फेक न्यूज ज्यादा चर्चा का विषय बनती हैं।

क्या आप जानते हैं ?... पंजाब और दिल्ली ने आपस में कुल 33 मैच खेले हैं। दोनों में कांटे की टक्कर रही है।पीबीकेएस ने 17 जबकि डीसी ने 16 मैचों में जीत दर्ज की है।

जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में अभ्यास सत्र के दौरान प्रेक्टिस करते हुए पंजाब किंग्स के खिलाड़ी।

दिल्ली कैपिटल्स के खिलाड़ियों के साथ अभिनेत्री महिमा चौधरी जयपुर पहुंची।

अंडर-19 नन्द सिंह मेमोरियल क्रिकेट लीग

शोएब का शानदार शतक, लक्ष्य एकेडमी को हरा सिग्नेचर एकेडमी फाइनल में

जयपुर, 22 मई। चंबल स्पोर्ट्स क्लब द्वारा आयोजित 17वी राज्य स्तरीय अंडर - 19 नन्द सिंह मेमोरियल क्रिकेट लीग में आज खेले गए मैच में सिग्नेचर क्रिकेट एकेडमी ने लक्ष्य क्रिकेट एकेडमी को 111 रन से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए सिग्नेचर क्रिकेट एकेडमी ने शोएब खान ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 137 रन शानदार शतक बनाया। रक्षित श्रीमाल 85 रन अमित भारद्वाज 36 रन, गगनदीप आरी 22 रन, संजय माहवर 16 रन नाबाद के सहयोग से 45 ओवर में 9 विकेट पर 343 रन बनाए लक्ष्य की ओर से गेंदबाजी करते हुए मोहम्मद अनस , शौर्य शक्तावत ने 3-3 विकेट लिए। शुभंकर त्यागी , अक्षित शर्मा , दीपेश ने 1-1 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करते हुए लक्ष्य क्रिकेट एकेडमी ने सिग्नेचर एकेडमी की शानदार गेंदबाजी के सामने धनंजय शर्मा 57 , अक्षय शर्मा नाबाद 46 नील सिंगोदिया 45 ,मोहम्मद अनस 22 , दीपेश 19, रिंकू कुमार 13 रनों के सहयोग से 36 ओवर में 232 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। सिग्नेचर की ओर से गेंदबाजी करते हुए विशाल सिंघानिया, , संजय महावर ने 3-3 विकेट , विकास शर्मा , देव नारायण यादव 2-2 विकेट लिए । मैच के मैन ऑफ़ द मैच शोएब खान रहे ।

अर्जित गुप्ता की पारी से जीती श्री गंगानगर, पूरव शर्मा का पंजा

जयपुर, 22 मई। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित एकदिवसीय सीरीज के तहत खेले गए तीसरे मैच में श्री गंगानगर ने जयपुर बी टीम को 2 विकेट से हराया। के एल सैनी स्टेडियम पर श्री गंगानगर ने टॉस जीतकर पहले जयपुर को बल्लेबाजी करने के लिए आमंत्रित किया। जयपुर बी टीम ने आर्यमन कटारिया के 95 रन, अभिजीत तोमर के 12 रन, विवेक सैनी के 12 रन, आदित्य झाला के 45 रन, दक्ष कासलीवाल के 20 रन व आर्यन जैन के 10 रन से 39.3 ओवर में 226 रन बनाए। श्री गंगानगर के लिए हिमांशु ने 30 पर 5, धनंजय ने 15 पर 2, मंथन, अजय चारण व हितेश ने एक - एक विकेट लिया। जवाबी पारी में श्री गंगानगर की टीम ने ओशनिक ग्रोवर के नाबाद 57 रन, अर्जित गुप्ता के 76 रन, हितेश के 36 रन व तेजेंद्र के 20 रन नाबाद से 33.3 ओवर में 8 विकेट पर 228 रन बनाकर मैच जीत लिया। जयपुर बी टीम के लिए पूरव शर्मा ने 38 पर 5, आदित्य झाला ने 38 पर 2, दियांश ने 56 पर 1 विकेट लिया।

दीक्षा ने तैराकी में व मणिपुर, नागालैंड ने पेंचक सिलाट में जीते स्वर्ण पदक

दीव, 22 मई। महाराष्ट्र की दीक्षा यादव ने पहले खेलो इंडिया बीच गेम्स में गुरुवार को ताकत और सहनशक्ति का प्रदर्शन करते हुए ओपन सी तैराकी प्रतियोगिता में अपना दूसरा स्वर्ण पदक जीता। वहीं पेंचक सिलाट में मणिपुर, नागालैंड और जम्मू-कश्मीर ने स्वर्ण पदक अपने नाम किये। आज यहां समुद्र में हुई तैराकी प्रतियोगिता पांच किलोमीटर की रेस को 19 वर्षीय दीक्षा एक घंटा 10 मिनट 12 सेकंड पूरा कर स्वर्ण पदक जीता और वह अपनी राज्य की ही पूर्वा गावड़े (1:10:25) से सिर्फ 13 सेकंड आगे रहीं। कर्नाटक की आसरा आर. सुधीर (1:10:29) ने कांस्य पदक हासिल किया। इससे पहले दीक्षा ने बुधवार को 10 किलोमीटर रेस में पहला स्थान हासिल किया था। पुरुषों की रेस भी बेहद रोमांचक रही, जिसमें कर्नाटक के द्रुपद रामकृष्ण ने 1 घंटा 6 मिनट 46 सेकंड में फिनिश लाइन पार कर स्वर्ण पदक जीता। पेंचक सिलाट में गुरुवार को दादरा और नगर हवेली एवं दमन और दीव और मणिपुर ने अपने सभी चार स्वर्ण पदक इसी खेल में जीते हैं। महाराष्ट्र, जो इस समय पदक तालिका में सबसे ऊपर है, ने ओपन वाटर स्विमिंग और पेंचक सिलाट दोनों में दो-दो स्वर्ण पदक जीते हैं।

किदांबी श्रीकांत मलेशिया मास्टर्स के क्वार्टरफाइनल में

बुकित जलील, 22 मई। भारत के स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी किदांबी श्रीकांत ने गुरुवार को मलेशिया मास्टर्स 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट के दूसरे राउंड में जीत दर्जकर अगले दौर में जगह बनाई। वहीं मिश्रित युगल में तनीषा क्रास्टो और ध्रुव कपिला की जोड़ी ने भी क्वार्टरफाइनल में प्रवेश किया। आज यहां एक्सियाटा एरिना केएल स्पोर्ट्स सिटी स्टेडियम में 59 मिनट तक चले मुकाबले में किदांबी ने आयरलैंड के न्हाट गुयेन को सीधे गेम में 23-21, 21-17 हराकर अगले दौर में जगह बनाई। किदांबी ने पहले गेम की शुरुआत से ही अपना दबदबा कायम रखते हुए अपनी बढ़त बनाए रखा। न्हाट ने किदांबी को कड़ी टक्कर दी, लेकिन आखिर में किदांबी ने अंक अर्जित कर पहला गेम जीत लिया। दूसरे गेम में भी किदांबी ने आक्रामक खेल का प्रदर्शन जारी रखते हुए आयरलैंड के बैडमिंटन खिलाड़ी को हराकर क्वार्टरफाइनल में जगह बनाई।

रोमांचक मुकाबले में लखनऊ सुपर जायंट्स ने गुजरात टाइटंस को 33 रनों से हराया

अहमदाबाद 22 मई। मिचेल मार्श (117) और निकोलस पूरन (नाबाद 56) की आतिशी पारियों के बाद विलियम ओरूर्क (तीन विकेट), आवेश खान और आयुष बडोनी (दो-दो विकेट) की शानदार गेंदबाजी की बदौलत लखनऊ सुपर जांयट्स ने गुरुवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 65वें मुकाबले में गुजरात टाइटंस को 33 रनों से हरा दिया।

आज यहां गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल ने टॉस जीतकर लखनऊ सुपर जांयट्स का पहले बल्लेबाजी का न्यौता दिया। बल्लेबाजी करने उतरी लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए एडन मारक्रम मिचेल मार्श की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट लिये 91 रन जोड़े। 10वें ओवर में साई किशोर ने मारक्रम 24 गेंदों में (36) रन को आउटकर गुजरात को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये तीसरे बल्लेबाज निकोलस पूरन ने मिचेल मार्श के साथ दूसरे विकेट लिए 121 रनों की साझेदारी की। इन दोनों बल्लेबाजों ने गुजरात टाइटंस के गेंदबाजों की खूब खबर ली। 19वें ओवर की दूसरी गेंद पर अरशद खान ने शतकवीर मिचेल मार्श को आउटकर पवेलियन भेजा। मिचेल मार्श ने 64 गेंदों में 10 चौके और आठ छक्के लगाते हुए (117) रनों की पारी खेली। लखनऊ सुपर जायंट्स ने निर्धारित 20 ओवरों में दो विकेट पर 235 रन बनाकर आईपीएल का तीसरा सबसे बड़ा स्कोर खड़ा किया। निकोलस पूरन ने 27 गेंदों में पांच छक्के और चार चौके लगाते हुए (नाबाद 56) रन बनाये। कप्तान ऋषभ पंत छह गेंदों में (16)रन बनाकर नाबाद रहे। गुजरात टाइटंस के लिए साई किशोर और अरशद खान ने एक-एक विकेट लिये। 236 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी गुजरात टाइटंस के लिए साई सुदर्शन और शुभमन गिल की सलामी जोड़ी ने पहले विकेट के लिए 46 रन जोड़े। पांचवें ओवर में विलियम ओरूर्क ने साई सुदर्शन 16 गेंदों में (21) को आउटकर इस साझेदारी का अंत किया। आठवें ओवर में आवेश खान ने तेजी के साथ रन बना रहे कप्तान शुभमन गिल को आउटकर लखनऊ को दूसरी सफलता दिलाई। गिल ने 20 गेंदों में सात चौकों की मदद से (35) रन बनाये। गुजरात का तीसरा विकेट 10वें ओवर में जॉस बटलर 18 गेंदों में (33) रन के रूप में गिरा। उन्हें आकाश सिंह ने बोल्ड आउट किया। इसके बाद शरफेन रदरफोर्ड और शाहरुख खान शानदार बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए चौथे विकेट के लिए 86 रन जोड़े। 17वें ओवर की पहली गेंद पर विलियम ओरूर्क ने शरफेन रदरफोर्ड को आउटकर गुजरात के मैच आसानी से जीतने की उम्मीदों झटका दिया।

आईपीएल 2025 विजेता टीम को बीसीसीआई की तरफ से 20 करोड़ रुपये की प्राइज मनी मिलेगी

नई दिल्ली, 22 मई। आईपीएल 2025 अपने आखिरी पड़ाव पर है। कुछ ही दिनों में टूर्नामेंट का 18वां सीजन खत्म भी हो जाएगा। 3 जून को आईपीएल 2025 की विजेता टीम का भी फैसला हो जाएगा। इस साल खिताब जीतने वाली टीम को बीसीसीआई की तरफ से करोड़ों रुपये मिलेंगे। इस साल का टूर्नामेंट भारत-पाक के बीच तनाव की वजह से एक हफ्ते के लिए रद्द किया गया था। इसके बाद आईपीएल की फिर से शुरुआत हुई। पहले आईपीएल का फाइनल 25 मई को कोलकाता के ईडन गार्डन्स में खेला जाना था लेकिन अब ये मुकाबला अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा।

वहीं 3 जून को फाइनल मुकाबला जीतने वाली टीम को बीसीसीआई की तरफ से 20 करोड़ रुपये मिलेंगे, जो पिछले साल के बराबर है। वहीं रनर-अप टीम को 12.5 करोड़ रुपये मिलेंगे। जबकि तीसरे और चौथे स्थान पर रहने वाली टीम को 6.5 करोड़ रुपये दिए जाएंगे। इसके अलावा 5वें से 10वें पायदान पर रहने वाली टीम को कोई धनराशि नहीं दी जाएगी।

आईपीएल 2025 के प्लेऑफ में आरसीबी, पंजाब किंग्स, मुंबई इंडियंस और गुजरात टाइटंस ने जगह बना ली। इन्हीं चारों टीम में से कोई एक टीम इस साल के ट्रॉफी पर अपना कब्जा जमाएगी। वहीं प्लेऑफ की शुरुआत 29 मई से होगी। जहां चंडीगढ़ में पहला क्वालीफायर खेला जाएगा। इसके बाद 30 मई को चंडीगढ़ में ही एलिमिनेटर मुकाबला भी होगा। वहीं क्वालीफायर 2,1 जून को और फाइनल 3 जून को अहमदाबाद में होगा।

साइफर्ट अस्थायी रिप्लेसमेंट के रूप में आरसीबी में हुए शामिल

बेंगलुरु, 22 मई। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू (आरसीबी) ने न्यूजीलैंड के विकेटकीपर बल्लेबाज टिम साइफर्ट को जैकब बेथेल की जगह इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के लिये अपनी टीम में अस्थायी रिप्लेसमेंट के रूप में शामिल किया है।

आईपीएल की ओर से जारी विज्ञप्ति में बताया गया है कि साइफर्ट 24 मई से चयन के लिए उपलब्ध होंगे। साइफर्ट अधिकतम 26 मई को लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ में होने वाले मैच के लिए आरसीबी दल से जुड़ सकते हैं। वह फिलहाल पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) में कराची किंग्स के लिए खेल रहे हैं। साइफर्ट इससे पहले आईपीएल 2022 में दिल्ली कैपिटल्स के लिए दो मैच और कोलकाता नाइटराइडर्स के लिए 2021 में एक मैच खेल चुके हैं।

इंग्लैंड दौरे के लिए आयुष म्हात्रे को भारतीय अंडर-19 टीम की कप्तानी, वैभव सूर्यवंशी को मौका

नई दिल्ली, 22 मई। इंग्लैंड दौरे के लिए भारत की अंडर-19 टीम का ऐलान हो गया है। बीसीसीआई ने गुरुवार को 16 मेंबर्स स्क्वॉड का ऐलान किया। इस दौरे पर भारतीय टीम 24 जून से 23 जुलाई तक एक वॉर्म-अप, पांच वनडे और दो मल्टी-डे मैच खेलेगी। इस टूर के लिए 17 साल के आयुष म्हात्रे को भारतीय टीम की कमान दी गई है। वहीं 14 साल के वैभव सूर्यवंशी को भी टीम में जगह मिली है। वैभव और आयुष दोनों ने ही आईपीएल के इस सीजन में शानदार प्रदर्शन किया है।

भारत की इंग्लैंड दौरे के लिए अंडर-19 टीम आयुष म्हात्रे (कप्तान), अभिज्ञान कुंडू (उप-कप्तान और विकेटकीपर), वैभव सूर्यवंशी, विहान मल्होत्रा, मौल्यराजसिंह चावड़ा, राहुल कुमार, हरवंश सिंह (विकेटकीपर), आरएस अंबरीश, कनिष्क चौहान, खिलान पटेल, हेनिल पटेल, युद्धजीत गुहा, प्रणव राघवेंद्र, मोहम्मद एनान, आदित्य राणा, अनमोलजीत सिंह।

स्टैंडबाय: नमन पुष्पक, डी दीपेश, वेदांत त्रिवेदी, विकल्प तिवारी, अलंकृत रापोल (विकेटकीपर)।

संजय बांगर ने करुण नायर को बताया कोहली का रिप्लेसमेंट

नई दिल्ली, 22 मई। भारत के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने हाल ही में टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया। वह टीम इंडिया में नंबर-4 पर बल्लेबाजी करते थे। कोहली का चार नंबर पर बेस्ट रिप्लेसमेंट कौन होगा? इस पर लगातार चर्चा हो रही है।

केएल राहुल से लेकर शुभमन गिल तक के बारे में कयास लगाए जा रहे हैं। इस बीच टीम इंडिया के पूर्व बैटिंग कोच संजय बांगर ने चौंकाने वाला दावा किया है।दरअसल, बांगर ने राहुल या गिल को नहीं बल्कि करुण नायर को बेस्ट रिप्लेसमेंट बताया है। भारत को अगले महीने जून में पांच टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए इंग्लैंड दौरे पर जाना है। नायर लंबे समय से टीम इंडिया से दूर हैं। उन्होंने भारत के लिए आखिरी मैच 2017 में खेला था।

// टी-20 विश्व कप 2026 //

क्या अलग-अलग ग्रुप में होंगे भारत और पाकिस्तान ? अटकलों का दौर जारी

नई दिल्ली, 22 मई। भारत और श्रीलंका 2026 की पहली तिमाही में आईसीसी पुरुष 20 विश्व कप की मेज़बानी करेंगे। इन सबके बीच एक रिपोर्ट के अनुसार, 2024 टी-20 विश्व कप विजेता भारत और उनके कट्टर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान के एक ही समूह का हिस्सा होने की संभावना नहीं है।

यह बताया गया है कि आईसीसी आयोजनों में भारत-पाकिस्तान क्रिकेट के भविष्य पर 17 से 20 जुलाई तक सिंगापुर में होने वाले खेल की शासी संस्था के वार्षिक सम्मेलन में चर्चा की जाएगी। भारत और पाकिस्तान के बीच राजनीतिक तनाव ने उनके विश्व क्रिकेट मुकाबलों को सिर्फ़ आईसीसी टूर्नामेंट तक सीमित कर दिया है। हालाँकि, 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले और उसके बाद दोनों पड़ोसी देशों के बीच सैन्य टकराव के बाद, आईसीसी इवेंट्स में उनकी प्रतिद्वंद्विता के भविष्य को लेकर अटकलें लगाई जा रही हैं। दोनों टीमों को अगले वर्ष होने वाले टी-20 विश्व कप से शुरू होने वाले वैश्विक टूर्नामेंटों में एक साथ खेलने की संभावना नहीं है।

इंग्लैंड की महिला टीम ने विंडीज को आठ विकेट से हराया

कैंटरबरी, 22 मई। गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के बाद सोफिया डंकली (नाबाद 81) और हीथर नाइट (43) की बेहतरीन पारियों की बदौलत इंग्लैंड की महिला टीम ने वेस्टइंडीज को 21 गेंदे शेष रहते आठ विकेट से हरा दिया। सेंट लॉरेंस ग्राउंड में बुधवार की रात खेले गये मुकाबले में इंग्लैंड की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया।

बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज के लिए कप्तान हेली मैथ्यूज ने आखिर तक मोर्चा संभाले रखा। मैथ्यूज ने 67 गेंदों में 16 चौके और एक छक्का लगाते हुए (नाबाद 100) रनों की पारी खेली। इसके अलावा मैंडी मैंगरु (17) और शबीका गजनबी ने (11) रनों का योगदान दिया। वेस्टइंडीज के पांच बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक भी नहीं पहुंच सके। वेस्टइंडीज की टीम ने निर्धारित 20 ओवरों में सात विकेट पर 146 रनों का स्कोर खड़ा किया। इंग्लैंड की महिला टीम के लिए लॉरेन बेल ने दो विकेट लिये। लिंसी स्मिथ, एमिली आरलट और ईसी वोंग ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इसके बाद बल्लेबाजी करने उतरी इंग्लैंड के लिए डेनिएल वायट और सोफिया डंकली की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिये (51)रन जोड़े। छठें ओवर में जायडा जेम्स ने डेनिएल वायट (17) को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। इसके बाद मात्र पांच रन जोड़कर इंग्लैंड ने कप्तान नेट साइवर ब्रंट (शून्य) का विकेट गवां दिया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आयी हीथर नाइट ने सोफिया डंकली के साथ पारी संभाला और तेजी के साथ रन बटोरे। दोनों बल्लेबाजों के बीच 94 रनों की मैच विजयी अविजित साझेदारी हुई। इंग्लैंड की महिला टीम ने 16.3 ओवर में दो विकेट पर 150 रन बनाकर मुकाबला आठ विकेट से जीत लिया।

यूएई ने बंगलादेश को सात विकेट से हराया और सीरीज भी जीती

शारजाह, 22 मई। हैदर अली (तीन विकेट) की घातक गेंदबाजी के बाद आलीशान शराफ (नाबाद 68) और आसिफ खान (नाबाद 41) की विस्फोटक पारियों की बदौलत संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की क्रिकेट टीम ने तीसरे टी-20 मुकाबले में पांच गेंदे शेष रहते बंगलादेश के खिलाफ सात विकेट से जीत दर्ज करते हुए तीन मैचों की सीरीज 2-1 से जीत ली है। टेस्ट खेलने वाले देश के खिलाफ यूएई की दूसरी सीरीज जीत है। शारजाह स्टेडियम में बुधवार की रात खेले गये टी-20 मुकाबले में यूएई ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी बंगलादेश की शुरुआत खराब रही और उसने 57 के स्कोर तक अपने पांच विकेट गवां दिये। बंगलादेश के बल्लेबाजे हैदर अली की घातक गेंदबाजी के आगे बेबस नजर आये। बंगलादेश का पहला विकेट दूसरे ओवर में परवेज हुसैन इमॉन (शून्य) के रूप में गिरा। कप्तान लिटन कुमार दास (14), मो. तौहीद हृदोय (शून्य), महेदी हसन (दो) और तंजिद हसन 18 गेंद पर (40) रनों की पारी खेली। इसके बाद शमीम हुसैन (नौ), रिशाद हुसैन (छह) और जाकेर अली 34 गेंदों में (41) रन बनाकर आउट हुये। यूएई के गेंदबाजों ने बंगलादेश को निर्धारित 20 ओवरों में नौ विकेट पर 162 के स्कोर पर रोक दिया।

यूएई की ओर से हैदर अली ने चार ओवर में सात रन देकर तीन विकेट लिये। मतिउल्लाह खान और सगीर खान को दो-दो विकेट मिले। अकिफ राजा और ध्रुव पराशर ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इसके बाद बल्लेबाजी करने उतरी यूएई की शुरुआत भी अच्छी नहीं रही और उसने अपना पहला विकेट दूसरे ही ओवर में कप्तान मुहम्मद वसीम (नौ) के रूप में गवां दिया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये आलीशान शराफु ने मुहम्मद जोहैब के साथ पारी को संभालने का प्रयास किया। दोनों बल्लेबाजों के बीच 44 रनों की साझेदारी हुई। आठवें ओवर में रिशाद हुसैन ने मुहम्मद जोहैब (29) को बोल्ड इस साझेदारी का अंत किया। इसके बाद तंजीम अहमद ने राहुल चोपड़ा (13) को आउटकर पवेलियन भेज दिया। इस दौरान दूसरे छोर पर खड़े आलीशान शराफु तेजी के साथ रन बनाते रहे। इसके बाद आसिफ खान ने आलीशान शराफ के साथ मोर्चा संभाला और टीम को ऐतिहासिक जीत की ओर ले गये। यूएई ने 19.1 ओवर में तीन विकेट पर 166 रन बनाकर मुकाबला सात विकेट से जीत लिया। आलीशान शराफ ने 47 गेंदों में पांच चौके और तीन छक्के लगाते हुए (नाबाद 68) रन बनाये। आसिफ खान ने 26 गेंदों में पांच छक्के लगाते हुए (41) रनों की नाबाद पारी खेली। बंगलादेश की ओर से शोरिफुल इस्लाम, तनजीम हसन साकिब और रिशाद हुसैन ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

एफआईएच हॉकी प्रो लीग के यूरोपीय चरण के लिए 24 सदस्यीय टीम घोषित

नई दिल्ली, 22 मई। हॉकी इंडिया ने गुरुवार को नीदरलैंड के एम्सटेलीवन और बेल्जियम के एंटवर्प में सात से 22 जून तक होने वाली एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2024-25 के यूरोपीय चरण के लिए 24 सदस्यीय भारतीय पुरुष हॉकी टीम की घोषणा की। अनुभवी ड्रैगफ्लिकर हरमनप्रीत सिंह कप्तान के रूप में टीम अगुवाई करेंगे। मिडफील्डर हार्दिक सिंह उप-कप्तान होंगे। भारत अपने यूरोपीय चरण की शुरुआत में सात और नौ जून को नीदरलैंड के खिलाफ दो-दो मैचों खेलेंगा। इसके बाद 11 और 12 जून को एम्सटेलवीन के वैगनर स्टेडियम में अर्जेंटीना के खिलाफ दो मैच होंगे। टीम 14 और 15 जून को ऑस्ट्रेलिया का सामना करने के लिए एंटवर्प जाएगी और फिर 21 और 22 जून को मेजबान बेल्जियम के खिलाफ अपना अभियान समाप्त करेगी।

27वीं नवीन-नफीस ईनामी राशि लीग कम नॉकआउट क्रिकेट प्रतियोगिता

अजय के अद्धर्शतक व आशिष के ऑल राउण्ड प्रदर्शन से नेना की एकतरफा जीत

जयपुर, 22 मई। यूनियन क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 27वीं नवीन-नफीस स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता में आज नेना क्रिकेट एकेडमी जगतपुरा पर खेले गये पूल-जी के मैच में अजय बेनीवाल 68 रन के अद्धर्शतक, आशिष शर्मा 38 रन नाबाद व 10 रन पर 2 विकेट के ऑराउण्ड प्रदर्शन की बदोलत नैना क्रिकेट एकेडमी में मेहर क्रिकेट क्लब को 88 रन से हराकर 2 अंक अर्जित किये। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुये नैना क्रिकेट एकेडमी ने अजय बेनीवाल 68 रन, रोविन सिंह 41 रन, आशिष शर्मा 38 रना नाबाद, शुभम मीणा 20 रन नाबाद की मदद से निर्धारित 20 ओवर में 4 विकेट खोकर 214 रन बनाये गेन्दबाजी में महर क्लब की ओर से मनन मीणा राज यादव, परमवीर मीणा प्रत्येक 1-1 विकेट लेकर सफल गेन्दबाज रहे। जवाबी पारी में मेहर क्लब के अली खान 24 रन, परमवीर मीणा 18 रन, राज यादव 17 रन की पारीयों के बावजूद निर्धारित 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 126 रन ही बना सके, नैना एकेडमी की ओर से गेन्दबाजी में आशिष शर्मा 10 रन पर 2 विकेट, नितिन सिंघल 13 रन पर 2 विकेट शुभम मीणा 18 रन पर 2 विकेट, रोहित चरनाल 24 रन पर 2 विकेट लेकर सफल गेन्दबाज रहे। मैच का मैन ऑफ दा मैच अजय बेनीवाल 68 रन नैना क्रिकेट एकेडमी रहे।

मुकेश कुमार पर 10 प्रतिशत मैच फीस का जुर्माना

मुम्बई, 22 मई। दिल्ली कैपिटल्स के तेज गेंदबाज मुकेश कुमार पर मैच फीस का 10 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है। मुकेश कुमार को बुधवार को मुंबई इंडियंस के खिलाफ मैच के दौरान आईपीएल के आचार संहिता के अनुच्छेद 2.2 के तहत लेवल एक के उल्लंघन के लिए दोषी पाया गया। इसके लिए उन पर मैच फीस का 10 प्रतिशत जुर्माना और एक डिमेरिट अंक भी जोड़ा गया। यह मैच के दौरान क्रिकेट उपकरण, कपड़ों, ग्राउंड उपकरण या फिटिंग्स के दुरुपयोग से संबंधित है। उन्होंने मैच रेफरी डैनियल मनोहर द्वारा लगाए गए दंड को स्वीकार कर लिया है। मुकेश ने कल शाम मैच के दौरान अपने चार ओवरों में दो विकेट लेकर 48 रन दिये थे। उनके द्वारा फेंके गये 19वें ओवर में सूर्यकुमार यादव और नमन धीर ने 6, 1, 4, 6, 6, 4 कुल 27 रन बटोरे थे।

आरसीबी कल शीर्ष दो में जगह बनाने के लिए उतरेगी

लखनऊ, 22 मई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 में प्लेऑफ में पहुंच चुकी रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) शुक्रवार को टूर्नामेंट के 65वें मैच में भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी एकना स्टेडियम में सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) के खिलाफ शीर्ष दो में अपनी जगह पक्की करने मैदान में उतरेगी। वहीं एसआरएच अपने अभियान का जीत के साथ समापन करना चाहेगी।

आरसीबी 12 मैचों में 17 अंक हासिल करने के साथ इस सीजन में अपने प्रदर्शन का लौह मनवाने वाली टीमों में से एक रही है। रजत पाटीदार की अगुआई वाली यह टीम शीर्ष दो में जगह बनाकर एलिमिनेटर वन की नॉकआउट अनिश्चितता से बचना चाहेगी और उन्हें पहले क्वालीफायर के जरिए फाइनल में पहुंचने का दूसरा मौका मिलेगा। एक ऐसी टीम के लिए जो पहले भी खिताब के करीब पहुंच चुकी है, लेकिन कभी आईपीएल की ट्रॉफी नहीं उठा पाई है। इसके विपरीत, पिछले सीजन की फाइनलिस्ट सनराइजर्स हैदराबाद पहले ही प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो चुकी है। बारह मैचों में मात्र चार जीत के साथ वह अंक तालिका में सबसे निचले पायदान पर है। हालाँकि, इस सप्ताह की शुरुआत में लखनऊ सुपर जायंट्स पर मिली शानदार जीत से टीम का मनोबल बढ़ा हुआ है और पैट कमिंस के नेतृत्व वाली टीम अपने अभियान को शानदार तरीके से समापन करना चाहेगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को बीकानेर जिले के देशनोक में अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत देशभर के 103 पुनर्विकसित रेलवे स्टेशनों को उद्घाटन किया। इस अवसर पर राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव, केन्द्रीय कानून एवं न्याय राज्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री ने देशनोक में 103 रेलवे स्टेशनों का उद्घाटन किया

उन्होंने बीकानेर वासियों को बीकानेर-मुम्बई एक्सप्रेस ट्रेन की सौगात दी

देशनोक, 22 मई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को बीकानेर जिले के देशनोक में अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत पुनर्विकसित रेलवे स्टेशन का उद्घाटन करते हुए देशभर के 103 पुनर्विकसित रेलवे स्टेशनों को राष्ट्र को समर्पित किया।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने देशनोक रेलवे स्टेशन से हरी झंडी दिखाकर बीकानेर-मुंबई एक्सप्रेस ट्रेन की सौगात भी दी।

उद्घाटन समारोह के दौरान प्रधानमंत्री मोदी बच्चों से भी मिले और बच्चों द्वारा बनाई पेंटिंग्स की सराहना की। इस दौरान बच्चों ने भारत माता के जयघोष से परिसर को गुंजायमान कर दिया। प्रधानमंत्री ने स्टेशन परिसर में शहीदों के सम्मान में प्रदर्शनी गैलेरी का अवलोकन किया। इस अवसर पर राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव, केन्द्रीय कानून एवं न्याय राज्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल समेत, विभिन्न जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी एवं बड़ी संख्या में आमजन व स्कूली बच्चे मौजूद रहे।

- **प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशनोक रेलवे परिसर में शहीदों के सम्मान में लगी प्रदर्शनी गैलरी का भी अवलोकन किया।**

उल्लेखनीय है कि अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत देशभर में 1 लाख करोड़ रुपए की लागत से 1300 से अधिक स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है। इसी क्रम में पुनर्विकसित किए गए 103 रेलवे स्टेशनों में राजस्थान के आठ रेलवे स्टेशन देशनोक, गोगामेड़ी, बूंदी, माण्डलगढ़ , गोविंदगढ़ , मण्डावर-महुआ रोड, फतेहपुर शेखावाटी और राजगढ़ शामिल हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने देशनोक में करणी माता के दर्शन किए व आरती उतारी तथा मंत्रोच्चार के साथ विधिवत पूजा-अर्चना की। श्रीकरणी मंदिर निजी प्रन्यास के अध्यक्ष बादल सिंह देपावत ने प्रधानमंत्री को स्मृति चिन्ह व मां करणी का साहित्य भेंट किया।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में रखी जा रही है नये भारत की नींव-भजनलाल

मुख्यमंत्री भजनलाल ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सेना के शौर्य से पूरा देश गौरवान्वित हुआ है

बीकानेर, 22 मई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' के संकल्प ने एक नए भारत की नींव रखी है।

शर्मा, जिले के पलाना में आयोजित जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने प्रधानमंत्री को ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर बधाई देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में नए भारत की सैन्य ताकत ने पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों और एयरबेसों को मिट्टी में मिला दिया। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पूरा देश भारतीय सेना के शौर्य से गौरवान्वित हो उठा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने सीमावर्ती क्षेत्र के गांवों के लिए वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम-2 के लिए स्वीकृति प्रदान की है, जिससे सीमावर्ती गांवों के लोगों को मुख्य धारा में लाकर उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने एवं आजीविका के पर्याप्त अवसर प्रदान करने का कार्य किया जा सकेगा।

- **रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में 11 साल में 34 हजार किलोमीटर लम्बी रेल पटरियाँ बनीं, जो जर्मनी के कुल रेल नेटवर्क से बड़ा है।**

मुख्यमंत्री ने राम जल सेतु लिंक परियोजना और यमुना जल समझौते की सौगात के लिए प्रदेशवासियों की ओर से प्रधानमंत्री का विशेष आभार प्रकट किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री का मानना है कि देश में गरीब, युवा, अन्नदाता, महिला- केवल चार जातियां हैं। इसी मंशा के अनुरूप, राज्य सरकार इन चारों जातियों के उत्थान के लिए प्रतिबद्धता से काम कर रही है।

सभा को सम्बोधित करते हुए, केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि गत 11 वर्षों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में रेलवे के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ है। इस दौरान 34 हजार किलोमीटर लंबी रेल पटरियां बनी हैं, जो जर्मनी के कुल रेल नेटवर्क से भी अधिक है। 47 हजार किलोमीटर लंबी रेल लाइनों का विद्युतीकरण हुआ है। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद पहली बार देश में छोटे और मध्यम दर्जे के रेलवे स्टेशनों के विकास पर ध्यान दिया गया है।

प्रधानमंत्री ने कुछ समय पहले देश में एक साथ 1062 रेलवे स्टेशनों के विकास की नींव रखी थी। आज इनमें से 103 स्टेशनों का उद्घाटन प्रधानमंत्री द्वारा किया गया है। उन्होंने कहा कि अगले 100 स्टेशन भी 8 माह में बनकर तैयार हो जाएंगे।

पाकिस्तान ने एक भारतीय राजनयिक को देश छोड़ने को कहा

इस्लामाबाद, 22 मई। भारत के दिल्ली स्थित पाकिस्तान उच्चायोग के एक राजनयिक को देश छोड़ने का आदेश दिये जाने के 24 घंटे के अंदर ही पाकिस्तान ने गुरुवार को जवाबी कदम उठाते हुये, यहां स्थित भारतीय उच्चायोग के एक कर्मचारी को अवांछित घोषित कर पाकिस्तान छोड़ने को कहा है।

पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय के अनुसार, संबंधित कर्मचारी को विशेषाधिकार से विपरीत गतिविधियों में लिप्त पाया गया है।

पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय ने भारतीय उच्चायोग के एक वरिष्ठ अधिकारी को विदेश मंत्रालय में बुलाकर उसे सरकार के इस निर्णय से अवगत करा दिया है। इस राजनयिक को 24 घंटे के अंदर पाकिस्तान छोड़ने को कहा गया है। विदेश मंत्रालय ने कहा है कि भारतीय उच्चायोग का कोई भी अधिकारी उसे प्राप्त विशेषाधिकार का किसी भी तरह दुरुपयोग नहीं कर सकता।

गौरतलब है कि बुधवार को भारत ने दिल्ली स्थित पाकिस्तान उच्चायोग के एक कर्मचारी को अवांछित घोषित करते हुये, उसे 24 घंटे के अंदर देश छोड़ देने को कहा था।

नाबालिग से दुष्कर्म करने...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया था कि वह सुबह मजदूरी करने गया था। तभी करीब 11 बजे उसकी पत्नी ने उसे घर बुलाया और बताया कि पड़ौसी विजय ने उसकी नाबालिग बेटी की अश्लील वीडियो व फोटो सोशल मीडिया पर डाल दिये हैं। परिजनों के पूछने पर पीड़िता ने बताया कि एक महीने पहले जब घर पर कोई नहीं था तो विजय ने उसे अपने कमरे पर किसी काम के बहाने से बुलाया था। इस दौरान ही उसने परिजनों को जान से मारने की धमकी देकर उसके साथ दुष्कर्म किया और इसका वीडियो बना लिया। वह फोटो व वीडियो को वायरल करने की धमकी देकर और संबंध बनाना चाहता था, लेकिन पीड़िता ने मना कर दिया। इस पर उसने 19 जून को इन्हें सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। इसकी जानकारी पड़ौस में रहने वाले अन्य लड़के ने दी। पुलिस ने रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ कोर्ट में चालान पेश किया।

सतपाल मलिक के खिलाफ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस प्रोजेक्ट से संबंधित थी।

एजेंसी द्वारा गत वर्ष तलाशी अभियान चलाये जाने के बाद, मलिक ने भ्रष्टाचार के आरोपों का खंडन किया था।

मलिक ने कहा था कि जिन लोगों के बारे में उन्होंने (मलिक) शिकायत की थी तथा जो भ्रष्टाचार में लिप्त थे। उनकी जांच-पड़ताल किये जाने के बजाय, सी बी आई ने उनके आवास पर रेड डाली है। उन्होंने ऑनलाइन पोस्ट किया था, "उन्हें (सी बी आई को) 4-5 कुर्ता-पाजामा के सिवाय और कुछ नहीं मिलेगा। तानाशाह सरकारी एजेंसियों का दुरुपयोग करके, मुझे डराने की कोशिश कर रहा है। मैं किसान का बेटा हूं, मैं न तो डरूंगा और न झुकूंगा।" केन्द्रीय एजेंसी ने 'चिनाब वैली पावर प्रोजेक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (सी वी पी पी एल) के तत्कालीन चेयरमैन नवीन कुमार चौधरी, तथा अन्य अधिकारियों, जिनमें एम एस बाबू, एम के मित्तल तथा अरुण कुमार मिश्रा शामिल हैं, के अलावा निर्माण-फर्म पटेल इंजीनियरिंग लिमिटेड को आरोपी बनाया है।

एफ आई आर में आरोप लगाया गया है, "उस समय चल रही टेन्डरिंग प्रक्रिया के रद्द हो जाने के बाद, सी वी पी पी एल की 47 वीं बोर्ड मीटिंग में ई-टेन्डरिंग और रिवर्स ऑक्शन के जरिये फिर से निविदा आमंत्रित करने का निर्णय लिया गया था, लेकिन (48 वीं बोर्ड मीटिंग में लिए गये निर्णय के अनुसार) उस निर्णय को क्रियान्वित नहीं किया गया था तथा अन्ततोगत्वा, टेन्डर पटेल इंजीनियरिंग लिमिटेड को दे दिया गया था।"

वन रक्षक पेपर लीक में तीन और गिरफ्तार

जयपुर, 22 मई। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने वनरक्षक पेपर लीक मामले में कार्रवाई करते हुए, वनरक्षक उमाराम, प्यारी व दलाल रगेश कुमार को गिरफ्तार किया है। एसओजी की टीम पूछताछ करने में जुटी है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एटीएस और एसओजी वीके सिंह ने बताया कि 12 मार्च 2025 को कंवरा राम जाट को गिरफ्तार किया गया था। जिससे पूछताछ में सामने आया कि उसने वनरक्षक उमाराम व प्यारी कुमारी को 13 नवंबर 2022 का वन रक्षक परीक्षा का पेपर परीक्षा से पूर्व उदयपुर में पढाया था। पेपर पढ़ने वाले वन रक्षक उमाराम व प्यारी कुमारी को जांच पड़ताल के बाद गिरफ्तार किया गया। आरोपी उमाराम ने वन रक्षक भर्ती परीक्षा का पेपर पढ़ने की एवज में वांछित आरोपी जबराराम जाट को 1 लाख रूपये व प्यारी कुमारी के भाई वांछित आरोपी हीराराम ने अपनी बहिन के पेपर पढ़ने की एवज में वांछित आरोपी जबराराम जाट को 3 लाख रूपये दिये। इसके अतिरिक्त, पूर्व में गिरफ्तार वनरक्षक टिगो के दलाल रगेश कुमार को वनरक्षक का पेपर पढ़ने की एवज में उसके भाई महेन्द्र से 8 लाख रूपये प्राप्त कर, अपने मित्र कंवरा राम चौधरी स्टेशन मास्टर के मार्फत, एन डी सारण को 7 लाख रूपये दिये थे, उसे भी गिरफ्तार किया गया। सभी आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया, जहां कोर्ट ने पूछताछ के लिए 26 मई तक रिमांड दिया है।

- **अति. पुलिस महानिदेशक वी.के. सिंह ने बताया कि वन रक्षक उमाराम व प्यारी कुमारी को परीक्षा से पहले पेपर पढ़ाया तथा दलाल रमेश कुमार ने पेपर पढ़ने की एवज में आठ लाख रुपये प्राप्त किये।**

सात प्रतिनिधिमंडल...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इसी दौरान, नई दिल्ली में राजनीतिक विश्लेषक अन्य राज्यों में बदलते समीकरणों को लेकर कयास लगा रहे हैं। बिहार, जहाँ वर्ष के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं, में तुरंत कोई बड़ा बदलाव संभव नहीं दिखता, लेकिन स्थिति अब भी अस्थिर बनी हुई है। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) और इंडिया ब्लॉक दोनों के पक्ष और विपक्ष में नए राजनीतिक समीकरण उभर सकते हैं, जिससे क्षेत्रीय सत्ता संतुलन पर असर पड़ सकता है।

दिलचस्प बात यह है कि यह वैश्विक कूटनीतिक पहल ऐसे समय में हो रही है, जब मोदी सरकार आगामी लोकसभा चुनावों से पहले अपनी अंतरराष्ट्रीय छवि को सुदृढ़ करने में जुटी है। आलोचकों का कहना है कि यह पहल, भले ही महत्वपूर्ण हो, घरेलू राजनीतिक हितों को भी साधने का प्रयास हो सकती है, खासकर यह भाजपा को एकमात्र ऐसी पार्टी के रूप में पेश कर सकती है जो राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे मुद्दों पर एकजुट राष्ट्रीय मोर्चा बिना सकती है।

भीतरी विवादों और राजनीतिक उठापटक के बावजूद, यह वैश्विक मिशन रणनीतिक सहयोगियों और प्रतिद्वंद्वियों दोनों के द्वारा बारीकी से देखा जा रहा है। यह मिशन पाकिस्तान की सीमा पार आतंकवाद में संलिप्तता को अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने प्रमाणित करने में कितना सफल होगा, यह तो समय बताएगा। लेकिन इतना तय है कि इसने भारत की राजनीतिक दिशा को अगले कुछ महीनों के लिए प्रभावित करना शुरू कर दिया है।

गलत जानकारी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उसका नाम नहीं है और न ही मामले में उसकी सीधी भूमिका सामने आई है। इसका विरोध करते हुए सरकारी वकील ने कहा कि याचिकाकर्ता पर अपनी महिला मित्र के लिए पेपर खरीद कर उपलब्ध कराने का आरोप प्रमाणित है। वह पुलिस गिरफ्त से दूर चल रहा है। ऐसे में उस पर 25 हजार रुपए का इनाम भी घोषित किया गया है और अदालत ने उसकी गिरफ्तारी के स्थाई वारंट जारी कर रखे हैं। इसके अलावा, उसने सरकारी वकील या अदालत में अपने सरेंडर को लेकर कोई दस्तावेज पेश नहीं किए हैं, जिससे साबित होजा है कि वह सरेंडर के लिए अदालत में गया ही नहीं। ऐसे में याचिका को खारिज किया जाए। मामले की सुनवाई करते हुए, अदालत ने याचिका खारिज कर उस पर पचास हजार रुपए का हर्जाना लगाया है।

राहुल का प्रधानमंत्री मोदी पर तीखा व्यंग्य

नयी दिल्ली, 22 मई। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'दिमाग ठंडा' तथा 'खून गरम' वाले बयान पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि मोदी को खोखले भाषण देना बंद कर यह बताना चाहिए कि देश के हितों से समझौता क्यों किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री को इधर-उधर की बातें नहीं करनी चाहिए बल्कि यह बताएं कि पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद उठे सवालों का जवाब क्यों नहीं दिया जा रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप अपने बयानों से बार-बार भारत को जब अपमानित कर रहे हैं, तो करारा जवाब देने की बजाय, राष्ट्रीय सम्मान से समझौता क्यों किया जा रहा है।

- **राहुल गाँधी ने कहा, मोदी जी खोखले भाषण देना बंद कीजिए। आपका खून कैमरों के सामने ही क्यों गरम होता है।**

वक्फ एक्ट पर अंतरिम स्टे देने पर सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय सुरक्षित किया

जैसा कि विदित ही है, तीन दिन सुप्रीम कोर्ट में घमासान बहस चली इस "स्टे" की माँग पर

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 मई। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 की कुछ विवादास्पद धाराओं के क्रियान्वयन पर अंतरिम रोक लगाने की मांग वाली याचिकाओं पर अपना आदेश सुरक्षित रख लिया, चुनौती उन प्रावधानों को लेकर दी गई है, जिनमें "उपयोग द्वारा वक्फ (वक्फ बाई यूजर) समाप्ति, केन्द्रीय वक्फ परिषद और राज्य वक्फ बोर्डों में गैर-मुस्लिमों को शामिल करने, और बिना उचित कानूनी प्रक्रिया के "विवादित" वक्फ संपत्तियों को छीनने जैसी व्यवस्थाएँ शामिल हैं, जिन्हें संविधान के अनुच्छेद 25 और 26 के तहत प्रदत्त धार्मिक स्वतंत्रता के खिलाफ माना जा रहा है।

- **कपिल सिब्बल, राजीव धवन, अभिषेक मनु सिंघवी, हुजेफा अहमदी, चंदर उदय सिंह आदि सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकीलों ने इस बहस में भाग लिया है।**
- **रिट दायर करने वाले की ओर से कपिल सिब्बल, अभिषेक मनु सिंघवी आदि ने दलील दी कि वक्फ एक्ट में संशोधन करने से मुसलमानों के साथ "डिस्क्रिमिनेशन" होगा।**

मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने 20 मई से शुरु हुई तीन दिवसीय लंबी बहसों के बाद गुरुवार को फैसला सुरक्षित रखा। याचिकाकर्ताओं की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल, राजीव धवन, अभिषेक मनु सिंघवी, हुजेफा अहमदी, चंदर उदय सिंह और अन्य ने बहस में हिस्सा लिया। उनका तर्क था कि संशोधित कानून मुस्लिम समुदाय के साथ भेदभाव करता है, उनके मूलभूत धार्मिक कार्यों और परम्पराओं को निशाना बनाता है, और विधिसम्मत प्रक्रिया के बिना ही, वक्फ संपत्तियों को मनमाने तरीकों से जब्त करने की अनुमति देता है।

याचिकाकर्ताओं ने कहा कि "उपयोग द्वारा वक्फ" (वक्फ बाई यूजर) की अवधारणा को समाप्त करने से वे ऐतिहासिक मस्जिदें, कब्रिस्तान और धार्मिक सम्पत्तियाँ प्रभावित होंगी, जिनके औपचारिक दस्तावेज़ नहीं हैं, लेकिन जो सदियों से धार्मिक रूप से उपयोग में हैं और अत्यंत पवित्र मानी जाती हैं। इसके अतिरिक्त, याचिकाकर्ताओं ने वक्फ परिषदों में गैर-मुस्लिमों की मौजूदगी का विरोध किया। उनका कहना था कि इस तरह की नियुक्तियाँ मुस्लिम धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप हैं और यह अनुच्छेद 25 और 26 का उल्लंघन है, जो धार्मिक पंथों को अपनी संस्थाओं के संचालन में स्वायत्तता प्रदान करते हैं।

नीट पीजी सीट ब्लॉक करने पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

नईदिल्ली, 21 मई। नीट पीजी में सीट ब्लॉकिंग की बढ़ती शिकायतों पर सुप्रीम कोर्ट ने सख्त रुख अपनाते हुए एक अहम आदेश जारी किया है। अब देश की सभी प्राइवेट और डीम्ड यूनिवर्सिटियों को काउंसलिंग शुरू होने से पहले अपनी पूरी फीस संरचना (ट्यूशन फीस, हॉस्टल फीस, सिक्योरिटी डिपॉजिट और अन्य शुल्क) सार्वजनिक करनी होगी।

जस्टिस जे.बी. पारदीवाला और आर. महादेवन की बेंच ने कहा कि सीट ब्लॉकिंग की यह प्रथा केवल एक अनैतिक कार्य ही नहीं, बल्कि पूरे सिस्टम की कमजोरियों को उजागर करती है। इसमें पारदर्शिता की कमी, शासन में समन्वय की कमी और नीतियों के ढीले पालन जैसी समस्याएं शामिल हैं।

- **सुप्रीम कोर्ट ने यह आदेश भी दिया कि काउन्सलिंग से पहले सभी मैडिकल कॉलेजों को फीस बतानी होगी।**

सुप्रीम कोर्ट के आदेश की मुख्य बातें - सभी यूनिवर्सिटियों को काउंसलिंग से पहले फीस का खुलासा करना अनिवार्य होगा। नेशनल मेडिकल कमीशन के तहत, एक केन्द्रीकृत फीस रेगुलेशन सिस्टम विकसित किया जाएगा।

सीट ब्लॉक करने वाले छात्रों और कॉलेजों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी- जैसे सिक्योरिटी डिपॉजिट की जब्ती, भविष्य की नीट पीजी परीक्षाओं से अयोग्यता, और कॉलेज का ब्लैकलिस्ट होना।

ऑल इंडिया कोटा और राज्य स्तरीय काउंसलिंग को समान कैलेंडर के तहत लाने का निर्देश ताकि, सीट ब्लॉकिंग को रोका जा सके। काउंसलिंग के दूसरे राउंड के बाद छात्रों को बेहतर सीट पर अपग्रेड का विकल्प मिलेगा, लेकिन नए छात्रों के लिए काउंसलिंग नहीं खोली जाएगी। रॉ स्कोर, उत्तर कुंजी और नॉर्मलाइजेशन फॉर्मूला को सार्वजनिक करने का निर्देश भी दिया गया है, ताकि परीक्षा में पारदर्शिता बनी रहे।

यह फैसला उत्तर प्रदेश सरकार और डायरेक्टर जनरल मेडिकल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग, लखनऊ की ओर से दाखिल याचिका पर आया है। याचिका में इलाहाबाद हाई कोर्ट के 2018 के फैसले को चुनौती दी गई थी, जिसमें दो छात्रों को मुआवजा देने और सीट ब्लॉकिंग के खिलाफ कार्रवाई के आदेश दिए गए थे।

एटा में भारी आंधी तूफान, 5 की मौत

एटा, 22 मई। उत्तर प्रदेश के एटा जिले में पिछले 24 घंटे के दौरान आंधी और वर्षा जनित हादसों में कम से कम पांच लोगों की मृत्यु हो गयी।

पुलिस सूत्रों ने गुरुवार को बताया कि एटा के जलेसर तहसील छेत्र में एक बायो डीजल की फैक्ट्री की टीनशेड गिरने से उसके नीचे दबकर फैक्ट्री मालिक विवेक प्रताप सिंह (37) एवं उसके कर्मचारी पुष्पेंद्र ऊर्फ पप्पू (43) की मौत हो गयी। एटा की अलीगंज तहसील क्षेत्र के जैथरा थाना क्षेत्र के उदयपुरा गांव में टीन शेड गिरने से उसके नीचे दबकर 19 वर्षीय सुरेन्द्र कुमार सिंह की मौत हो गयी।

एक बार फिर विदेश...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ऐसे माहौल में अगर भारत अमेरिका के दावे को सीधे खारिज करता है, तो डॉनल्ड ट्रंप का उग्र प्रशासन इसे हल्के में नहीं लेगा। जयशंकर बार-बार यह दोहराते रहे हैं कि भारत-पाक संघर्ष केवल तब रुका, जब पाकिस्तान के सैन्य अभियानों के प्रभारी जनरल ने भारतीय समकक्ष को सीधे कॉल किया।

इस प्रकार, भारत को अमेरिकी नाराज़गी का सामना करना पड़ सकता है। अमेरिका की सबसे खतरनाक प्रतिक्रिया यह हो सकती है कि वह पाकिस्तान को फिर से सैन्य सहायता और हथियार देना शुरू कर दे, भारत की स्वतंत्र नीति को सजा देने के लिए।

अब देखना यह होगा कि अमेरिका अपनी नाराज़गी किस हद तक ले जाता है। लेकिन यह लगभग तय है कि प्रतिक्रिया अवश्य आएगी। ऐसे में भारत को हर संभावित परिदृश्य के लिए तैयार रहना चाहिए।

हालांकि, भारत जैसे विशाल और महत्त्वपूर्ण देश को अपनी मूल नीतियों और राष्ट्रीय हितों से पीछे नहीं हटना चाहिए-चाहे धमकी दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश से ही क्यों न मिल रही हो।

अब हर आतंकी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

थी। अब इस बार जब ऑपरेशन सिंदूर हुआ तो उसके बाद मेरी पहली जनसभा फिर यहां राजस्थान के बीकानेर में आप सभी के बीच हो रही है। राजस्थान की वीरभूमि के तप से ही ऐसा संयोग बना है। सभा को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय कानून एवं न्याय राज्यमंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने बीकानेर की धरती पर प्रधानमंत्री का स्वागत किया और कहा कि मोदी देश के पहले प्रधानमंत्री हैं, जो मां करणी के मंदिर में दर्शन करने आए हैं।

कार्यक्रम की शुरूआत में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रधानमंत्री मोदी का साफा पहनाकर और प्रतीक चिन्ह स्वरूप चरखा भेंट कर स्वागत किया। स्वयं सहायता समूह की सदस्या सुमित्रा, अर्जुन अवार्डी मगन सिंह राजवी एवं कर्नल हेमसिंह ने भी प्रधानमंत्री का स्वागत किया। कार्यक्रम में राज्यपाल हरिभाऊ बागडे, पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे, उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी, उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा, भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ सहित, राज्य के कई मंत्रीगण सांसद एवं विधायकगण और बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

'ईडी सारी हदें पार कर रहा है'

सुप्रीम कोर्ट ने तमिलनाडु में शराब की दुकानों पर ईडी की रेड पर रोक लगाते हुए टिप्पणी की

नयी दिल्ली, 22 मई। उच्चतम न्यायालय ने शराब दुकानों के लाइसेंस जारी करने से संबंधित कथित भ्रष्टाचार के एक मामले में तमिलनाडु राज्य विपणन निगम के खिलाफ धन शोधन जांच पर रोक लगाते हुए, गुरुवार को कहा कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) संविधान का उल्लंघन करके सारी सीमाएं लांघ रहा है।

मुख्य न्यायाधीश बी आर गवई और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने तमिलनाडु सरकार की याचिका पर कथित 1,000 करोड़ रुपये के घोटाले में ईडी जांच की अनुमति देने वाले मद्रास उच्च न्यायालय के आदेश पर रोक लगा दी।

- **तमिलनाडु हाईकोर्ट ने ईडी को एक हजार करोड़ रुपये के कथित घोटाले में राज्य विपणन निगम के खिलाफ मनी लॉण्डरिंग जांच की अनुमति दी थी, जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है।**

पीठ ने केन्द्रीय एजेंसी की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एस वी राजू से कहा, आपका ईडी सारी हदें पार कर रहा है। आपका कार्यालय किसी निगम पर छापेमारी कैसे कर सकता है? आप देश के संघीय ढांचे का पूरी तरह उल्लंघन कर रहे हैं।

शीर्ष न्यायालय ने ईडी को नोटिस जारी करते हुए कहा कि वह इस मामले की अगली सुनवाई गर्मी की छुट्टियों के बाद करेगा।

तमिलनाडु सरकार ने ईडी ओर से सरकारी शराब खुदरा विक्रेता तमिलनाडु राज्य विपणन निगम के परिसरों में जांच के दौरान की गई छापेमारी की वैधता को चुनौती दी थी।

मद्रास उच्च न्यायालय ने 23 अप्रैल, 2025 को राज्य सरकार की याचिका खारिज कर दी थी और ईडी की कार्रवाई को हरी झंडी दे दी थी। उच्च न्यायालय ने ईडी को धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत कार्रवाई जारी रखने की अनुमति दी।

विवाह के तीन माह ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पिता की तरह, आगामी जीवन में उसका संरक्षण करेगा।

विवाह के बाद प्रारंभिक वर्ष में दंपत्ति इन सुखद सपनों के साथ भविष्य की नींव तैयार करते हैं, लेकिन इस मामले में अभियुक्त का कृत्य अपनी पत्नी के प्रति ऐसा रहा कि उसके पास विवाह के तीन माह बाद ही आत्महत्या करने के अलावा कोई विकल्प नहीं रहा। ऐसे में अभियुक्त को कठोरतम दंड से दंडित करना उचित है।

अभियोजन पक्ष की ओर से अपर लोक अभियोजक नरेश गजराज ने अदालत को बताया कि अभियुक्त विकास की 12 जून, 2017 को किरण के साथ सामूहिक विवाह सम्मेलन में शादी हुई थी। शादी के कुछ दिनों बाद से ही अभियुक्त ने मोटर साइकिल, सोने की चैन और दो लाख रुपए की मांग कर किरण के साथ मारपीट करना शुरू कर दिया। वहीं, किरण के भाई मुकेश कुमार ने भी अपने बयानों में अदालत को जानकारी दी कि किरण के आत्महत्या करने से करीब बीस दिन पहले उसकी किरण के साथ फोन पर बात हुई थी। इस दौरान किरण ने उसे बताया था कि उसका पति और ससुराल के अन्य लोग दहेज के लिए उसके साथ मारपीट करते हैं।

इसके चलते 22 सितंबर को किरण ने फंदा लगाकर जीवन लीला समाप्त कर ली। घटना को लेकर किरण के परिजनों ने 25 सितंबर को करणी विहार थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादकः- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालयः-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालयः-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालयः-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालयः-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालयः एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908